

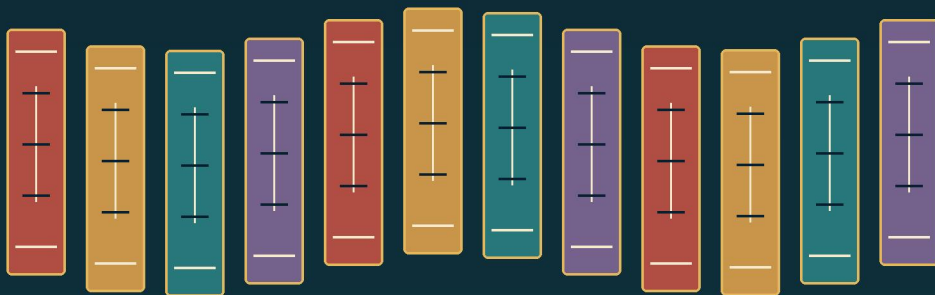
विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २२

# रंग-संगम

बारह मैथिली नाटकक  
साहित्यिक समीक्षा



मूल साहित्यकार  
गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

VIDEHA • 2026 • ISSN 2229-547X

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २२

रंग-संगम

बारह मैथिली नाटक आ तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक आलोचनात्मक अध्ययन

मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X • २०२६

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड २२

रंग-संगम : खण्ड १ आ खण्ड २क बारह मैथिली नाटकक पूर्ण पाठाधारित साहित्यिक समीक्षा

मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

© २०२६ प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर। सर्वाधिकार सुरक्षित।

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X

मूल नाटकसभ मैथिलीमे अछि; लेखकक अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक तुलनात्मक परीक्षण एहि समीक्षामे समाहित अछि।

पुस्तकाकार : ६ × ९ इंच। प्रथम प्रकाशन-संस्करण : २०२६।

<https://www.videha.co.in/> <https://videha-ejournal.github.io/videha/>

अनुक्रमा

नाटकक साहित्यिक समीक्षा

|                            |    |
|----------------------------|----|
| ०१. अपाला आत्रेयी.....     | 5  |
| ०२. भऽ जाएब छू.....        | 10 |
| ०३. दानवीर दधीची.....      | 16 |
| ०४. गंगा ब्रिज.....        | 21 |
| ०५. जलोदीप.....            | 29 |
| ०६. कमलाक भगता.....        | 36 |
| ०७. मचण्ड.....             | 44 |
| ०८. संकर्षण.....           | 49 |
| ०९. उल्कामुख.....          | 55 |
| १०. व्याप्ति.....          | 66 |
| ११. जे नाम पोथीमे नहि..... | 74 |
| १२. पानिक लेखा.....        | 82 |

समेकित अध्ययन आ ग्रन्थाधार

|                                                                 |    |
|-----------------------------------------------------------------|----|
| नओ नाटक : अन्तरनाटकीय तुलनात्मक मूल्याङ्कन.....                 | 64 |
| बारह नाटक : मूल मैथिली-अंग्रेजी रंगमंचीय समेकित मूल्याङ्कन..... | 90 |
| ग्रन्थाधार.....                                                 | 93 |

रंग-संगम • खण्ड १

अपाला आत्रेयी सँ कमलाक भगता : पहिल छओ नाट्य-युग्म

पाठाधार : २०२६क द्विभाषी संयुक्त संस्करण; पहिल जोड़ी पृ. ५-५५; दोसर जोड़ी पृ. ५६-८८। प्रस्तुत समीक्षामे मूलक कथित इतिहास/विज्ञानकें स्वतंत्र प्रमाणित तथ्य नहि मानल गेल अछि।

## नाट्य-युग्म १ : अपाला आत्रेयी

### पाठ-पहिचान आ नाट्य-रचना

रंग-संगमक पहिल नाट्य-युग्म 'अपाला आत्रेयी' अछि। मैथिली मूल पृ. ५-३० आ लेखकक अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर 'APALA ATREYI' पृ. ३१-५५मे राखल अछि। सात दृश्यवाला ई बालनाटक ऋग्वैदिक अपालाक अपन रोग, वैवाहिक अपमान, मन्त्र-दृष्टि आ आत्मसम्मानक बीच स्थित कऽ नाटकीय व्यक्तित्व दैत अछि। कथा केवल त्वक्-रोगसँ मुक्ति नहि, देहपर समाजक निर्णय आ स्त्रीक ज्ञान-अधिकारक आलोचना बनैत अछि। नाटकक मूल तनाव ई अछि जे पात्रक वैदिक अध्ययन स्वीकार कएल जाइत अछि, मुदा विवाहोत्तर सम्बन्धमे ओकर देहक दाग हुनकर विद्याक छिपा दैत अछि।

### दृश्य-क्रमक विकास आ विरोधाभास

पहिल दृश्य आश्रममे अपाला आ नव आगन्तुक बालकक संवादसँ खुलैत अछि। बालक धनुष अथवा अक्षरक तैत अछि—एहि प्रश्नमे शिक्षा आ प्रहरणक सम्भावित अलग दिशा संकेतित अछि। अत्रि कन्या-कुमार दुनूक प्रश्नक अधिकार दैत छथि; ज्ञानाधिकारक ई उद्घोष नाटकक आरम्भिक नैतिक आधार बनैत अछि। दोसर दृश्यमे उपनयन, वर्ण-स्वर, मात्रा, उच्चारण, वेदी, सामगान आ आश्रमक नियम बौद्धिक संस्कारक दृश्य-भूमि बनबैत अछि। नाटक एतय ऋग्वैदिक जीवनक एकटा कलात्मक प्रतिरूप रचैत अछि; आधुनिक इतिहासलेखनमे एहि विवरणसभक अक्षरशः प्रमाण अलग जाँचबाक विषय रहत।

### तेसर—चारिम दृश्य : रोग आ विवाह

तेसर दृश्यसँ मूल संघर्ष प्रारम्भ होइत अछि : अत्रि तीन वैद्यक संग अपालाक त्वक्-रोग आ सम्भावित सामाजिक अपमानपर विमर्श करैत छथि। पिताक करुणा आ कन्याक हितचिन्ता स्पष्ट अछि, मुदा कृतिमे विवाहक निर्णयक प्रमुख पहल पिता आ वैद्यसभ करैत छथि। ओहि व्यवस्थामे अपालाक अपन चयन-स्वर पहिनुक शैक्षिक स्वतन्त्रताक अनुपातमे कम सुनाइ दैत अछि। चारिम दृश्य कतेको वस्तुगत संकेत दैत अछि : अग्रिक

उजास, वरक दृष्टि, अपालाक जूही-मालाक खसब आ वरक उत्तरीयक खसब। ई सूक्ष्म मञ्चीय घटना विवाहक बाहरी दीप्ति आ भितरक असुरक्षाक विरोध बनेबाक प्रयत्न अछि।

पाँचम दृश्य : देहक दाग आ दृष्टिक रोग

पाँचम दृश्य रचनाक निर्णायक केन्द्र अछि। अपाला पतिगृहमे घरेलू सेवा आ वैदिक अध्ययन दुनू करैत छथि। कृशाश्व अपन द्वन्द्वकें प्रेम आ देहाकर्षणक बीच रखैत छथि आ ईहो स्वीकार करैत छथि जे हुनकर दुर्बलताकें धर्मक नाम देब उचित नहि। एहि स्वीकारोक्तिसँ विरोधी पात्र पूर्ण रूपेँ एकरेखीय खलनायक नहि बनैत; ओ अपन पूर्वाग्रहकें चिन्हैत छथि, मुदा ओकरा पार करबाक सामर्थ्य नहि देखबैत छथि। अपालाक उत्तर—‘दाग देहपर अछि, दृष्टि अहाँक बीमार भेल अछि’—सम्पूर्ण नाटकक मुख्य ध्वनि अछि। स्त्री अपन शरीरक चिकित्सा सँ भिन्न सामाजिक दृष्टिक चिकित्साक माँग करैत छथि। अपालाक पिताक आश्रम फिर्ता जाएब ककरो दयापर निर्भर शरणागति नहि, अपमानजनक सम्बन्धसँ असहमतिक नाटकीय निर्णय अछि।

छठम आ सातम दृश्य : मन्त्र, प्रमाण आ अधिकार

छठम दृश्यमे सोम थकुचबाक ध्वनि मन्त्रक लयमे बदलैत अछि। आरम्भक आश्रमीय सामगान आ शरीरक दुखक बीच ई श्रव्य सम्बन्ध नाटकक ध्वनि-संरचनाकें एकता दैत अछि। सोम, इन्द्र, पिताक मस्तक, खेत, शरीर आ सूर्यसमान त्वचाक बिम्ब एकहि समय धार्मिक काव्य, कृषिक कामना आ वैयक्तिक आरोग्यक आकांक्षा प्रकट करैत अछि। सातम दृश्य ब्रह्मोदय सभामे अपालाक ऋचाकें मान्यता दैत अछि। मुदा काव्य-दृष्टिक सामाजिक सम्मान सँ अलग, कृशाश्वक पछतावा स्वीकार करब-नहि करबक निर्णय अपालाक हाथमे रहैत अछि। आरोग्य हुनका पतिक अधिकारमे फेर बाँधि नहि सकैत। अन्तिम प्रकाश-संयोजनमे अपालाक दिशा उज्ज्वल आ कृशाश्वक दिशा मद्धिम होइत अछि; ई दृश्य-प्रतीक नाटकीय निर्णयकें दर्शकक इन्द्रियपर उतारैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र आ नव्य न्यायपरक विवेचन

करुण रसक प्रारम्भ रोग आ परित्यागक सम्भावनासँ होइत अछि; पाँचम दृश्यसँ आत्मसम्मानक दृढ़ता वीर-भावकें उभारैत अछि। दागक शब्दचित्र त्वक्-स्थिति मात्र

नहि; व्यक्ति-निर्णयक त्रुटिपूर्ण आधारक प्रतीक बनैत अछि। ध्वनिक स्तरपर 'दृष्टि' दृश्येन्द्रिय सँ लऽ कऽ नैतिक निर्णय धरि विस्तृत अछि। नव्य-न्यायपरक पाठमे देहपर चिह्नक प्रत्यक्ष ज्ञान आ व्यक्ति-मूल्यक अनुमान दू पृथक् प्रमाण-विषय अछि। कृशाश्वक चर्म-दाग देखबाक तथ्यसँ अपालाक गुणक अवमूल्यन निकालब तर्कगत छलॉग अछि। आरोग्यक कथा आ इन्द्रक हस्तक्षेप नाटकक अन्तर्गत धार्मिक कथन अछि; स्वतंत्र चिकित्सकीय कारण-सिद्धि अथवा ऐतिहासिक प्रयोगक रूपमे एकरा प्रस्तुत करब उचित नहि।

स्त्री-विमर्श आ सामाजिक अन्तर्विरोध

नाटक स्त्रीक वैदिक शिक्षा-अधिकारक प्रतिपादन करैत अछि; तथापि विवाहक आरम्भिक व्यवस्था, पितृनिर्णय आ पति-दृष्टिक माध्यमसँ सामाजिक संस्था ओकर विरोधी धरातल बनैत अछि। अपाला सार्वजनिक ज्ञान-मान्यताक बादो विवाह-विच्छेदक निजी निर्णय स्वतंत्र राखैत छथि। एहि दृश्यसँ पात्रक शिल्पगत आत्मनिर्णय निष्पन्न होइत अछि। एक सीमा ई अछि जे रोग-मुक्ति आ ऋचा-स्वीकृति दू सफलताकें समीप रखल गेल अछि; असावधान मंचनमे एहिसँ ई भ्रम उत्पन्न भऽ सकैत अछि जे आत्मसम्मान प्राप्त करबाक लेल देहक चिह्न मेटायब आवश्यक अछि। मुदा कृशाश्वक अस्वीकृति आ अपालाक अन्तिम प्रतिवाद एहि जोखिमकें किछु कम करैत अछि। मंचनमे ई अन्तर विशेष सावधानीसँ स्पष्ट करब चाही।

बाल-रंगमंच, संवाद आ मंचनीयता

आमक गाछी, अग्रिकुण्ड, दूर जलाशय, सामगान, औषधिक गन्ध, सोमक ध्वनि आ दू दिशिक प्रकाश—ई सभ न्यून साधनसँ बनि सकनिहार दृश्य-इकाई अछि। बालपाठक लेल शैक्षिक शब्दावलीक सघनता विशेषतः दोसर दृश्यकें धीमा बना सकैत अछि; उदात्त, अनुदात्त, प्लुत, विदथ आ ब्रह्मोदय सन पदक सजीव क्रिया अथवा लघु दृश्यद्वारा अर्थ खुलब आवश्यक होयत। स्त्री-शरीरक अपमानवाला पाँचम दृश्य संवेदनशील अभिनय माँगैत अछि। मूल मंच-निर्देश त्वक्-रोगकें हलुक कपड़ा वा प्रकाशसँ देखेबाक आ उपहाससँ बचबाक निर्देश दैत अछि—ई एकटा महत्वपूर्ण

रंगनैतिक उपलब्धि अछि। चित्रसभक मौजूदगी पाठकें दृश्यात्मक सहायता देत अछि, मुदा मुद्रित चित्रक रङ्ग, रेखा आ मंचगत प्रभावक स्वायत्त परीक्षण अलग आवश्यक अछि।

मैथिली—अंग्रेजी रूपान्तरक तुलना

‘APALA ATREYI’ मूलक सात दृश्य, पात्र, धार्मिक वस्तु आ निर्णायक संवादक मूल क्रम सुरक्षित रखैत अछि। ‘प्रश्ने विद्याक पहिल सीढ़ी अछि’क भाव अंग्रेजीमे प्रश्नकें ज्ञानक पहिल सीढ़ी कहैत संरक्षित अछि। ‘दाग देहपर अछि, दृष्टि अहाँक बीमार भेल अछि’क अंग्रेजी रूपमे **marks on the body** आ **vision ill** भेलाक विचार अक्षुण्ण अछि। ‘ब्रह्मवादिनी’, ‘माणवक’, ‘अनृच’, ‘अकृष्टपच्य’ आदि संस्कृतिक पद किछु ठाम रोमन रूप अथवा लघु व्याख्याक संग आयल अछि। एहि चयनसँ बाहरी दर्शक मूल सामाजिक जगत बुझि सकैत छथि, मुदा लघु पाठमे परम्परागत शब्दक भारी मात्रा अभिनयक गतिमे बाधा दऽ सकैत अछि। अंग्रेजी अनुवादमे अपालाक अन्तिम अस्वीकृति आ सभाक मान्यता दुनू प्रभावी ढङ्गसँ बनल अछि; अतः अनुवाद कथान्तकें वैवाहिक मेल-मिलापमे नहि बदलैत।

समीक्षात्मक निर्णय

‘अपाला आत्रेयी’क प्रधान उपलब्धि एकटा धार्मिक-ऐतिहासिक पात्रकें निष्क्रिय सहनशीलता सँ हटाकऽ प्रश्न करनिहार, अध्ययनशील आ आत्मनिर्णयी नायिकाक रूपमे स्थापिति करब अछि। सात दृश्यक चढ़ाव—शिक्षा, रोग, विवाह, अपमान, साधना, सार्वजनिक स्वीकृति आ निजी अस्वीकृति—स्पष्ट नाटकीय रचना बनबैत अछि। सीमा दोसर दृश्यक शिक्षोपदेशक घनत्व, आरोग्य-चमत्कार आ आत्मसम्मानक समीपवर्ती उपस्थितिसँ सम्भावित अर्थ-सन्देह, तथा आरम्भिक विवाह-निर्णयमे अपालाक प्रत्यक्ष स्वरक न्यूनता अछि। तथापि पाँचम आ सातम दृश्य एकरा बालसाहित्यक सामान्य सदाचारकथासँ आगाँ लऽ जाइत अछि।

पहिल नाटकक दृश्य-साक्ष्य

|          |             |
|----------|-------------|
| पाठ-इकाई | मूल साक्ष्य |
|----------|-------------|

|           |                                                             |
|-----------|-------------------------------------------------------------|
| दृश्य १-२ | अपाला—बालक—अत्रि; शिक्षा, उपनयन,<br>उच्चारण, आश्रमक प्रकृति |
| दृश्य ३-४ | वैद्यसभक चिन्ता; विवाह आ दृश्यात्मक<br>पूर्वाभास            |
| दृश्य ५   | कृशाश्वक प्रेम—वासना द्वन्द्व; अपालाक<br>प्रतिवाद           |
| दृश्य ६-७ | सोम, ऋचा, ब्रह्मोदय सभा आ स्वतन्त्र<br>अन्तिम निर्णय        |

नाट्य-युग्म २ : भऽ जाएब छू

पाठ-पहिचान आ रंगमंचीय विधा

‘भऽ जाएब छू’क मैथिली मूल रंग-संगम खण्ड-१क पृ. ५६—७३ आ अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर ‘WE SHALL TURN TO ASH’ पृ. ७४—८८मे अछि। पहिल नाटकक आश्रम-केन्द्रित दृश्य-रचनाक बाद ई कृति चौबटिया-सड़क नाटकक खुला वृत्तमे प्रवेश करैत अछि। मूल भूमिका एकरा बाल जलवायु-चेतना नाटक कहैत अछि। ‘मैथिलीक पहिल’ होयबाक दावा सेहो भूमिका मे अछि; ई ऐतिहासिक प्राथमिकताक दावा अन्य प्रकाशित नाटकक कालक्रम आ विधागत परिभाषाक बिना स्वतंत्र रूपसँ प्रमाणित मानल नहि जा सकैत। समीक्षाक आधार एतय रचनाक वास्तविक संवाद, मंच-निर्देश आ अंग्रेजी पाठ अछि।

भीड़ सँ नाटक : दर्शक रंगमंचक हिस्सा

नाटक आरम्भे लोककें मोबाइल नीचाँ राखि आकाश दिस तकबाक आग्रह करैत अछि। सूत्रधार आ भीड़सँ उभरैत कलाकारक हँसी-ठट्टा, स्त्री सूत्रधारक प्रतिप्रश्न आ घेरा बनेबाक निर्देश रंगमंच आ दर्शकक सीमानाकें लगातार बदलैत अछि। ‘नाटक देखलासँ भोजन चलतौ’ सन प्रश्न मनोरंजनक आर्थिक उपयोगिताकें चुनौती दैत अछि; सूत्रधार पेट, मन, भाषा आ हबाक भूखक सहबन्ध बनबैत अछि। एहि लोकभाषी विनोदसँ जलवायु-चिन्ता बाहरी उपदेश बनबाक बदला रोजमर्राक अभाव आ सासक अनुभवसँ जुड़ैत अछि। स्त्री सूत्रधारक ‘ककरा लेल ई नाटक नै छै’ सन व्यंग्य उद्घोषक विस्तारकें रोक्कैत अछि, फलतः मंचनमे आत्मालोचनाक प्रवाह बनैत अछि।

आठ कलाकारक रूपान्तरण आ सहभागिताक युक्ति

ओम, आस्था, जयन्त, अपाला, विजय, विजया, नेकलाल आ रामवती—आठ व्यक्ति क्रमशः चिड़ै, भगजोगनी, गाछ, सूर्य-तरेगन, चन्द्रमा, भूत-प्रेत आ कल्पनाक प्रतिनिधि बनैत छथि। व्यक्ति आ प्राकृत अस्तित्वक बीच ई अदला-बदली चरित्रक मनोवैज्ञानिक गहराइ सँ बेसी समूह-नाट्यक रूपकात्मक सामर्थ्यपर आधारित अछि। कलाकारसभक

पाँति बदलनाइ, फोटो उठेनाइ, चादरिसँ प्रकाश नुकेनाइ आ दर्शकक गोल घेरामे प्रवेश कएनाइ—ई सभ उपकरण कम खर्चमे सड़कपर देखाओल जा सकैत अछि। नाटकक संसारमे मनुक्ख, पक्षी, गाछ, प्रकाश, सपना आ भूत एकहि सार्वजनिक बहसमे उपस्थित छथि; ई वस्तुकरण नहि, परस्पर निर्भरताक रंगमंचीय कल्पना अछि।

भगजोगनी, शीतल प्रकाश आ विज्ञानक नाटकीकरण

दोसर भागमे भगजोगनीक प्रकाशक उदाहरणसँ ऊर्जा, ताप आ तकनीकी दक्षताक विमर्श शुरू होइत अछि। नेकलाल अपन पुरान प्रयोगकें स्मरण करैत छथि; रामवती हुनका कल्पनाक अभावक प्रश्नपर घेरैत छथि। ओम-आस्था एक-दोसराकें प्रकाश-संकेतसँ ताकि लैत छथि। एहि छोट क्रियामे 'शीतल प्रकाश' अन्धकार भेदबाक साधन मात्र नहि, सहकर्मी जीवकें बिना हानि चिन्हबाक सम्बन्ध-भाषा बनैत अछि। ई दृश्य विद्याक प्रति भय नहि, प्रकृतिसँ सीखबाक आग्रह करैत अछि। मुदा सोलह भाग ऊर्जामे पन्द्रह भाग ताप आ एक भाग प्रकाश सन अनुपात एक विशेष तकनीकी परिप्रेक्ष्यक उदाहरण हो सकैत अछि, सभ प्रकारक प्रकाश-स्रोतक सार्वभौमिक विज्ञान-सूत्र नहि। मञ्चनक शिक्षण संस्करणमे एहि सीमाक स्पष्टता जरूरी अछि।

गाछक एकान्त आ मनुष्यक उत्तरदायित्व

जयन्त आ अपाला गाछ बनि कऽ अपन काटल जाएबाक इतिहासक प्रश्न उठबैत छथि। कागच, कुर्सी, केवाड़ी, सजावट आ घरक निर्माणक कथन सामान्य उपयोग आ अनावश्यक उपभोगक भेदपर दर्शककें सोचबैत अछि। नेकलाल 'जरूरी छल' कहैत छथि; हुनकर प्रतिवादकें नाटक पूरी तरह निरर्थक नहि कहैत, बल्कि उपयोगक अनुपातमे पुनरोपणक जिम्मेवारी पुछैत अछि। विदेशी गाछ आ यूकेलिप्टसक प्रसङ्ग माटि-पानि सम्बन्धक स्थानीय बोध देखबैत अछि। तथापि विभिन्न प्रजातिक पानि-उपयोग, भूजल, क्षेत्रीय पारिस्थितिकी आ रोपणक प्रभाव वैज्ञानिक रूपसँ प्रसङ्ग-विशेष होइत अछि; एहि संवादकें सभ विदेशी प्रजातिक सार्वभौमिक हानिक प्रमाण नहि बनाओल जाए।

गीत, जैव-वितरण आ बालबोधक लोकभाषा

तेसर भागमे गाछसभ गीतद्वारा काँट, फूल, फल, छाँह, पानि आ बीयाक जीवन-व्यवस्था देखबैत छथि। महीसक केसँ चिपकल बीयाक दूर धरि जाइब, टिकलीक पराग-वहन, चिड़ै आ पवन द्वारा बीयाक प्रसार—ई सभ नाटकक अत्यन्त सजीव शिक्षण-सामग्री अछि। ‘पएर माटिमे रोपल’ गाछक लेल जीव-जगत ओकर चलनक साधन बनेत—ई कल्पना बाल दर्शककेँ परस्पर जैविक सम्बन्धक बोध देत अछि। प्रकृतिक क्रिया समझेबाक लेल नृत्य, गीत आ देह-भंगिमा पाठक विवरणक अपेक्षा बेसी मंचनीय सिद्ध भऽ सकैत अछि। रचनामे एकटा वैज्ञानिक भाषिक असंगति सेहो अछि : गीतक ‘ऑक्सीजन जरा भोजन बनबै छी’ कथन प्रकाश-संश्लेषणक सामान्य वैज्ञानिक विवरणसँ मेल नहि खाइत। एहि बिन्दुक सत्यापन आ अर्थानुकूल सम्पादन बाल-विज्ञान प्रदर्शन लेल महत्त्वपूर्ण अछि; मूल उद्धरणकेँ इतिहासक दस्तावेज जकाँ अक्षरशः प्रमाणित विज्ञान मानब उचित नहि।

कानब, खोंखी आ प्रतिज्ञाक रूपान्तरण

शीर्षक पाँति ‘जड़ि कटने भऽ जाएब छू’ पहिने व्यक्तिगत विलाप, तकर बाद सामूहिक गीत बनैत अछि। समूहक खोंखी धीरे-धीरे तालमे बदलैत अछि; ई एकटा प्रभावी ध्वनि-परिवर्तन अछि, कारण प्रदूषणक देहगत अनुभव रंगमंचक लय बनैत अछि। अन्तमे कलाकारसभ काल्पनिक बीया हाथमे लैत छथि आ एक-एक वचन दैत छथि। ओम भगजोगनीक प्रकाश, आस्था रातिक अन्हार, जयन्त पुनरोपण, अपाला देसी बीया, विजय ऊर्जा, विजया कल्पना सँ कर्म, नेकलाल विगत त्रुटिक स्वीकृति आ रामवती नव सपना रोपबाक प्रतिज्ञा लैत छथि। एहि क्रममे आरम्भक प्रतीक-चरित्रसभ व्यवहारिक नैतिक भूमिकामे परिणत होइत अछि। दर्शकसँ उत्तर मँगबाक कारण रंगमंच समाप्त होइत-होइत सार्वजनिक सामूहिक काजक आमन्त्रण बनैत अछि।

नाट्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन आ सीमा

एहि नाटकक प्रधान नाटकीय क्रिया बाहरी शत्रुसँ संघर्ष नहि, सामूहिक अज्ञान आ व्यवहारक विरोध अछि। नेकलालक स्वयं स्वीकारोक्ति कथानककेँ किछु एकरेखीय

अपराध-आरोप सँ बचबैत अछि। हास्य सँ आरम्भ, कौतूहल सँ विज्ञान, करुण सँ पर्यावरणीय विलाप आ अन्तमे संकल्प—एहि भावक्रममे नाटक दर्शकक ग्रहणशीलता गढ़ैत अछि। रूपकक सघनता प्रभावी अछि, मुदा सूत्रधारक आरम्भिक लम्बा सूची, किछु वैज्ञानिक कथनक अतिसरलीकरण आ अन्तिम प्रतिज्ञाक प्रत्यक्ष उपदेश पाठक स्वतन्त्र विचार-सृजनकें सीमित करि सकैत अछि। दर्शकक सहभागिता नाटकक शक्ति अछि, तथापि ‘हँ’ कहबाक आग्रह वास्तविक बहस लेल प्रश्नोत्तरक अतिरिक्त अवसर देला पर आरो अर्थवान् होयत।

मैथिली-इंग्लिश रूपान्तरक अर्थान्तर

अंग्रेजी शीर्षक ‘WE SHALL TURN TO ASH’ मूल ‘भऽ जाएब छू’क शाब्दिक पुनरुक्ति नहि, ओकर सङ्कट-बोधक अर्थकें खुला करबाक व्याख्यात्मक अनुवाद अछि। मैथिली पाठक आञ्चलिक स्वर, सम्बोधन, हँसी आ व्यङ्ग्य अंग्रेजीमे अधिक स्पष्ट वाक्य-विन्यासमे आयल अछि। मुदा कलाकारक १ सँ ८ धरि क्रम, भाग १—३क संरचना, शीतल प्रकाश, गाछक काटल जाएब, बीयाक यात्रा आ अन्तिम प्रतिज्ञा मूलतः सुरक्षित अछि। ‘भगजोगनी’क ‘firefly’ आ ‘शीतल प्रकाश’क ‘cool light’ विदेशीक मंचसमुदाय लेल बुझाइयोग्य विकल्प अछि, यद्यपि स्थानीय शब्दक सांस्कृतिक लय सहज रूपसँ पूरी नहि पहुँचि सकैत। अंग्रेजी समापनमे ‘roots survive’ द्वारा ‘जड़ि बचत’क अर्थ रक्षल गेल अछि। एहि अनुवादक मंचीय उपलब्धि भिन्न भाषाक दर्शक लेल समूहमनक रूपककें ग्रहणीय रखब अछि।

समेकित निर्णय

‘भऽ जाएब छू’ बाल-विज्ञान नाटकक संग लोकसङ्क रंगमंचक प्रयोग अछि। ओकर मौलिकता उपदेशक कथनमे नहि, आठ मनुष्यक प्रकृतिक जीव/शक्तिमे अभिनयात्मक रूपान्तरण, भगजोगनीक प्रकाश-सङ्केत, बीयाक चलैत रूपक आ खोंखी सँ गीतक ताल बनबाक दृश्य-शब्द-रचनामे अछि। विज्ञानक शाब्दिक सूक्ष्मता किछु ठाम पुनर्परीक्षण माँगैत अछि; सार्वजनिक वचनबद्धता किछु ठाम अधिक प्रत्यक्ष अछि। एहि सीमा रहितो कृति बच्चासभकें केवल भावुक भय नहि, कल्पना आ व्यवहारक बीच सम्बन्ध देखबैत

अछि; एकरा पाठक बहस आ प्रत्यक्ष स्थानीय पारिस्थितिक अध्ययनक संग मंचित कएल जाए तँ उपयोगिता बढ़त।

दोसर नाटकक भागवार साक्ष्य

| पाठ-इकाई | मूल साक्ष्य                                            |
|----------|--------------------------------------------------------|
| भाग १    | सूत्रधार, दर्शक-घेरा, आठ कलाकार आ भगजोगनीक रूपान्तरण   |
| भाग २    | शीतल प्रकाश, ऊर्जा, गाछक काटल जाएब आ रोपणक प्रश्न      |
| भाग ३    | बीयाक यात्रा, समवेत गीत, खोंखी सँ ताल आ सामूहिक संकल्प |

समीक्षित कृतिसभक तुलनात्मक टिप्पणी

पहिल नाट्य-युग्मक मुख्य प्रश्न व्यक्ति-गरिमा आ स्त्रीक ज्ञानाधिकार अछि; दोसरक केन्द्र समाज आ प्रकृतिक परस्पर उत्तरदायित्व। ‘अपाला आत्रेयी’मे नायिका अपन देहक सामाजिक अर्थपर असहमति प्रकट करैत छथि; ‘भऽ जाएब छू’मे गाछ, भगजोगनी आ मानव प्रतिनिधि मिलि पृथ्वीक सामाजिक अर्थपर प्रश्न करैत छथि। पहिल मंचक प्रकाश व्यक्तिगत आत्मनिर्णयक दिशा चिन्हबैत अछि, दोसर मंचक प्रकाश जीवसभक संकेत-सम्बन्धक माध्यम बनैत अछि। दुनूमे प्रश्न करबाक अधिकार पाठक नैतिक बोधक आरम्भ अछि। ‘अपाला’ नाम दोसर नाटकमेसँ सेहो एक किशोरी पात्रक रूपमे भेटैत अछि; मुदा दुनू नाटकक पात्र एकहि व्यक्ति छथि, एहि प्रकारक दावा पाठ सँ प्रमाणित नहि होइत अछि।

रंग-संगम • खण्ड १ • तेसर आ चारिम नाट्य-युग्म

द्विभाषिक मूल पाठपर आधारित विस्तृत आलोचना

### नाट्य-युग्म ३ : दानवीर दधीची

स्रोत, विधा आ मूल प्रस्तावना

रंग-संगम खण्ड १क तेसर नाट्य-युग्म 'दानवीर दधीची' अछि। मैथिली मूलक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ८९ सँ आ अंग्रेजी 'DADHICHI, THE GREAT GIVER'क आरम्भ पृष्ठ १०२ सँ होइत अछि; अगिला नाटक पृष्ठ ११४ सँ आरम्भ होइत अछि। तीन दृश्यवाला एहि बालनाटकमे महर्षि दध्यङ्क आथर्वन दधीची, इन्द्र आ अश्विन-बन्धु प्रमुख कर्ता छथि। कृतिक भूमिका स्पष्ट कहैत अछि जे दानक केन्द्र हड्डीक दन्तकथासँ हटाकऽ ज्ञान, प्रतिज्ञा, पात्रता आ सत्यक रक्षा बनाओल गेल अछि। एकरा नाटकक आन्तरिक व्याख्यात्मक प्रस्तावना बुझबाक चाही, स्वतंत्र वैदिक इतिहासक निष्कर्ष नहि।

प्रथम दृश्य : अतिथिसत्कार आ ज्ञानक पात्रता

प्रथम दृश्य सूर्योदय, तपोवन, फूलक गाछ, यज्ञधूम आ अपरिचित आगन्तुकक आगमनसँ खुलैत अछि। दधीची अतिथिक मनोरथ पूर्ण करबाक प्रतिज्ञा कऽ लैत छथि, तकर बाद आगन्तुक इन्द्रक रूपमे अपन परिचय दैत छथि। एहि क्रममे वचन देबाक नैतिक बाध्यता आ ग्रहीताक पात्रताक परीक्षण आमने-सामने ठाढ़ होइत अछि। दधीची इन्द्रक भोगवृत्ति आ अधिकारलोलुपताकेँ देखैत छथि, मुदा अपन गछल वचनक कारण मधु-विद्या सिखबैत छथि। अतः नाटकमे दान एकदम निष्कपट उदारताक सरल दृष्टान्त नहि; अनिच्छा, विवेक, शङ्का आ प्रतिज्ञाक तनावसँ बनल निर्णय अछि।

मधु-विद्याक सामाजिक आशय

दधीचीक उपदेशमे जगतकेँ परस्पर उपकारी सम्बन्धक क्षेत्र मानल गेल अछि। अपन सुखकेँ एकमात्र लक्ष्य माननिहार शासकक लेल मधु सेहो विष बनि सकैत अछि—ई रूपक ज्ञानक सामाजिक उत्तरदायित्वकेँ स्पष्ट करैत अछि। इन्द्रक शासकीय प्रतिष्ठाकेँ प्रश्न करिते गुरु—शिष्य सम्बन्ध सत्ताक नियन्त्रणसँ टकराइत अछि। इन्द्रक क्रोध आ “ज्ञान पर पहरा”क धमकी नाटकक निर्णायक संघर्ष उत्पन्न करैत अछि। शिक्षा ग्रहण

कएनिहार व्यक्ति सिखेनिहार पर स्वामित्व जताबय, तँ ज्ञानक प्रसारक मूल प्रक्रिया उलटि जाइत अछि।

दोसर दृश्य : अश्विन-बन्धु आ ज्ञान-अधिकारक प्रतिपक्ष

अश्विन-बन्धु सेवा, वैद्यक कर्म आ भोगक परित्यागकें अपन पात्रताक आधार कहैत छथि। इन्द्र हुनका सोमपानक योग्य नहि मानैत छथि; मुदा दधीची पद वा देवाधिकारक बदला व्यवहारिक उपकारकें पात्रताक प्रमाण मानैत छथि। एहिमे ज्ञान-सम्बन्धी अधिकारक सामन्ती परिभाषाक विरोध निहित अछि। गुरु इन्द्रक धमकीक चर्चा करैत ज्ञान-लोपक भयकें अपन शारीरिक सुरक्षासँ पैघ मानैत छथि। अश्विन-बन्धु शल्यक्रियाक उपाय प्रस्तुत करैत छथि, जाहिमे दधीचीक माथक स्थानपर घोड़ाक माथ राखल जाइत अछि आ इन्द्रक वारक पाछाँ मूल माथ पुनः जोडल जाइत अछि। ई घटना नाटकक चमत्कारिक कथानक-तन्त्र अछि; आधुनिक चिकित्सा-विज्ञानमे एकर सम्भाव्यताक दावा एहि साहित्यिक चित्रणसँ प्रमाणित नहि होइत अछि।

मञ्चपर परिवर्तन : दृश्यात्मक चमत्कार आ हिंसाक नियन्त्रण

शल्य-सज्जाक लेल टेबुल, औजार, अर्ध-अन्हार आ आंशिक परदा-परिवर्तन निर्धारित अछि। इन्द्रक प्रहार, माथ काटल जाएब आ फेर देहक पुनर्स्थापन नाटकमे प्रत्यक्ष क्रियाक रूपमे कहल गेल अछि, मुदा बाल दर्शक लेल प्रतीकात्मक प्रदर्शनक आग्रह सेहो देल गेल अछि। रूपान्तरणक एहि दृश्येँ पाठक कल्पना तीव्र बनैत अछि; मुदा सतही मंचनमे बाल-दर्शकक भय आ चिकित्सकीय भ्रम बढ़बाक जोखिम रहत। परदा, छाया, ध्वनि आ प्रकाशद्वारा घटनाक प्रतीकात्मकता सुरक्षित राखब नाटकक अपन निर्देशसँ मेल खाइत अछि।

इन्द्रक पश्चात्ताप : सत्ता आ अधिगम

दोसर दृश्यक उत्तरार्द्धमे इन्द्रक मुद्रा बदलि जाइत अछि। पहिने जे व्यक्तित्व उपदेशपर एकाधिकार राखय चाहैत छल, सएह अश्विन-बन्धुक व्यवहारसँ सीखैत अछि जे सच्चा शिष्य सेवा आ गुरु-सम्मानद्वारा चिन्हल जाइत अछि। दधीची हुनकर अपराध आ पश्चात्ताप दुनू देखैत छथि आ ज्ञानकें अधिकार नहि, सेवा बनेबाक आग्रह करैत

छथि। क्रोध सँ लज्जा धरि इन्द्रक परिवर्तन नाटकमे नैतिक पराकाष्ठा अछि। तथापि इन्द्रक प्राणघातक आक्रमणक बाद क्षमाक प्रक्रिया अत्यन्त शीघ्र होइत अछि; एहि कारण न्याय, क्षतिपूर्ति आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक प्रश्न पूर्ण विस्तार नहि पबैत अछि।

तेसर दृश्य : शस्त्र, विजय आ विडम्बना

वृत्र आ शम्बरक आक्रमणक प्रसङ्गमे इन्द्र फेर दधीचीक शरण जाइत छथि। दधीची शर्याणा जलाशय लग राखल घोड़ाक मूडीक सहायतासँ अस्त्र बनेबाक सल्लाह दैत छथि। एहि बिन्दुपर “ज्ञानक दान” एक विचित्र भौतिक मोड़ लैत अछि : जे मुखसँ विद्या कहल गेल, ओही मुखक कठोरता शस्त्र-सामग्रीक आधार बनि जाइत अछि। आगिक, धुँआक, धनुषक आ कवचक विवरण देवकथा आ युद्धवस्तुक मिश्रित रंग-कल्पना बनबैत अछि। दधीचीक ‘शस्त्रक धर्म रक्षा अछि, दम्भ नहि’ वचन नाटकक नैतिक सङ्कल्प अछि, मुदा रचनाक अन्तिम विजय-सूचना विरोधी पक्षक स्वर वा युद्धक जटिलताकेँ अलग अवसर नहि दैत अछि।

नव्य न्यायपरक परीक्षण : प्रतिज्ञा, प्रमाण आ निष्कर्ष

पात्रताक निर्धारणमे पहिल इन्द्र आ बादक अश्विन-बन्धुक तुलना प्रत्यक्ष पद-अधिकार आ नैतिक गुणक भेद खोजैत अछि। ककरो देवताक राजा होयब उपदेशक उचित प्रयोगक पर्याप्त हेतु नहि; सेवाक दृश्य कर्म युक्तिक दोसर प्रकारक आधार प्रदान करैत अछि। मुदा घोड़ाक माथ बदलबाक अलौकिक घटना, ओहिसँ शस्त्र बनबाक कथा आ अन्तिम सूत्रधार द्वारा कथित ऐतिहासिक श्रेष्ठताक प्रतिज्ञा पृथक् कोटिक पाठ्य-विधान अछि। कल्पनात्मक कथा भीतरक तर्क तथा बाहरी ऐतिहासिक प्रामाणिकता एकरूप नहि। सूत्रधार पौराणिक व्याख्याकेँ ‘अनर्थ’ कहैत छथि—ई नाटकीय पक्षधरता अछि; एकरा मूल वैदिक आ पौराणिक स्रोतक पाठ-साक्ष्य बिना अन्तिम ऐतिहासिक फैसला नहि मानल जाए।

रस, ध्वनि आ बालनाटकक मञ्चनीयता

गुरुक संशयमे शान्त आ चिन्तनशील भाव, इन्द्रक धमकीमे रौद्र, शल्यक्रियामे अद्भुत, पुनर्मिलनमे करुण-प्रसन्नता आ युद्धमे वीरभाव अछि। ध्वनिक आधार आम्रवनक पात,

यज्ञधूम, घोड़ाक हिनहिनाहटि, इन्द्रक प्रहार आ युद्ध-नाद अछि। नाटक दानक रूढ़ अर्थकें पलटबाक कोशिशमे एकटा महत्वपूर्ण नाटकीय उलटबाँसी रचैत अछि; किन्तु तीन दृश्यक भीतर ज्ञानोपदेश, शल्यचमत्कार, युद्धवर्णन आ दर्शकक लेल प्रत्यक्ष नीति-कथनक सघनता असमान गतिक कारण बनि सकैत अछि। अन्तिम सूत्रधारक घोषणा बाल-दर्शककें अर्थ बुझबैत अछि, मुदा स्वतन्त्र आलोचनात्मक निर्णय लेल किछु कम अवकाश छोड़ैत अछि।

मूल—अनुवाद तुलनात्मक पाठ

अंग्रेजी रूपान्तरक शीर्षक 'DADHICHI, THE GREAT GIVER' मूलक व्यक्ति-केंद्रिक शीर्षकक अर्थ सुरक्षित रखैत अछि; उपशीर्षक मधु-विद्या, वचन आ सत्यक रक्षा पर विस्तार करैत अछि। 'Ashvins', 'Indra', 'Madhu-Vidya' सन सांस्कृतिक संज्ञा कथा-परिवेशक विशिष्टता बनौने रखैत अछि। इन्द्रक निषेध, अश्विनक सेवागत पात्रता, प्रतीकात्मक शल्यक्रिया, पश्चात्ताप, घोड़ाक मूड़ीक शस्त्रीकरण आ अन्तिम सूत्रधारक असहमति अंग्रेजी पाठमे सेहो उपस्थित अछि। अंग्रेजी पाठ मंचक हिंसाकें सांकेतिक रखबाक निर्देश दैत अछि; तथापि शल्य-विषयक अलौकिक दृश्यकें आधुनिक चिकित्सकीय सम्भावना मानबाक भ्रम दुनू भाषा-पाठमे एकहि प्रकारसँ अलग करब आवश्यक अछि।

समेकित आलोचनात्मक निर्णय

'दानवीर दधीची'क सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि दानकें शरीरक वस्तुगत त्यागसँ हटाकऽ ज्ञानकें सार्वजनिक सम्पदा मानबाक नैतिक प्रतिज्ञा रूपें पढ़बाक प्रयत्न अछि। इन्द्रक पहिल हिंसा आ बादक क्षमायाचना पात्र-विकासक अक्ष बनबैत अछि; अश्विन-बन्धु सेवाक नैतिकता लऽ कऽ राज्याधिकारक प्रतिपक्ष बनैत छथि। सीमामे चमत्कारक तेज बदलाव, शस्त्र-निर्माणक विस्तृत सूची, युद्धक प्रतिपक्षहीन परिणाम आ सूत्रधारक ऐतिहासिक निष्कर्षक अत्यधिक निश्चितता अछि। मिथकीय पुनर्पाठक रूपमे कृति परिपक्व बहस खोलैत अछि; इतिहासक एकमात्र प्रमाणित पुनर्निर्माणक रूपमे एकरा प्रस्तुत करब नाटकक उपलब्ध पाठ-साक्ष्यसँ आगाँ बढ़ब होयत।

मूल पाठ-साक्ष्यक दृश्य/भाग-पञ्जी

| नाटकक इकाई | पाठमे उपस्थित प्रसङ्ग                                                |
|------------|----------------------------------------------------------------------|
| दृश्य १    | आगन्तुक इन्द्र, अतिथिक वचन, मधु-विद्या, ज्ञानपर निषेध                |
| दृश्य २    | अश्विन-बन्धुक पात्रता, घोड़ाक मस्तक, शल्य-चित्रण, इन्द्रक पश्चात्ताप |
| दृश्य ३    | वृत्र—शम्बर, शर्यणा जलाशय, शस्त्र, सूत्रधारक अर्थ-निर्णय             |

## नाट्य-युग्म ४ : गंगा ब्रिज

पाठ-सीमा, कथन-रूप आ केन्द्रीय समस्या

रंग-संगम खण्ड १क चारिम नाट्य-युग्म 'गंगा ब्रिज'क मैथिली मूल मुद्रित पृष्ठ ११४ सँ आ लेखकक अंग्रेजी 'GANGA BRIDGE' पृष्ठ १५१ सँ प्रारम्भ होइत अछि; अगिला नाट्य-युग्म 'जलोदीप' पृष्ठ १८३ सँ शुरू होइत अछि। नाटक पाँच मुख्य भागमे विकास, भ्रष्टाचार, अभियन्त्रणक नैतिकता, मजदूरक मृत्यु आ इतिहासक सरकारी लेखनक प्रश्न उठबैत अछि। कथानक केवल एकटा पुल बनेबाक घटना नहि; पुलक भौतिक दरारि आ राष्ट्रनिर्माणक सार्वजनिक प्रतिज्ञामे उत्पन्न नैतिक दरारिक समानान्तर रचना अछि।

प्रारम्भक काल-विन्यास : जीर्ण पुलसँ अतीतमे प्रवेश

पहिल भागक दृश्य मे मरम्मत करैत मजदूर, हथौड़ीक ठक-ठुक, नदीक स्वर, नगाड़ा आ ढोलहो देनहारक घोषणा सुनाइत अछि। उद्घाटनसँ पहिनहिये चिप्पी पड़ैत रहनिहार पुलक उल्लेखसँ नाटक परिणाम पहिने देखबैत अछि, कारणक इतिहास पाछाँ खोलैत अछि। ई प्रतिलोम कथन-क्रम दर्शककेँ पहिलेसँ मुख्य प्रश्न देत अछि : सार्वजनिक धन आ श्रम लगलाक बादो पुल कमजोर किएक रहल? ढोलहो देनहारक पुनरुक्ति सरकारी प्रचारक निर्लज्ज स्थिरता देखबैत अछि; भौतिक संकट जाहि दरमियान बढ़ैत अछि, विज्ञप्तिक भाषा प्रायः ओहने रहैत अछि।

दू लोकक संवाद : राज्यक अर्थ पर बहस

प्रारम्भक दू लोक इन्जीनियर, ठिकेदार, सरकारी कर्मचारी, जमीन्दारक अमला आ निर्वाचित शासनकेँ अलग-अलग अर्थमे 'सरकार' कहैत छथि। एहि प्रश्नोत्तरमे स्वतंत्र भारतक राज्यक पुरान अधीनता-स्मृति सँ सम्बन्ध खुलैत अछि। मंचक एक कोनमे झण्डा बाँटल जाइत अछि, मुदा दुनू प्रश्नकर्ताकेँ झण्डा नहि पहुँचैत; समारोहक सामूहिक उल्लासमे ओ दुनू किछु बाहर रहि जाइ छथि। ई छोट दृश्य संसाधन आ प्रतिनिधित्वक

असमान बँटवाराक सघन प्रतीक अछि। राज्यक अवधारणाक लम्बा संवाद नाटकक बौद्धिक बल अछि, मुदा प्रस्तुति धीमा होयबाक जोखिमो एतहि उत्पन्न होइत अछि।

स्वतन्त्रतादिवस आ शिक्षकसभक विरोधी विकास-दृष्टि

१९४७क उत्सवमे पहिल शिक्षक शिक्षा, समानता आ सामाजिक परिवर्तनक आशा प्रकट करैत छथि; दोसर औद्योगिकीकरण, चिमनी आ पैघ बान्हकें प्रगतिक मुख्य रूप मानैत छथि। पहिल शिक्षक तुरन्त विस्थापन, असमान क्षेत्रीय लाभ आ कमजोर बाँधक जोखिमक प्रश्न उठबैत छथि। बालक १ पुल, नहर आ सड़कद्वारा लोकक दुःख कम करय चाहैत अछि; बालक २ धुँआ, ऊँच निर्माण आ पैघ आकारसँ आकर्षित अछि। आरम्भमे बालकसभक ई भिन्न दृष्टि पाछाँ अभियन्ता आ मुख्य अभियन्ताक वैचारिक विरोधमे परिणत होइत अछि। धुँआक गन्ध आ मायक खौखी ओकर आलोचनात्मक प्रतीकक प्रारम्भिक बीआ अछि।

दीक्षान्त समारोह : विद्या, पद आ अन्तरात्मा

दोसर भागक दीक्षान्त दृश्य अभियन्ताक नैतिक दृष्टि स्पष्ट करैत अछि। हुनकर लेल बनेबाक सफलता काजक वास्तविक गुण, पानिक निकासी, लोकक सुख आ समयपर सम्पन्न निर्माणसँ जाँचल जाएत; मित्र पदोन्नति आ वरिष्ठ अधिकारीक आदेशमे सफलता देखैत छथि। दुनू एकहि संस्थानक विद्यार्थी छथि, मुदा पढ़ाइ सँ दू प्रकारक व्यक्ति निकलैत अछि। नाटकक सबसँ प्रभावी आलोचनात्मक सूत्र ई अछि जे नीयत कागजपर बदलल जा सकैत अछि, मुदा पुलक पाया फाइलक परिभाषा नहि मानैत अछि। भौतिक सत्य आ प्रशासकीय शब्दक अन्तर एहि पाँतिसँ स्पष्ट होइत अछि।

ठिकेदारक स्वीकृति : व्यक्ति-दोष सँ संस्थागत जाल धरि

पुलक बालु चालबाक, सीमेन्टक मात्रा आ निर्माणक नियमनिष्ठा पर अभियन्ताक आग्रह ठिकेदार स्वीकार करैत अछि; मुदा कमीशनक जालमे नेता, उच्च अधिकारी आ हिंसक दबावक भागीदारीक गप सेहो कहैत अछि। ठिकेदार अभियन्ताक ईमानदारीक आदर करैत-करैत अपन बाल-बच्चाक रोजीरोटी आ व्यवस्थागत दबावक हवाला दैत अछि। एहि कारण नाटक भ्रष्टाचारकें खाली एकटा लोभी व्यक्तिक स्वभाव बनाकऽ नहि

छोड़ैत; भले एहि पात्रक आत्मरक्षात्मक तर्क पर्याप्त मुक्ति नहि दैत, ओ विरोधक संस्थागत रूपकें दृश्य बनबैत अछि।

गामक उत्सव : स्थानीय विकास आ सामूहिक श्रम

तेसर भागमे अभियन्ताक गामक लोक हुनका अपन पहिल अभियन्ता मानि गौरव व्यक्त करैत अछि। बतही माए, कनियाँ काकी, दादा, लाला, बाउ, बिलट आ मीतक संवाद जातीय-परिचित बोली, चुहल आ स्थानीय राजनीतिक विडम्बनाक सहारे प्रकट होइत अछि। छोट पुलक निर्माणमे स्थानीय लोक अपन खेतक माटि आ श्रम देबाक तैयार छथि। अभियन्ताक 'पहिने नाप, फेर काज; पहिने लोकक राह, फेर ठेका' सिद्धान्त एहि स्थानीय प्रयत्नक मूल्य बनैत अछि। देशक महत्वाकांक्षी परियोजना आ गामक सामूहिक जरूरतक ई भिन्नता नाटकमे विकासक दोसर सम्भावना देखबैत अछि।

मजदूरक मृत्यु आ प्रमाण-दाबा : आँकड़ाकें कोना पढ़ी

चारिम भागमे गंगा पुलक परियोजनापर मुख्य अभियन्ताक संग टकराव तीव्र होइत अछि। मूल नाटकक अभियन्ता सुरक्षाक अभाव, मशीनक दुर्घटना, प्राथमिक उपचारक कमी, एक मासमे तीस मजदूर आ एक वर्षमे तीन सय मृत्यु, क्षतिपूर्तिक अटकायल संचिका आ रामधनीक घायल हाथक कथा कहैत अछि। ई सभ संख्या आ घटना कथा भीतरक अभियन्ताक कथन छथि; ऐतिहासिक परियोजनाक पुष्ट अभिलेख नहि। मुदा नाटकक भीतर एहि कथनक नैतिक बल ओहि समय तेज होइत अछि जखन मुख्य अभियन्ता श्रमिकमृत्युक संख्या सार्वजनिक भेलासँ मुख्यमंत्री आ अपन प्रतिष्ठापर आँच आबबाक भय व्यक्त करैत छथि। ई 'प्रमाण बनाम गोपन'क सत्ता-संघर्ष अछि।

पाइ, फाइल आ मित्रता : आधिकारिक सत्यक निर्माण

अभियन्ताक लग दुर्घटनाक तिथि, मजदूरक नाम आ घटिया मालक हिसाबक प्रतिलिपि अछि। ओ बदली सहबाक तैयार छथि, मुदा साक्ष्य दबेनाइ स्वीकार नहि करैत छथि। मुख्य अभियन्ताक मित्रता धीरे-धीरे कुर्सीक सुरक्षा बनि जाइत अछि; ओ हुनका सचेत करैत छथि जे रास्ता बदलू नहि तँ रास्ते अहाँकें कुचलि देत। 'रास्ता' शब्द पुल-निर्माणक भौतिक मार्ग सँ सत्ता-अनुशासनक धमकीमे रूपान्तरित होइत अछि। नव्य

न्यायपरक विचारमे आरोप, प्रत्यक्ष श्रम-दुर्घटना, कागजी सूची आ प्रशासनक मौनक साक्ष्य-मूल्य अलग होयत; नाटक एहि सभकेँ घर्षणमे रखैत अछि।

मृत्युक निर्माण : दुर्घटना बनायल हत्या

मुख्यमंत्री आ मुख्य अभियन्ताक निजी वातामे ईमानदार अभियन्ताकेँ बदली, झूठ आरोप, हिंसा अथवा बनावटी आत्महत्यासँ हटेबाक विकल्प पर विचार होइत अछि। अन्ततः रोलरक नीचाँ पिचड़ी 'दुर्घटना' लगनिहार मृत्यु आयोजित करबाक संवाद अछि। ई नाट्य-पाठक भीतर कथित योजना स्पष्ट अछि; ताहि कारण दर्शकक ज्ञान आ सार्वजनिक घोषणा बीच नाटकीय विडम्बना बनैत अछि। मृत्यु-पाछाँ पत्नी, माए आ परिजनक विलापमे 'कागज कतऽ अछि' प्रश्न निर्वैयक्तिक रिकॉर्ड आ जीवित साक्षीक बीच टकराव उत्पन्न करैत अछि। नाटक दोषक निरूपण मंचपर करैत अछि; कोनो वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति-विशेषक अपराधक प्रमाण एकर आधारपर नहि बनैत अछि।

भदोहीसँ घुरल मजदूर : विकासक दोसर हिंसा

तेसर बालकक पथ मजदूर बनबाक कथा सँ जुड़ैत अछि। भदोहीमे शोषण, श्रमक हिंसा, भूख आ ठगीक अनुभव लेने घुरल मजदूर अभियन्ताक शवक दृश्य देखैत अछि। ओ अपना उद्धारक कथाक खोज करैत अछि आ फेर अत्याचारमे फँसल आन लोककेँ बचय चलि जाइत अछि। एतय पुलक परियोजना सँ बाहरक श्रमिक जगत सेहो नाटकक नैतिक परिधिमे अबैत अछि। ई चरित्र कथाक आरम्भमे बकरी तकनिहार स्कूलसँ पलायन कएनिहार बालक छल; अन्त धरि श्रम-अनुभवक राजनीतिक साक्षी बनैत अछि। एहन दीर्घकालिक पात्र-परिवर्तन समाजक समानान्तर इतिहास उपस्थापित करैत अछि।

अन्तिम पोथी-लोकार्पण : इतिहासक अपहरण

पाँचम भागक अन्तिम पल्लवमे मुख्य अभियन्ता अपन लिखल 'गंगा ब्रिज' पोथीक लोकार्पण करबैत छथि, मुख्यमंत्री ओकर निष्पक्ष इतिहास होयबाक दावा करैत छथि। पुस्तकमे किछु मृत श्रमिकक नाम देल गेल अछि, मुदा जकर हत्या आ व्यापक शोषणक आरोप कथा कहैत अछि, ओकरा सार्वजनिक महिमागानमे रूपान्तरित कएल जाइत

अछि। ओहि दृश्येँ नाटकक असल वैचारिक पराकाष्ठा बनैत अछि : पुलक उद्घाटन सँ बेसी महत्वपूर्ण इतिहासक आधिकारिक संस्करणक उद्घाटन अछि। लेखकक पात्र 'घाव खोलब' सँ बचबाक नामपर इतिहासमे 'पट्टी' बाँधबाक घोषणा करैत छथि, जखन कि घावक कारणेँ सामाजिक देह भीतर सँ सड़ि रहल अछि। ताहि समय मजदूरक प्रश्न आ ढोलहो देनहारक पुनरागमन लिखित इतिहासक विरोधमे मौखिक प्रतिअभिलेख बनैत अछि।

ध्वनि, दृश्य-विन्यास आ आवर्तक संरचना

ढोल-नगाड़ा, हथौड़ीक ठक-ठुक, पुलक काँपन, नदीक मद्धिम स्वर, रोलरक घरघराहटि आ सार्वजनिक धन्यवादक पुनरुक्ति नाटकक सांगीतिक—ध्वनिक अन्तर्संरचना अछि। आरम्भमे जे पुलक मरम्मतिक घोषणा अछि, समापनमे लगभग ओही घोषणा फेर सुनाइत अछि। वृत्ताकार संरचना देखबैत अछि जे सार्वजनिक कथित सफलता काजक वास्तविक दोषकेँ दूर नहि कऽ सकल। मंचपर कतिपय पात्रक 'फ्रीज' भऽ जाएब आ समय छलाँग नाटककेँ सीधा कालानुक्रमिक जीवनीक रूपसँ हटबैत अछि। एहि नाटकीय समय-भङ्गक मंचनीयता प्रकाशक सुस्पष्ट बदलाबपर निर्भर करैत अछि।

उपनिवेशोत्तर दृष्टि आ इतिहासक प्रमाण-सीमा

अंग्रेजक पुल अपेक्षाकृत मजबूत होयबाक संवाद, स्वतंत्र भारतमे स्वार्थी शासनपर कटाक्ष आ दादाभाई नौरोजीक धननिकासी-सिद्धान्तक उल्लेख नाटकमे उपनिवेशोत्तर आत्मालोचनक युक्ति छथि। एहि संवादसभकेँ व्यापक ऐतिहासिक पुल-सर्वेक्षण अथवा आर्थिक मापनक वैज्ञानिक निष्कर्ष नहि मानल जाए। नाटकक उपलब्धि ई अछि जे स्वतन्त्रताक सार्वजनिक प्रतीक आ सामाजिक असमानताक अविच्छिन्नता एके दृश्य-स्थानमे राखैत अछि। सीमा ई अछि जे राजनीतिक नेतृत्व आ मुख्य अभियन्ताक किछु संवाद अनावृत षड्यन्त्रक अत्यन्त स्पष्ट भाषामे अछि; एहिसँ सत्ताक जटिल तन्त्र कखनो सरल दुष्ट—नायक विरोधमे बदलैत अछि। तथापि ठिकेदारक दुविधा आ मित्रक आत्मरक्षात्मक भय एहि सरलताकेँ किछु चुनौती दैत अछि।

मैथिली—अंग्रेजी रूपान्तर : संरचना आ स्थानीय लय

अंग्रेजी 'GANGA BRIDGE' मूलक पाँच-भागीय विकास, बाल्यकालक आकांक्षा, अभियन्ता—मित्रक टकराव, श्रमिकक मृत्यु, रोलरक दृश्य, विधवाक प्रश्न आ पुस्तक-लोकार्पणक विडम्बना बनौने रखैत अछि। 'Chief Engineer', 'Chief Minister', 'contractor' आ 'labourer' सन पदानुवाद बाहरी रंगमंचक लेल प्रशासनिक संरचना स्पष्ट करैत अछि। मैथिली मूलमे डंका, ढोलहो, 'चिप्पी', 'बोनिहार' आ गामक अनेक सम्बोधनसँ जे छिटफुट व्यङ्ग्य-लय उठैत अछि, ओकर अंग्रेजीमे अर्थ प्रायः पहुँचैत अछि, मुदा ध्वनिक अन्तर पूरापूर नहि पहुँचि सकैत अछि। अंग्रेजी अन्तमे सेहो मृतकक स्मृति हथौड़ी, ढोल आ पुलक दरारिमे बसल रहबाक प्रतीक सुरक्षित अछि।

शिल्पगत उपलब्धि आ आलोचनात्मक निर्णय

'गंगा ब्रिज' आधुनिक विकास-नाटकक रूपमे तकनीकी संरचना आ नैतिक उत्तरदायित्वक एकीकृत परीक्षण करैत अछि। पाँच भागक फैलावमे श्रमिक, गाम, शिक्षा-संस्था, अभियन्ता, ठिकेदार आ राजनीति सब सामाजिक कोन मंचपर अबैत छथि। अन्तिम सरकारी पोथी-सम्मान समारोहक समानान्तर अधूर मरम्मतिक ध्वनि कृतिक असाधारण नाटकीय प्रतिवाद अछि। किछु संवादमे विचारक पुनरुक्ति, लम्बा नीति-विवेचन आ षड्यन्त्रक अत्यधिक प्रत्यक्ष कथन मञ्चनक गतिक बाधा बनि सकैत अछि। मुदा मूल रचनाक सर्वाधिक स्थायी बिम्ब—दरारि पड़ल पुल, दबायल कागज आ मेटल श्रमिकक नाम—इतिहासकें सत्ता सँ स्वतन्त्र रूपमे पढ़बाक आग्रह बनैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्यक दृश्य/भाग-पञ्जी

| नाटकक इकाई | पाठमे उपस्थित प्रसङ्ग                                        |
|------------|--------------------------------------------------------------|
| भाग १      | मरम्मतिक ध्वनि; दू लोकक प्रश्न; १९४७क दृश्य; दू बालकक लक्ष्य |
| भाग २      | ठिकेदारक बयान; दीक्षान्त; अभियन्ता आ मित्रक विरोध            |

|       |                                                                   |
|-------|-------------------------------------------------------------------|
| भाग ३ | गाम, परिवार, स्थानीय श्रम आ छोट पुलक प्रयास                       |
| भाग ४ | मुख्यमंत्री आ मुख्य अभियन्ता; श्रमिक-दुर्घटना; दबायल संचिका; धमकी |
| भाग ५ | रोलरक कथित दुर्घटना; शोक; भदोहीक मजदूर; आधिकारिक पोथी लोकार्पण    |

प्रथम चारि नाटकक तुलनात्मक आलोचनात्मक सूत्र

‘अपाला आत्रेयी’ व्यक्ति-गरिमाक प्रश्न उठबैत अछि; ‘भऽ जाएब छू’ प्रकृतिक परस्पर निर्भरता देखबैत अछि; ‘दानवीर दधीची’ ज्ञानकें सत्ताक एकाधिकारसँ मुक्त करबाक प्रयत्न करैत अछि; ‘गंगा ब्रिज’ तकनीकी निर्माणक सचाईकें प्रशासनिक प्रचार सँ अलग करैत अछि। पहिल आ तेसर नाटकमै विद्या आ योग्यता जनहितक आधार अछि; दोसर आ चारिम नाटकमै जीवन-जगतक भौतिक क्षति सार्वजनिक नैतिक निर्णयक कसौटी अछि। ‘अपाला’क वैयक्तिक ‘दृष्टि’क रोग आ ‘गंगा ब्रिज’क संस्थागत ‘फाइल’क विकृति अलग-अलग सामाजिक रूपमे सत्यक अवमूल्यन अछि। तथापि मिथकीय, पर्यावरण-शिक्षात्मक आ आधुनिक राजनीतिक तीन प्रकारक कथनकें इतिहासक एकहि प्रमाण-श्रेणीमे राखब उचित नहि। ई विविधता रंग-संगमक नाट्य-परिसरक वैचारिक सम्भावना देखबैत अछि।

रंग-संगम • खण्ड १ • पाँचम आ छठम नाट्य-युग्म

द्विभाषिक मूल पाठक विस्तृत आलोचनात्मक अध्ययन

मूल ग्रन्थक पाठ : पृष्ठ १८३—२४९। मूल नाटक आ अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर दुनू देखल गेल अछि।

## नाट्य-युग्म ५ : जलोदीप

कृति-पहिचान, पाठसीमा आ विचारक केन्द्र

रंग-संगमक पाँचम नाटक 'जलोदीप' मूल संस्करणक पृष्ठ १८३ सँ आरम्भ होइत अछि; लेखकक अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर 'JALODEEP: THE WATER-LAMP' पृष्ठ २०६ सँ आ अगिला नाटक पृष्ठ २२९ सँ। 'बाढ़ि-सुरक्षा आ जल-निकासीक सामाजिक बाल-नाटक' उपशीर्षक रचनाक प्राथमिक प्रयोजन बतबैत अछि। पाँच अंक, प्रत्येकमे दू दृश्य, आ एक पूर्वदृश्यक संरचनामे रचना संकटसँ ज्ञान धरि, ज्ञानसँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व धरि बढ़ैत अछि। एहिठाम बालपात्र केवल संकटमे फँसल प्राणी नहि, निर्णयक प्रक्रिया बदलनिहार सक्रिय व्याख्याकार अछि। नाटकक नाटकीय उपलब्धि ओकर नीति-वचन नहि, बल्कि बाढ़ि-बाँचल चारिम बच्चाक निजी शोककें सामूहिक मानचित्र बनबैत देखेबामे अछि।

पूर्वदृश्य : अधूर वाक्य आ ध्वनिक स्मृति

पूर्वदृश्य चारूकात पसरल पानि, डूबैत लोक आ सहायताक पुकारसँ आरम्भ होइत अछि। बचि निकलल बच्चा अपन कुशलता कहि देबाक बाद जे वाक्य पूरा नहि कऽ पबैत अछि, ओकर अन्तरालमे परिवारक क्षतिक आशङ्का पैघ भऽ उठैत अछि। एकाएक अन्हार आ केवल पानिक आवाज कथा सँ पहिने अनुभवक परत बनबैत अछि। एहि बिन्दुपर दर्शककें तथ्यक सम्पूर्ण सूची नहि भेटैत; आघातक कारण स्वर अवरुद्ध होइत अछि। ई मौन नाटकक बादक लोकसभा, ठेकेदारक बचाव आ अभियन्ताक विवरण सँ पृथक् सत्य-वहनक रूप अछि। नाटक बाढ़िक समाचार नहि पढ़बैत, पहले अज्ञात हानिक अनुभूति उत्पन्न करैत अछि।

पहिल अंक : अफवाह, उद्धार आ चौकीपर शोक

'बाढ़िक अन्हार'मे पहिल लोक बाइस फीट पानिक हल्ला करैत अछि; दोसर लोक ओकर परिमाणपर सन्देह राखैत अछि; बाँध काटबाक बात सेहो 'सुनै छी'क रूपमे अबैत अछि। नाटकीय स्तरपर ई अन्तर महत्वपूर्ण अछि : सुनल बात, देखल हिलकोर

आ प्रमाणित जलस्तर समान वस्तु नहि। एक व्यक्ति हल्लाकें चुनौती दैत अछि, मुदा तीनूकें तत्काल नौका, रस्सी, लालटेन आ सूखल अन्नक आवश्यकता पर सहमति अछि। आपदा-समयमे जानकारीक पूर्णता आ जीवनरक्षक प्राथमिकताक बीचक सम्बन्ध एहि दृश्यसँ खुलैत अछि। दोसर दृश्य मे चौकीपर बैसल तीन बच्चा खेलक बात करैत अछि, मुदा चारिम अपन घरक दीवार बचल रहितो परिवारक हँसी पानिमे बहि गेल कहैत अछि। एहि कथनसँ नाटक भौतिक घर आ मनुष्यक जीवित घरक अर्थ अलग करैत अछि।

दुखी बच्चाक पहाड़ : भूगोलक पुनर्नामकरण

चारिम बच्चा कहैत अछि जे एहि इलाकामे पहाड़ नहि रहितो बाँध आ ऊँच राजमार्ग गामक माथपर दीवार जकाँ ठाढ़ अछि। बच्चाक ई पुनर्नामकरण तकनीकी संरचनाकें आञ्चलिक जीवनपर पड़ल प्रभावसँ मापैत अछि। सड़क जोड़बाक साधन मानल जाइत अछि, मुदा निकास बन्द कएलाक अवस्था मे ओ गामकें काटि सकैत अछि। ई विरोध विकास-विरोध नहि; एकपक्षीय विकासक आलोचना अछि। नदीक प्राकृतिक प्रवाह आ मानव निर्मित ऊँच संरचनाक बीच जे घर्षण नाटक देखबैत अछि, ओहि लेल बालकक सहज उपमा विशेषज्ञक प्रारम्भिक प्रश्रवली बनि जाइत अछि। तथापि पहाड़क उपमा काव्यात्मक अछि, जलवैज्ञानिक मापनक विकल्प नहि।

दोसर अंक : कटोरी—लोटाक नक्शा आ दृश्य-आधारित ज्ञान

‘पहाड़क खेल’क मुख्य क्रियामे चारु बच्चा चौकीपर कटोरी, लोटा, भीजल कपड़ा, माटिक ढेला, काठी आ उलटल थारीसँ नदी, गाम, खेत, बाँध आ सड़कक नमूना बनबैत अछि। लोटाक पानि सड़कक पछिला दिस थमि जाएब दर्शककें जलनिकास अवरोधक सम्भावना आँखिसँ देखबैत अछि। एतय खेल प्रत्यक्ष-परीक्षणक नाटक बनैत अछि, कारण वस्तुसभ अपन साधारण घरेलू उपयोग छोड़ि सामूहिक ज्ञानक उपकरण बनैत अछि। बच्चा पुल आ पुलिया, गाद आ प्लास्टिक, नालाक मुँह आ गलत स्थानक भेद पर प्रश्न करैत अछि। नमूनाक व्याख्या ई नहि जे हर सड़क जरूर बाढ़ि बढ़बैत अछि; मूल कहैत अछि जे अपर्याप्त अथवा अवरुद्ध निकास सँ सड़क बाँधक प्रभाव उत्पन्न करि सकैत अछि। एहि शर्तक संरक्षण वैज्ञानिक निष्ठा लेल आवश्यक अछि।

गामक साक्षी आ प्रशासनक दावा

दोसर अंकक दोसर दृश्यमे लोक पहिने बच्चाक खेल देखि हँसैत छथि, फेर अपन खेतमे सड़कक कारण पानि अटकल रहबाक अनुभव जोड़ैत छथि। पंचायतमे 'योजना पास अछि' कहल गेल छल, मुदा नालाक मुँह गादसँ बन्द रहबाक कथन उक्त सरकारी दावाक व्यवहारिक परीक्षण माँगैत अछि। नाटक ई प्रश्न करैत अछि जे कागजपर जलनिकासक नाम भेटलासँ जमीनपर ओकर कार्यक्षमता सिद्ध भऽ जाइत अछि कि नहि। हेलिकॉप्टर अथवा मोटरबोटक क्षणिक ध्वनि आ तकर बादक शून्य दर्शकक पहुँच, दूरी आ राहतक अनिश्चितताक बोध दैत अछि। ई स्थानपर लोकानुभवकें स्वतः त्रुटिहीन विज्ञान मानल नहि गेल अछि; ओकरा प्रत्यक्ष स्थलपरीक्षणक जरूरी आधार मानल गेल अछि।

तेसर अंक : राहत-सूची बनाम जीवित मनुष्य

'लोकक खेल'मे मुखिया राहतक सूची आ क्षतिक नाम लिखबाक घोषणा करैत छथि, मुदा भीड़ तुरन्त नाव, चूड़ा, औषधि आ टूटल बाँधक कारण पुछैत अछि। एहि प्रतिवादमे प्रशासनक अभिलेख-निर्माण आ आपदाग्रस्त लोकक तत्क्षण आवश्यकता आमनेसामने अछि। ठेकेदार अतिवृष्टिक हवाला दैत अछि, दोसर लोक पाँच बरखमे तीन बेर आँगन डूबलाक अनुभव कहैत अछि, तेसर लोक कागजपर गेल बालू-बोराक प्रश्न उठबैत अछि। ठेकेदारक 'प्रमाण चाही' आग्रह सिद्धान्ततः उचित अछि; मुदा प्रमाणकें केवल दफ्तरक फाइलमे सीमित करब स्वयं पक्षपातपूर्ण होयत। नाटकीय समस्या एहि द्वैधमे अछि : प्राकृतिक वर्षाक प्रमाण आ मरम्मतिक भ्रष्टाचारक आरोप अलग-अलग जाँच माँगैत अछि, दुनूकें एकहि कारणमे साटल नहि जा सकैत।

अभियन्ताक हस्तक्षेप : एक कारणक बदला कारणसमूह

अभियन्ता नदीक पुरान बाट बन्द भेल, पोखरि भरल गेल, नीचला जमीनपर बसावट भेल, सड़क ऊँच उठल आ ओहि नीचाँ निकास छोट छोड़ल गेल—एहि घटनाक परस्पर सम्बन्ध देखबैत छथि। ई नाटकक विश्लेषणात्मक मोड़ अछि। संकटकें केवल ठेकेदारक दोष वा केवल नदीक उग्रता कहबाक बदला भूगोल, निर्माण, रखरखाव आ

बसावट एकहि प्रणालीमे विचारल जाइत अछि। अभियन्ता बाँध तोड़बाक अनियन्त्रित प्रतिक्रिया नहि, स्थलानुकूल संरक्षण, नदीक फैलावक जगह, पर्याप्त कलभर्त, सफाई आ लोकनिगरानी पर जोर दैत छथि। एकर भीतर आधुनिक सामाजिक अभियन्त्रणक मूल्य अछि—प्रस्तावित समाधान गामक स्मृति आ विशेषज्ञक अध्ययन दुनूक सम्मिलनसँ विकसित हो। मुदा वास्तविक निर्माणक आकार आ निकास-क्षमता स्थानीय जलस्तर, भू-आकृति, वर्षामापन आ अभियांत्रिक जाँच बिना निर्धारित नहि होइत।

चारिम अंक : दीप, मरेलक स्मृति आ आठ सार्वजनिक निर्णय

‘जलोदीप’ शीर्षकक वस्तु चारिम अंकमे दृष्टिगोचर होइत अछि। एक बच्चाक दीप घरक लेल, दोसरक छतपर अटकल बूढ़क लेल, तेसरक पानिमे डूबल खेतक लेल आ चारिमक दीप अपन दिवंगत बाबूक स्मृतिक लेल अछि। एहि क्रममे दीप पूजा-मात्र नहि, हानिक पृथक्-पृथक् अभिलेख बनैत अछि। आरम्भमे पानि मनुष्यक आवाज दबबैत छल; आब छोट-छोट प्रकाशक सामूहिकता लोकक स्वर फेर संगठित करैत अछि। तकर बाद राहत, जल-पथक नक्शा, बाँध-सड़क निरीक्षण, मरम्मतक खुलल हिसाब, बच्चाक आपदा-शिक्षा, कूड़ा-नियन्त्रण, वर्षा-पूर्व सफाई आ पानिक बाट छोड़ि विकास—आठ काजक क्रम उभरैत अछि। संवेदना सँ प्रशासनिक जवाबदेही धरि ई रूपान्तरण रचनाक नैतिक शिखर अछि। जलमे जलैत दीपक मंचनकें वास्तविक बाढ़िमे जोखिमपूर्ण अभ्यासक सलाह नहि बुझल जाए; सुरक्षित सांकेतिक प्रकाश पर्याप्त अछि।

पाँचम अंक : लोकस्मृति, फोटो-अभिलेख आ नव गामक प्रारूप

‘नबका बिहान’मे सामूहिक टोली रस्सी, औषधि आ भोजनक काज बाँटि लैत अछि। अभियन्ता वृद्ध लोकसँ नदीक पुरान बाट पूछि नक्शा बनय चाहैत छथि; एक लोक मोबाइलसँ तिथि सहित फोटो राखबाक बात करैत अछि। ई दृश्य विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिक महत्वपूर्ण उदाहरण अछि : सरकारी फाइलक संग लोकस्मृति, प्रत्यक्ष चित्र, निर्माणस्थलक विवरण आ सार्वजनिक चर्चा सेहो अभिलेख बनैत अछि। दोसर दृश्य मे बच्चा अपन पहिनुक नक्शा पुनः बनबैत छथि; एहि बेर नाली, निकास-द्वार, चौड़ा कलभर्त, पोखरिक जगह आ ऊँच आश्रय चिन्हल अछि। कथाक दृश्य-रचना आरम्भक

संकटकें जसक तस नहि दोहरबैत, बल्कि ओही वस्तु-क्रीड़ाकें परिवर्तित निर्णायक प्रतिरूप बनबैत अछि। ठेकेदारक 'देखल जाएत'क बदला 'सुधारल जाएत'क आग्रह कारवाई आ आश्वासनक अन्तर रेखाङ्कित करैत अछि।

रस—ध्वनि—प्रतीक : भयक आवाजसँ सामुदायिक लय धरि

पूर्वदृश्यक जलगर्जन, पहिल अंकक हाहाकार, बाढ़िक बादक निस्तब्धता, चौकियाक थोपड़ी-खेल, लोटाक पानि आ अन्तक मद्धिम गीत नाटकक ध्वनि-मानचित्र बनबैत अछि। पहिल शोक करुण रसक केन्द्र अछि; तीसरा अंकक प्रश्नोत्तरमे रौद्र आ वीर भावक मिश्रण अछि; पुनर्निर्मित नक्शाक क्षणमे आशा आ सक्रिय शान्ति प्रमुख अछि। दीपक पुनरावृत्ति अमूर्त नीतिकें देखबायोग्य बिम्ब बनबैत अछि। शीर्षकक प्रकाश पानिक विरुद्ध विजयक प्रतिमा नहि, पानि संग विवेकपूर्ण सह-अस्तित्वक स्मरण अछि। तथापि अन्तक सामूहिक प्रतिज्ञा सूची-जकाँ अत्यधिक बढ़ि सकैत अछि; ओकर प्रत्येक बिन्दुकें छोट अभिनय, नक्शा अथवा लोकसंवादद्वारा रूपान्तरित कएल जाए तँ नाटक उपदेशक बदला क्रियाक लय बनौने रहत।

प्रमाणमीमांसा : निरीक्षण, आरोप आ जलविज्ञानक सीमा

नाटक बाइस फीट पानिक अफवाहक तुरन्त जाँच नहि करैत अछि; बाँध काटबाक आरोप सेहो पात्रक सुनल बात अछि। 'कागजपर नाव किनल गेल' आ 'मरम्मतक बोरा जमीनपर नहि पहुँचल' सामाजिक आरोपक रूपमे आएल अछि; ई सभ कथनक बाह्य प्रशासनिक प्रामाणिकता अलग स्रोत बिना स्थापित नहि। बच्चाक नमूनाक क्षमता कारण-सम्बन्ध देखेबामे अछि, बाढ़िक वास्तविक कुल कारणक अन्तिम गणनामे नहि। नाट्य-विवेक एतहि ठहरैत अछि जे आपदाक लोकानुभवकें प्रश्न करबाक अधिकार आ विशेषज्ञक मापनक आवश्यकता परस्पर पूरक अछि। नदी, बान्ह आ सड़कक उदाहरण मिथिलाक स्थानिक भूगोलसँ संवाद करैत अछि, मुदा कोनो विशिष्ट बाढ़िक निर्णायक प्राविधिक अनुसन्धानक पर्याय नहि।

मूल—अनुवाद तुलनात्मक अध्ययन

अंग्रेजी 'JALODEEP: THE WATER-LAMP'मे मूलक पाँच अंक, दस दृश्य आ पूर्वदृश्यक क्रम सुरक्षित अछि। पहिल मूल 'बाइस फीट'क हल्ला अंग्रेजीमे 'twenty-two feet' होइत अछि; 'नाव तऽ परसाल कागजपर किनल गेल'क अर्थ अंग्रेजी पाठमे 'a boat was bought on paper' रूपेँ बचल अछि। चौकीपर घरक दीवार बाँचलाक बावजूद हँसी बहि जेबाक बिम्ब, कटोरी-लोटाक नक्शा, सड़कक दीवार-रूपक, अभियन्ताक कारणसमूह आ अन्तिम दीपक सामूहिकता दुनु पाठमे उपस्थित अछि। मूलक बोली 'डूमल', 'हिलकोर', 'थोपड़ी' सन ध्वन्यात्मक स्थानीय रूप अंग्रेजीमे अर्थक विस्तारसँ पहुँचैत अछि, मुदा तकर भौगोलिक उच्चारण-लय पूर्णरूपेँ स्थानान्तरित नहि होइत। 'Water is not the enemy; a blocked path is the enemy' मूलक 'पानि शत्रु नहि, रोकेल बाट शत्रु अछि'क स्पष्ट रूपान्तर अछि। विशेष आलोचनात्मक सावधानी ई जे अंग्रेजी कथनकेँ वैज्ञानिक सार्वभौमिक विधानक रूपमे नहि पढ़ल जाए; मूलमे सेहो ई कृतिक नैतिक सूत्र अछि।

समग्र निर्णय आ बालनाटकक शिल्पगत सीमा

'जलोदीप' बालपात्रक दुःखकेँ सार्वजनिक ज्ञानमे रूपान्तरित करबाक एक सुसंगठित नाट्य-प्रयोग अछि। घरेलू बर्तनक नक्शा, बाँधक पहाड़-रूपक, उद्धार—अभिलेखक विरोध आ स्मृति-दीपक क्रम एकहि विषयकेँ भिन्न रंगभाषामे खोलैत अछि। बालपात्र सामुदायिक निर्णयक आरम्भकर्ता बनैत छथि; एहि कारण आयु-अनुकूलता दया पाबयबामे नहि, प्रश्न करबाक सामर्थ्यमे अछि। सीमामे अभियन्ताक लम्बा स्पष्टीकरण, ठेकेदारक सीमित अन्तर्द्वन्द्व, अन्तिम आठ सूत्रक घनत्व आ बाढ़िक जटिल प्रक्रियाक नैतिक सरलीकरण गिनल जा सकैत अछि। तइयो कृतिक बड़ उपलब्धि ई अछि जे बाढ़िक भयक दृश्य केवल बचावक शोक बनि नहि रहैत; नब सामाजिक स्मृति, लोक-परीक्षण आ जिम्मेवार निर्माणक नाट्यरूप बनैत अछि।

मूल पाठक दृश्य-साक्ष्य सारिणी

|               |                         |
|---------------|-------------------------|
| मूल पाठक इकाई | साक्ष्य आ नाटकीय क्रिया |
|---------------|-------------------------|

|                   |                                                      |
|-------------------|------------------------------------------------------|
| पूर्वदृश्य        | बाढ़िमे बच्चाक अधूर स्वर; पानिक अकेला आवाज           |
| अंक १ • दृश्य १-२ | पानिक हल्ला, उद्धारक सामान, चारिम बच्चाक शोक         |
| अंक २ • दृश्य १-२ | बर्तनसँ बनल नक्शा; ऊँच सड़क आ बन्द निकास; गामक अनुभव |
| अंक ३ • दृश्य १-२ | राहत-सूची, ठेकेदारक प्रतिवाद, अभियन्ताक कारणसमूह     |
| अंक ४ • दृश्य १-२ | स्मृति-दीप, भीड़क आठ बिन्दुक सार्वजनिक कार्यक्रम     |
| अंक ५ • दृश्य १-२ | बचाव टोली, तिथि सहित फोटो, पुनर्निर्मित जल-पथक नक्शा |

नाट्य-युग्म ६ : कमलाक भगता

पाठ-पहिचान, कथानकक आकार आ मूल स्रोतक सीमा

‘कमलाक भगता’ रंग-संगम खण्ड १क छठम मैथिली नाटक अछि, जकर मूल पृष्ठ २२९ सँ आ अंग्रेजी ‘A Devotee of the Kamala’ पृष्ठ २४० सँ प्रारम्भ होइत अछि। सातम नाटक पृष्ठ २५० सँ शुरू होइत अछि। रचनाकार एकरा ‘अन्धानुकरणपर एकटा चोटगर हास्य-शिक्षाप्रद बाल-नाटक’ कहैत छथि। सूत्रधारक प्रारम्भिक कथनमे ‘संस्कृत साहित्यक प्रसिद्ध कथा’ पर आधारित हेबाक सूचना अछि, मुदा मूल लेखक, संस्कृत ग्रन्थ, पाठ-संस्करण वा श्लोक संख्या नाटकमे निर्दिष्ट नहि अछि; तँ एकर निश्चित संस्कृत स्रोत कल्पनासँ स्थापित नहि करब। दू दृश्यक अत्यन्त संक्षिप्त रचनामे एक भिखमंगाक निजी धन-रक्षा आ सार्वजनिक धार्मिक अनुकरणक टकराव अन्तिम हास्य-दुर्घटना उत्पन्न करैत अछि।

प्रथम दृश्य : भिक्षा, श्रमक मूल्य आ यात्राक इच्छा

पहिल दृश्यमे भिखमंगाक भिक्षा-स्वर धीरे-धीरे लग अबैत अछि। बूढ़ी स्त्री पुरान गरम कपड़ा आ अन्न दैत छथि; एक नब कमौआ अपन परिश्रमसँ बचल पाइ दैत अछि आ सावधानीसँ गनबाक सलाह दैत अछि। एहि दू छोट संवादमे भिक्षु केवल हास्यक पात्र नहि; हुनकर जीवन अनेक लोकक लघु सहयोगसँ बनल अछि। भिखमंगाक चुकड़ीमे जमा धन बहुवर्षीय बचत अछि, आ ओकर उपयोग जनकपुर जा कऽ कमलाक भगता बनबाक स्वप्नसँ जुड़ल अछि। पाठ विशेष रूपसँ कहैत अछि जे गनैत समय ओकर आँखिमे ‘लालच नहि, सपना’ चमकैत अछि। ताहि कारण पाछाँक धनहानिकेँ लालचक दण्ड मानि हँसब कथा-पाठक विरुद्ध होयत। विडम्बनाक नैतिक केन्द्र असावधान सामाजिक अनुकरण अछि, गरीब व्यक्तिक आकांक्षाक उपहास नहि।

दोसर दृश्य : नदी, भय आ निजी संकेतक निर्माण

भोरक कमला-तट, बालुपर ओस आ नदीकेँ मायक आँचरजकाँ देखबाक बिम्ब नाटककेँ मिथिलाक स्थानिक विश्वास-जगतमे राखैत अछि। भिखमंगा चुकड़ी कातमे

राखि स्नान करबाक सोचैत अछि, मुदा चोरीक आशङ्कासँ धन बालुमे गाड़ि दैत अछि। तकर बाद ओकरा डर लगैत अछि जे नुकेल वस्तु स्वयं नहि भेटत; एहि अनिश्चितताकें दूर करबाक लेल ओ बालुक शिवलिंग-जकाँ निशान बनबैत अछि। ई क्रिया निजी स्मृति-पद्धति अछि, सार्वजनिक धार्मिक विधान नहि। दर्शक भिखमंगाक कारण जनैत अछि, मुदा प्रवेश करनिहार दोसर पात्र नहि जनैत; एहि ज्ञान-असमानतासँ पूरा हास्य उत्पन्न होइत अछि। एकर विशेषता अछि जे विस्फोटक दुर्घटना कोनो बाहरी खलनायक नहि करैत, बल्कि अर्थहीन सामाजिक व्याख्या धीरे-धीरे करैत अछि।

निशान सँ विधान : अर्थ-परिवर्तनक निर्णायक क्षण

पहिल स्त्री-स्नानार्थी बालुक चिन्ह देखि मानैत छथि जे स्नानसँ पहिने शिवलिंग बनायब एहि स्थानक नियम अछि। पुरुष-स्नानार्थी कहैत छथि जे गंगा कात एहना नहि होइत, मुदा 'जे पहिने आएल होएत, किछु बुझि कए ने बनौने होएत'। एहि वाक्यमे नाटकक तार्किक त्रुटि स्पष्ट अछि : अज्ञात व्यक्तिक क्रियासँ ओकर कारण वा परम्पराक प्रामाणिकता अनुमानित कएल जाइत अछि। स्त्री स्वयं 'जे न बुझी, से पूछब' कहैत छथि, मुदा प्रश्नक उत्तर पाबयबासँ पहिने पुण्यक नामपर अनुकरण करैत छथि। कथन आ आचरणक एहि अन्तरसँ हास्यक धार तीक्ष्ण होइत अछि। आगाँ 'एतए एहेन विधान छै', 'हमरासँ पहिने ई सभ करैत छल' आ 'कियो पाछाँ नहि रहू' सन वाक्य कारणक रिक्त स्थान भरैत अछि, मुदा एकोटा ठोस प्रमाण प्रस्तुत नहि करैत।

समूह-संक्रमण : धार्मिक चिह्नक बहुलता आ निजी वस्तुक लोप

एक-एक कऽ लोक अपन पएरक चारूकात बालु चढ़ा कऽ शिवलिंग बनबैत अछि। मंच शीघ्र चिन्ह-चिन्ह भरि जाइत अछि, 'हर-हर महादेव'क ध्वनि बढ़ैत अछि। अज्ञात निजी पहचानकें सामूहिक धार्मिक स्वर जतेक बल दैत अछि, मूल चिन्हक उपयोगिता ओतेक घटैत अछि। भिखमंगा स्नानक बाद लौटैत अछि तँ मूल चिह्न आ अनुकरणक बीच भेद नहि कऽ पबैत अछि; एक-दू चिन्ह हटाबितो चुकड़ी नहि भेटैत अछि। एहि दृश्यमे भरल मंच आ रिक्त चुकड़ीक एकटा असाधारण दृश्यात्मक व्यतिरेक अछि। जाहि वस्तुकें चिह्न सुरक्षित करबाक लेल बनाओल गेल छल, ओही चिह्नक अनियन्त्रित प्रतिलिपि ओकर

खोज असम्भव बना दैत अछि। पात्रक वास्तविक आर्थिक क्षति दर्शकक हँसीमे एकटा करुण छाया जोड़ैत अछि।

नव्य न्यायपरक अर्थविचार : देखल क्रिया सँ नजानल हेतु धरि

पहिल स्नानार्थी जे देखैत छथि, से बालुक एक धार्मिक रूपजकाँ बनल आकार अछि। जे नहि देखैत छथि, से भिखमंगाक बालुमे गाड़ल चुकड़ी, चोरीक भय आ अपन चिह्न बनायबाक निजी प्रयोजन अछि। बाह्य आकारक प्रत्यक्ष साक्ष्यसँ 'एतय स्नानसँ पहिने ई विधान होइत अछि' निष्कर्ष निकालबमे हेत्वाभासक जोखिम अछि; अनुमानक जरूरी सम्बन्ध सिद्ध नहि भेल। तकर बाद दोसर, तेसर आ भीड़ केवल पहिलक अनुकरण देखैत अछि, आ ओकरा पुनः अधिकारक प्रमाण मानैत अछि। प्रत्येक चरणमे प्रमाण बढ़ैत नहि, अप्रमाणित व्याख्याक प्रतिध्वनि बढ़ैत अछि। एहि कारण ई बालनाटक नव्य न्यायसंगत एक सुगम उदाहरण देत अछि : 'कियो करैत अछि' सँ 'किएक करैत अछि' प्रमाणित नहि होइत; अधिक लोक द्वारा पुनरावृत्तिसँ मूल कारण स्वतः सत्य नहि बनैत।

लोकक धार्मिक अनुभूति बनाम विचारहीन अनुकरण

'कमलाक भगता'क आलोचनाकें सम्पूर्ण भक्ति-परम्पराक निषेध नहि मानब। भिखमंगाक यात्राक उद्देश्य धार्मिक अछि; नदीक भोर, गीत आ कमला माइ प्रति सम्बोधन श्रद्धाक रूपमे प्रस्तुत अछि। नाटकीय दोष भक्ति नहि, भक्ति नामपर कारण बिना नियम गढ़ब अछि। स्त्री स्नानार्थीक मूल भावना पुण्य अछि, पुरुषक भावना सहमत होयब, आ भिखमंगाक उद्देश्य अपन बचत बचेनाइ। एकहि धार्मिक चिह्नक तीन प्रकारक अभिप्राय एक जगह मिललाक कारण सामाजिक उलझन उपजैत अछि। सूत्रधार अन्तमे भक्ति संग बुद्धिक आवश्यकता स्पष्ट करैत छथि; ई विधान श्रद्धाक अन्तर्बाह्य विवेक माँगैत अछि, ओकर सरलीकृत उपहास नहि।

सूत्रधार : आरम्भसँ अन्त धरि निर्देशित पाठकीय ग्रहण

सूत्रधार शुरू मे दर्शककें कहि दैत छथि जे बिना बुझने अनुकरण नहि करबाक अछि। अतः कथानकक अन्तिम बोध कथाविकाससँ स्वतः रहस्यरूपेँ उत्पन्न नहि होइत; पहिनेसँ सूचित विचारक दृश्यात्मक प्रमाण बनैत अछि। अन्तमे सूत्रधार निजी चिह्न

सामूहिक परम्परा बनि गेल कहैत कथा स्पष्ट करैत छथि; स्त्री, पुरुष आ भिखमंगा अपन-अपन गलत धारणा स्वीकार करैत छथि। बाल-दर्शक लेल ई स्पष्टता उपयोगी अछि, मुदा हास्यक प्राकृतिक असमंजसकँ अन्तिम व्याख्या किछु सीमित करैत अछि। विशेषतः भिखमंगाक धन नहियें भेटल कि बादमे भेटि गेल—एहि प्रश्नपर नाटक अन्तिम समाधान नहि दैत अछि। ई अपूर्णता आर्थिक हानिक वास्तविकता खुलल रखैत अछि; ओकरा अनावश्यक सुखान्त गढ़ि बदलनाइ समीक्षा नहि करब।

मञ्च-निर्देश, ध्वनि आ दृश्यात्मक हास्य

भिक्षाक पुकार, सिक्काक खनखनाहटि, भोरक चिड़ै, कमलाक धार, बालु खोनबाक आवाज, समूहक जयघोष आ अन्तिम चुप्पी—एहि क्रममे नाटकक ध्वनि पहले व्यक्तिगत, तकर बाद सार्वजनिक आ अन्ततः आत्मालोचनात्मक होइत अछि। पएर चारूकात बालु चढ़ेनाइ बालक-कलाकारसँ सहज अभिनय बनि सकैत अछि; जतेक प्रतिलिपि बढ़त, ओतेक दार्शनिक प्रश्न दृश्यात्मक बनत। मूल चिन्ह आ ओकर प्रतिकृतिसभक बीच आकारक सादृश्य नाटकक मुख्य मंचोपकरण अछि। यदि दर्शक शुरू सँ चिह्नक निर्माण स्पष्ट नहि देखत, तँ अन्तक विडम्बना कमजोर पड़ि सकैत अछि। एक कलाकारक आर्थिक शोकक समय समूहक अचानक मौन होयब जयघोषक उलट-ध्वनि अछि; एहि मोड़मे हास्य सँ करुणाक सूक्ष्म संक्रमण सम्भव अछि।

मिथिलाक स्थानिक भूगोल आ स्रोत-समीक्षा

कमला नदी, जनकपुरक यात्रा, स्नानार्थीक भिन्न नदीक्षेत्रसँ आगमन आ स्थानिक जनभाषा नाटकक भूगोल बनबैत अछि। गंगा कातक पुरुष जे भिन्न परम्परा बतबैत छथि, ओ एहि 'नब' नियमक अनिश्चितता केन्द्रीय करैत अछि। एकर आधारपर वास्तविक कमला-क्षेत्रक कोनो स्वीकृत धार्मिक अनुष्ठानक उत्पत्ति अथवा ऐतिहासिक परिवर्तनक निश्चित दावा नहि कएल जा सकैत। शीर्षक आ भूगोलक नाटकीय कार्य संस्कृत मूलक अनिश्चित कथाक मिथिलाक नदीकिनारपर सर्जनात्मक पुनर्स्थापन अछि। मूल पाठमे निर्दिष्ट संस्कृत ग्रन्थक नाम नहि; अतः मूल कथा आ मिथिला-रूपान्तरक शाब्दिक समता, ऐतिहासिक पुरानपन वा मौलिक परिवर्तनक मात्राक फैसला तुलनात्मक प्राथमिक पाठ बिना सम्भव नहि।

अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक तुलनात्मक विवेचन

अंग्रेजी शीर्षक 'A Devotee of the Kamala' मूल 'कमलाक भगता'क तीर्थ-भाव बचबैत अछि; 'Kamala' नामकें स्थानिक अर्थसहित अपरिवर्तित रखब स्थानीय नदी—आस्थाक संयुक्त उपस्थिति कायम करैत अछि। 'The Beggar' मूल भिखमंगाक चरित्रक सामाजिक परिस्थिति स्पष्ट करैत अछि; बूढ़ीक कपड़ा—अन्नदान, युवकक छोट सिक्कामे पैघ श्रमक बोध, चुकड़ी गाड़ब, एकल चिन्ह बनेब, अनुकरणक श्रृंखला आ अन्तक अनुत्तरित धनखोज दुनू पाठमे सुरक्षित अछि। अंग्रेजीमे 'Shiva lingam', 'Bhola Baba', 'Har Har Mahadev' सन सांस्कृतिक चिह्न पठनीय रहैत अछि, मुदा 'चुकड़ी', 'भगता' आ मौखिक मैथिली व्यङ्ग्यक ध्वन्यात्मक घनत्वक समग्र समानता सम्भव नहि। अंग्रेजी अन्त 'Ask. Understand. Then act' मूल 'पूछू, बुझू, फेर करू'क लघु रंगोपयोगी प्रतिरूप अछि। दुनू संस्करण आलोचनाक लक्ष्य बुद्धिविहीन अनुकरणकें बनबैत अछि, श्रद्धाक मानवीय गरिमाकें नहि।

अर्थ-समीक्षा : अनुकरणक सामाजिक शक्ति आ कथानकक सीमा

नाटक सामाजिक सहमतिमे कारणविहीन विश्वासक तेज प्रसारकें देखबैत अछि। मुदा केवल भीड़कें दोष देब पर्याप्त नहि : भिखमंगा अपन निजी संकेतपर एकमात्र भरोसा रखैत अछि, बिना दोसर संकेतक चुकड़ी नुकबैत अछि, आ अपन कार्यक सार्वजनीन गलत अर्थ निकलि सकबाक जोखिम नहि बुझैत अछि। ई मूल पात्रक निर्णयगत सीमा अछि, जकर विश्लेषण भीड़क नकलक आलोचनाकें अधिक जटिल बनबैत अछि। भीड़मे प्रश्न करनिहार प्रथम पुरुषक सन्देह प्रभावी बनयबासँ पहिने समाप्त होइत अछि; एहि लेल कथानक विरोधी तर्ककें विकसित बहसक अवसर कम दैत अछि। सूत्रधारक पूर्व-उपदेश आ अन्त-उपदेश, नाटकक दृश्य बीच तीव्र संक्रमण आ भिखमंगाक आर्थिक हानिक अनसुलझल स्थिति एकरा पूर्ण मनोवैज्ञानिक नाटकसँ बेसी दृष्टान्त-नाटक बनबैत अछि।

समेकित साहित्यिक निर्णय

'कमलाक भगता'क शिल्पगत सफलता न्यूनतम पात्र-संख्या, एक निजी चिह्न आ ओकर अनेक प्रतिलिपिक दृश्य-व्याकरणमे अछि। हास्यक कथ्य सस्ता धर्मोपहास नहि,

बाहरी रूपक नकलक कारण अर्थक गुम होयबाक आलोचना अछि। धार्मिक रूपक, भिखमंगाक गरिमापूर्ण बचत, सामुदायिक अनुकरणक तेज प्रसार आ अन्तिम सामूहिक मौन छोट नाटककें अर्थक अनेक तह दैत अछि। सीमामे पहिनेसँ कहल सीख, सरल द्विमुखी चरित्र-विकास आ कथानक समाप्तिक बाद धनक परिणामक अनिश्चितता अछि। एहि सीमासहित कृति बाल-दर्शककें प्रश्न करबाक अधिकार देत अछि—कियैक आ केहन प्रमाण पर?—आ एहि प्रश्नकें स्थानीय मिथिलाक नदीक दृश्य-भाषामे मंचित करैत अछि।

मूल पाठक दृश्य-साक्ष्य सारिणी

|                 |                                                               |
|-----------------|---------------------------------------------------------------|
| मूल पाठक इकाई   | साक्ष्य आ नाटकीय क्रिया                                       |
| सूत्रधार        | संस्कृतक अनिर्दिष्ट कथा पर आधारित बालनाटकक भूमिका             |
| दृश्य १         | बूढीक अन्न-कपड़ादान, युवकक कमाइ, चुकड़ीक बचत आ जनकपुरक स्वप्न |
| दृश्य २ • आरम्भ | कमला-तट, चुकड़ी बालुमे नुकेनाइ आ एक शिवलिंग-जकाँ चिह्न बनब    |
| दृश्य २ • मध्य  | प्रथम जोड़ीक अनुमान, लोकक अनुकरण, चिन्हसभक बहुलता             |
| दृश्य २ • समापन | भिखमंगाक चुकड़ी नहि भेटनाइ, भीड़क मौन, सूत्रधारक विवेचन       |

पहिल छओ नाटक : अन्तरनाटकीय तुलनात्मक सूत्र

पहिल चारि नाटकपर पूर्ववर्ती निष्कर्ष जकाँक तेकाँ सुरक्षित अछि। पाँचम 'जलोदीप' आ चारिम 'गंगा ब्रिज'मे अभियन्त्रण, सार्वजनिक कागज आ श्रमिक/लोकक अनुभव बीच साक्ष्य-संघर्ष अछि; मुदा 'गंगा ब्रिज' भ्रष्ट निर्माणक इतिहास-लेखनपर कठोर राजनीतिक प्रतिवाद करैत अछि, जखन 'जलोदीप' बालकक खेलद्वारा स्थानीय आपदा-योजनाक व्यावहारिक रूप बनबैत अछि। दोसर 'भऽ जाएब छू' आ पाँचम

‘जलोदीप’ दुनूमे बच्चाक सामूहिक भागीदारी अछि, मुदा पहिलमे पर्यावरणीय रूपान्तरणक कल्पना तथा दोसरमे जलनिकासक मॉडल प्रमुख अछि। ‘अपाला आत्रेयी’ ज्ञानाधिकारकें शरीरक कलङ्कसँ मुक्त करैत अछि, ‘दानवीर दधीची’ ज्ञानपर सत्ताक पहारकें प्रश्न करैत अछि, आ ‘कमलाक भगता’ बाह्य चिन्हकें बिना ओकर हेतु जनने धार्मिक प्रमाण मानबाक भ्रान्ति देखबैत अछि। एहि छओ नाटकमे ज्ञान—अज्ञानक भेद बदलैत रूपमे लौटैत अछि : देहपर समाजक आरोप, जड़ि काटबाक परिणाम, विद्यापर एकाधिकार, इतिहासक सरकारी पोथी, निकासक कागजी नक्शा आ निजी चिन्हक सामूहिक नकल। ई साम्यता साहित्यिक संरचनाक स्तरपर अछि; अलग-अलग ऐतिहासिक, मिथकीय आ वैज्ञानिक कथनक साक्ष्य-मूल्य एक-समान नहि।

रंग-संगम • खण्ड १ • सातम सँ नओम नाट्य-युग्म

मैथिली मूल आ अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक पाठाधारित विस्तृत साहित्यिक आलोचना  
प्रमाणित मूल संस्करण : मचण्ड (मैथिली पृष्ठ २५०; अंग्रेजी पृष्ठ २७१), संकर्षण  
(मैथिली पृष्ठ २८८; अंग्रेजी पृष्ठ ३३५), उल्कामुख (मैथिली पृष्ठ ३८०; अंग्रेजी पृष्ठ  
४४९)। पृष्ठाङ्क पुस्तकक छपल अनुक्रमानुसार अछि।

नाट्य-युग्म ७ : मचण्ड

चारि अङ्कक स्थापत्य आ केन्द्रीय प्रश्न

‘मचण्ड’ मूल मैथिली पाठक चारि अङ्क आ ‘MACHANDA’ अंग्रेजी रूपान्तरक चारि अङ्कमे न्याय, बेरोजगारी, नशीला पदार्थक तस्करी आ सशस्त्र उग्रवादक परस्पर सम्बन्धकेँ नाटकीय बनबैत अछि। ई नाटक केवल अपराधी आ पुलिसक प्रतिद्वन्द्विता नहि अछि। एकटा युवा मुतालिफक देह, ओकर भाषाक असमर्थता, अधिकारीक दया, अनुवादकक मध्यस्थता आ गुप्त सत्ताक ध्वनिसँ नैतिक निर्णय कठिन बनैत जाइत अछि। पहिल अङ्कक अदालतक निकट सँ शुरू भेल दृश्य अन्तिम अङ्कमे भोजनक खाली पैकेटपर ठहरैत अछि; एहि वस्तुक पुनरागमन नाटकक संरचनात्मक केन्द्र अछि।

पहिल अङ्क : भाषा जखन न्यायकेँ रोकैत अछि

मुतालिफ तमिल बाजैत अछि, मुदा अदालत आ जेलक बहुभाषिक कोलाहलमे ओकर अपन स्वर लगभग अदृश्य अछि। ओ इशारा करैत अछि आ भाषा-अनुवादक ओकर प्रश्न बाजैत अछि। पहिल प्रश्न कोनो विधिक बचाव नहि, भोजनक पैकेट देनिहारक परिचय अछि। अएहि बातसँ नाटक व्यक्तिक पहिचान आ अधिकारक लोप देखबैत अछि : अभियोगक नाम सार्वजनिक अछि, मुदा अभियुक्तक बोलि सुनबाक व्यवस्था कमजोर अछि। खुफिया अधिकारीक ई बात जे भाषा नहि बुझनिहार न्याय केवल प्रक्रिया रहि सकैत अछि, नाटकक अवधारणा मात्र नहि, आरम्भिक नाटकीय परिस्थिति सँ पुष्ट प्रश्न अछि।

भोजनक पैकेट : प्रत्यक्ष संवेदना आ नैतिक अनुमान

मुतालिफ भोजन देनिहार अधिकारी दिस तकैत अछि, प्रणाम करैत अछि आ कानय लगैत अछि। धन्यवाद आ भयक मिश्रण ओकर चरित्रकेँ सीधा निर्दोषक प्रतीक बनबैत नहि; तथापि ओहि क्षण ओकर मनुष्यता आरोपित परिचयसँ बाहर देखाइत अछि। भोजन न्यायालयक अभिलेख नहि, मुदा पात्रसभक व्यवहारक साक्ष्य अछि। अन्तिम प्रकाश खाली पैकेटपर रहलासँ ई वस्तु एकटा नैतिक चिह्न बनैत अछि : कानून, राष्ट्र आ

अपराधक विमर्शमे भूख आ सामान्य दयाक स्थान कोन अछि? एहि प्रतीककें दोषमुक्तिक विधिक प्रमाण मानब नाटकक वास्तविक तर्ककें अनावश्यक सरल बनायब।

हबीबुल्ला, रोजगार आ अपराधक जाल

नेपथ्यक वकीलक कथनमे समुद्रक किनार बेरोजगार युवाक क्रिकेट खेलब, हबीबुल्लाक सम्पर्क, कुकरमे नुकायल मादक पदार्थ आ यात्राक पारिश्रमिक एक पाछाँ दोसर अबैत अछि। मुदा ई आरोप अभियोजनक कथन अछि; नाटक ओकरा स्वतन्त्र ऐतिहासिक रिपोर्ट जकाँ प्रमाणित नहि करैत अछि। एतय महत्वपूर्ण अछि जे युवा बेरोजगारी, अपरिचित माल उघब आ आपराधिक नेटवर्कक लाभक बीच सम्बन्ध कसरी गढ़ल गेल अछि। अधिकारी पहिने मुतालिफकें फँसाओल युवा मानैत अछि; पछिला घटनासँ ई निष्कर्ष स्थिर नहि रहैत अछि।

वरिष्ठ अधिकारी आ सीमावर्ती लोकजीवनक विमर्श

खुफिया अधिकारी अपन वरिष्ठसँ बतबैत अछि जे ओ भारत-नेपाल सीमावर्ती भूमिसँ अबैत अछि। देश आ सरकारक भेद, पैदल चलनिहार सामान्य लोककें राष्ट्रक आधार मानबाक तर्क आ एकटा कथाक बीच नागरिकता व राजनीतिक निष्ठाक विमर्श उठैत अछि। संवादमे ऐतिहासिक आ मिथकीय स्मृतिक दावासभ सेहो अबैत अछि, मुदा ओ पात्रक तर्कक अङ्ग अछि; आलोचनामे ओकरा स्वतंत्र पुरातात्विक निष्कर्ष नहि बनाओल जाए। विशिष्ट भूगोलक उपयोग ओकर अधिकारीपदकें एकरेखीय राज्य-प्रतिनिधिसँ जटिल बनबैत अछि।

दोसर अङ्क : प्रश्नक उत्तर नहि, प्रश्नकर्ताक पक्ष बदलबाक प्रस्ताव

एकटा आतंकी नेतृत्वकर्ता पूछताछमे स्वयं खुफिया अधिकारीकें अपन समूहसँ जोड़बाक प्रयत्न करैत अछि। ओ सुरक्षा-दलमे भितरघात, मादक पदार्थक पाइ, जंगलक पदस्थापन, संस्थागत उपेक्षा आ दयाकें राजनीतिक हथियार बनबाक कथन रखैत अछि। अधिकारीक प्रतिवादमे नागरिकक सुरक्षा आ युवा-रोजगारक प्रश्न छैक; नेतृत्वकर्ताक प्रतिवादमे ओही व्यवस्थाक अन्याय। दुनू एक दोसरा उपर आरोप करैत अछि, मुदा नाटक भाषणक बराबरीक कारण हिंसक सङ्गठनकें नैतिक वैधता नहि देत;

उल्टा, संवादक अन्तमे नेतृत्वकर्ताक हिंसा-स्वीकार आ छल-प्रस्ताव ओकर तर्कक सीमा उद्धाटित करैत अछि।

‘मचण्ड’क बहुअर्थ : नाम, आरोप आ आत्मप्रतिबिम्ब

खुफिया अधिकारी बेरोजगारीक खाली कटोरामे बारूद भरबाक आरोपसँ विरोधीकेँ ‘मचण्ड’ कहैत अछि। प्रत्युत्तरमे उग्रवादी नेतृत्वकर्ता अधिकारीकेँ ‘सरकारी मचण्ड’ सम्बोधित करैत अछि। एहि दोहरा नामकरणमे राजनीतिक द्वन्द्वक साधारण उलटावसँ आगाँ सत्ता आ प्रतिहिंसाक भाषिक समरूपताक चिन्ता अछि। मुदा दुनूक भूमिकाक वास्तविक नैतिक अन्तर नाटक भेटैत नहि। अधिकारी अपन क्रोधमे विपक्षीक गरदनि पकड़ैत अछि; संवाद ओहि क्षण हिंसा आ न्यायोचित प्रतिरोधक नाजुक सीमारेखा सामने आनैत अछि।

तेसर अङ्क : मुतालिफक घुरि आबब आ मूल अनुमानक विघटन

अधिकारीपर प्रहार भेला बाद मुतालिफ दोसर रूपमे घुरैत अछि। जमानतपर बाहर निकलल एहि युवाक आँखिमे पहिनुक भयक बदला अजीब स्थिरता देखाओल गेल अछि। दुभाषिया कहैत अछि जे पुलिस, पत्रकार, बेरोजगारी आ अपराधक दाग ओकर साधारण जीवनक बाट रोकलक। तखन पहिने निर्दोष मानल गेल युवक स्वयं अधिकारीपर निर्देश थोपैत अछि। नाटक निर्दोषक स्थिर गौरव-कथा नहि, सामाजिक बहिष्कारसँ हिंसक रूपान्तरणक त्रासदी लिखैत अछि; तथापि एहन परिवर्तनक प्रत्येक कारणकेँ पात्रक कथनक रूपमे राखब उचित अछि, सार्वत्रिक समाजशास्त्रीय नियमक रूपमे नहि।

अनुवादकक स्वायत्तता : संवाद आ सत्ता बीचक असमान पुल

मुतालिफ लगभग सभ निर्णायक संवाद इशारामे कहैत अछि, जकरा अनुवादक शब्दमे बदलैत अछि। दर्शक एक साथ व्यक्ति, इशारा आ कथित अर्थ देखैत छथि, मुदा मूल कथनक पूर्ण स्वतंत्र परीक्षण हुनका नहि भेटैत अछि। ई नाटकीय चयन नव्य न्यायमे शब्दप्रमाणक सीमा स्मरण करबैत अछि : शब्दक अर्थक विश्वसनीयता वक्ता, मध्यस्थ आ परिस्थिति तीनूक उपर निर्भर अछि। अनुवादक पात्रक उपस्थिति कथाकेँ सम्भव

करैत अछि, मुदा ओकर उपस्थिति पूर्ण अर्थ-समानताक गारंटी नहि अछि। एतय सत्ता सत्यक एकमात्र संरक्षक नहि बनि सकैत अछि।

चारिम अङ्क : पराजयक स्वीकार आ अपूर्ण समाप्ति

अधिकारी वरिष्ठसँ अपन पहिल यात्राकेँ निष्फल मानैत अछि। वरिष्ठ कहैत अछि जे मुताल्लिफ प्राण बचाकऽ सेहो अधिकारीकेँ हरौलक। अन्तमे अधिकारी कल्पना करैत अछि जे एहि यात्रा पर कथा लिखल जाए तँ मुताल्लिफ नायक बनत, मुदा नायक बनब आ जीवित बचब अलग-अलग अछि। ई आत्मसमीक्षा नाटकीय एकालापकेँ अनिश्चित अन्त देत अछि। भोजनक खाली पैकेटपर प्रकाश आ अनुवादकक अधूर स्वर दर्शककेँ सवालसँ मुक्त नहि करैत; ई अन्तिम दृश्य कोनो शीघ्र समाधानक दावाक विरोध अछि।

ध्वनि-विन्यास आ मञ्चनीय नियन्त्रण

हथकड़ीक खनखनाहटि, अदालतक कोलाहल, जेलक दूर ध्वनि, मोबाइलक आवाज आ अन्तिम नगरध्वनिक मिश्रण लगातार सत्ता आ भाषाक दूरी बनौने रहैत अछि। प्रकाश दू खण्डमे बँटल बहसक दृश्य आ बेहोशीसँ जागबाक आवृत्त क्रिया अभिनयक शारीरिक भाषा बनि सकैत अछि। तथापि तेसर अङ्कमे प्रहारक आवृत्ति तथा पुलिस-फोन आ नेपथ्य-सूचनाक तेज अनुक्रम दर्शकक हेतु समय-स्थिति अस्पष्ट कऽ सकैत अछि। मञ्चनमे ओहि अन्तरालसभक प्रकाश-निर्देश स्पष्ट करब आवश्यक होयत।

अङ्ग्रेजी रूपान्तरक तुलनात्मक परीक्षण

अंग्रेजी शीर्षक 'MACHANDA' मूल शब्दकेँ जकाँ तेंकाँ रखैत अछि; उपशीर्षकमे language, justice and terror क उल्लेख मूलक विषयविस्तारकेँ पाठकसमक्ष स्पष्ट करैत अछि। MUTALIF, INTERPRETER आ INTELLIGENCE OFFICERक संवाद मूलक चारि अङ्कक क्रम जकाँ रखैत अछि। भोजनक पैकेट परक अन्तिम इजोत आ दुभाषियाक अधूर स्वर अंग्रेजी मंचनिर्देशमे सुरक्षित अछि। मूल मैथिलीमे क्षेत्रीय लय, अनौपचारिक सम्बोधन आ राजनीतिक व्यङ्ग्यक सहज तनाव अधिक निकट अछि; अंग्रेजीमे भावक सम्प्रेषण स्पष्ट अछि, मुदा ऊ लय पूर्णतः अदल-बदल योग्य नहि।

## समग्र साहित्यिक निर्णय

‘मचण्ड’क मौलिक उपलब्धि अपराधक कारणक एकमात्र व्याख्या देब नहि, बल्कि अदालतक भाषिक अपूर्णता, बेरोजगारक अस्थिर पहिचान, अधिकारीक मानवता आ उग्रवादीक चालाक आत्मप्रतिमाक टकराहटि अछि। मुतालिकक परिवर्तन पूर्व निर्णयसभक नैतिक आत्मविश्वास हिलबैत अछि। संवादक किछु दीर्घ राजनीतिक खण्ड कथाक गति धीमा करैत अछि आ हिंसक सङ्गठनक व्यापक दावासभ बिना प्रत्यक्ष साक्ष्यक रहैत अछि; तथापि भोजनक पैकेट, मौन इशारा आ अपूर्ण अनुवाद नाटककें वैचारिक बहससँ आगाँ एकटा स्मरणीय रंगमंचीय रूप देत अछि।

‘मचण्ड’ : अङ्कवार पाठ-साक्ष्य

| मूल पाठक अङ्क/कल्लोल                       | पाठ-साक्ष्य आ आलोचनात्मक सम्बन्ध                                                              |
|--------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------|
| अङ्क १; मूल पृष्ठ २५० सँ                   | तमिलभाषी मुतालिक, दुभाषिया, भोजनक पैकेट, वकीलक अभियोजनक कथन, अधिकारीक न्याय-प्रश्न।           |
| अङ्क २                                     | खुफिया अधिकारी आ उग्रवादी नेतृत्वकर्ताक बहस; बेरोजगारी, भितरघात आ ‘मचण्ड’ नामक परस्पर प्रयोग। |
| अङ्क ३                                     | अधिकारीपर प्रहार; जमानतपर घुरल मुतालिकक परिवर्तित स्थिति; अनुवादकक माध्यमसँ निर्देश।          |
| अङ्क ४; अंग्रेजी रूपान्तर मूल पृष्ठ २७१ सँ | वरिष्ठ अधिकारीक संग पराजयक विवेचन; कथालेखनक प्रश्न; खाली भोजनक पैकेटपर अन्तिम प्रकाश।         |

नाट्य-युग्म ८ : संकर्षण

पाँच कल्लोल : दम्भक क्रमिक विकासक नाट्यगठन

‘संकर्षण’ पाँच कल्लोलक एकटा दीर्घ सामाजिक-व्यङ्ग्य नाटक अछि। ओकर पहिल कल्लोल ‘प्रतिष्ठाक बीआ’, दोसर ‘झूठ जड़ि पकड़ैत अछि’, तेसर ‘बियाह आ बड़ाइक बजार’, चारिम ‘शहरक आइना’ आ पाँचम ‘आत्मबोधक जुत्ता’ अछि। पाँच कल्लोलक भीतर अलग-अलग अङ्क अछि; एहि कारण एकरा पाँच अङ्कक साधारण नाटक मानब सही नहि। वस्तुतः गामक परिचित हास्य, पारिवारिक बोली, दिल्लीक यात्रा आ जुत्ताक ठकाइ एकटा चरित्रक भीतरका ढोंगकें धीरे-धीरे उघारैत अछि।

कलक्टरक निकटताक प्रदर्शन आ प्रशासनिक भाषाक हास्य

पहिल कल्लोलमे संकर्षण भाष्करकें कलक्टर सँ अपन घनिष्ठता सुनबैत छथि आ ‘भा.प्र.से.’कें अधिकारिक पदवीक संक्षेपक बदला व्यक्तिक लम्बा नाम बुझबाक अभिनय अथवा अज्ञान प्रस्तुत करैत छथि। कलक्टरक कक्षमे बिनु अनुमतिक घुसला पर डाँटि कऽ बाहर कएल जाइत छथि, मुदा बादमे ओहि अपमानकें काल-बैसारीक सत्कार कहि सामाजिक पूँजी बनबैत छथि। एतय हास्यक आधार कतेक बड़ झूठ कहल गेल, से नहि; पब्लिक प्रतिष्ठा बचेनाइ निजी अनुभवक वास्तविक अर्थकें कोना बदलि दैत अछि, से अछि।

भाष्करक प्रतिख्यान आ तीन कारी कुकुर

भाष्कर तीन टा एके रडक कुकुरक जिलेबी-दोकानक खिस्सा सुनबैत छथि : चोटि खाकऽ घुरल जीव अपन बेइज्जतीकें आदर-सत्कारक कथा बना लैत अछि। कथा-भीतर कथा पहिल कल्लोलक निर्णायक रंगकौशल अछि। संकर्षणकें स्पष्ट बुझि जाइत अछि जे कलक्टरक डाँट भाष्कर देखने छथि; ओ गाममे गप नहि कहबाक विनती करैत छथि। एहि प्रसङ्गमे भाष्करक सहज भुज्रा-प्रस्ताव व्यक्तिक उपहास आ ओकरा मनुष्यक रूपमे सम्मान देबाक बीचक संवेदनशील सीमा जोड़ैत अछि।

‘पसीझक काँट’ : हास्यास्पद सर्वज्ञता सँ देहगत सङ्कट धरि

दोसर कल्लोलक आरम्भमे बच्चाक ज्वर आ दस्तक प्रसङ्ग अछि। संकर्षण पसीझक काँटक रस उपचार कहैत छथि, जखन नित्या काका ओकर विषाक्तताक प्रति सावधान करैत छथि। पात्रक अनाधारित औषधि-सुझावकेँ वास्तविक चिकित्सा नहि मानब चाही; नाटक स्वयं ओकरा खतरनाक ठहरबैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई घटना देखबैत अछि जे हास्यास्पद अतिशयोक्ति कखनो-कखनो दोसराक प्राण लेल जोखिम बनि सकैत अछि। संकर्षणक झूठ शब्दमात्रक रोग नहि, सामाजिक आचारमे हस्तक्षेप करैत अछि।

कंठी, माछ आ नैतिक अपवादक कुतर्क

संकर्षण वैष्णव आचारक दावा रखैत छथि, मुदा रोहु मारि कऽ ओकर दू टुकड़ा घर लऽ जाइत छथि। गोनर प्रश्न उठबैत छथि तँ ओ माछ खायब छोड़ल अछि, मारब नहि, एहन भेद बनबैत छथि। धार्मिक आचरणक एहि विरोधाभासक आलोचना भक्ति स्वयं पर नहि, स्वार्थानुसार नियमक व्याख्यापर लक्षित अछि। कंठी गरदनमे आ कोदारि हाथमे देखाओल गेल दृश्य एकटा मंचीय दृश्य-व्यङ्ग्य अछि; अभिनेता लेल एकहि क्षणमे गम्भीर आत्मछवि आ हास्यास्पद क्रियाक टकराव साकार करबाक अवसर अछि।

टेलीफोन डायरी फाड़बाक प्रसङ्ग : मिथ्या ज्ञानक सामाजिक हानि

गोनरक बहुते नंबर सँ भरल डायरी देखिकऽ संकर्षण कहैत छथि जे पुलिस ओहि संख्या पर शङ्का करि आतंकवादक आरोप लगा सकैत अछि। निराधार भय सँ गोनर अपन डायरी फाड़ि दैत छथि। ई घटना हास्यक गाम्य ढाँचामे भीति द्वारा वस्तुक अर्थ बदलबाक प्रक्रिया देखबैत अछि : साधारण सम्पर्क-सूचना अचानक कथित आपराधिक साक्ष्य बनि जाइत अछि। यहाँ नाटकक आलोचना ज्ञानशून्य आत्मविश्वास पर अछि; वास्तविक पुलिसक एहन व्यवहारक बाहरी सत्यापन एहि कथा सँ नहि निकलैत अछि।

विवाहक बजार : देह, वर्ण आ परिवारक अघोषित श्रम

तेसर कल्लोलमे घटक संकर्षणक रूपरङ आ सामाजिक मूल्यक अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा करैत छथि। विवाहोपरान्त संकर्षण अपन पत्नीक सौन्दर्य बतबैत-बतबैत ओकरा अपनसँ ‘डीप’ रंगक कहि पदानुक्रम रचैत छथि। पत्नी नेपथ्यसँ घरक श्रमक विषयमे

प्रतिप्रश्न करैत छथि : घर चलबैत स्त्रीक काजकेँ 'दुलारु नहि' कहि छोट करबाक अधिकार संकर्षण केँ के देलक? एहि छोट नेपथ्य-संवादमे पत्नी नाटकक नैतिक विवेककेँ व्यक्त करैत छथि, बिना ई आवश्यक भेल जे ओ दीर्घ भाषण देथि।

गुरक चाह, कुसियार आ त्यागक अपूर्ण तर्क

जगन्नाथ-यात्रामे कुसियार त्यागक दावा कऽ संकर्षण गुरक चाह सँ बचैत छथि, कारण गुर कुसियारसँ बनैत अछि। एही संवादक आसपास आन पात्रक 'जोमनी' छोड़ि 'जोम' खयबाक किस्सा अछि। सामाजिक आ धार्मिक नियमक शब्दजाल बनाम वास्तविक आचरण नाटकक व्यङ्ग्य-वस्तु बनैत अछि। भाषिक चातुरीक हरेक नव मोड़ संकर्षणकेँ स्वयं उचित सिद्ध करबाक यन्त्र अछि। मुदा विरोधी पात्रसभक आश्चर्यक समान प्रतिक्रियाक पुनरावृत्ति किछु ठाम हास्यक लय पूर्वानुमेय सेहो बना दैत अछि।

बेटाक पलायन : सजावटि टूटबाक पहिल क्षण

तेसर कल्लोलक अन्तमे संकर्षणक वयस्क बेटा घर छोड़ि जाइत अछि। पिता जे आन सभक जीवनक सहज सलाहकार बनि घुमैत छलाह, अपन घरक शून्यताक आगाँ निरुपाय छथि। ओ बेटाकेँ तकबाक हेतु दिल्ली चलबाक निश्चय करैत छथि, साथे सम्भावित रोजगारक बात करैत छथि। ई परिवर्तन सर्वथा सुधार नहि; ई पहिल बेर अपन अहङ्कारक बाहरी प्रतिरोधक बदला निजी दुःखसँ सामना अछि। हास्य-प्रधान नाटकमे भावात्मक भार देबाक ई एकटा महत्वपूर्ण संरचनात्मक क्रम अछि।

दिल्लीक रेल-यात्रा : 'बौआ'क सम्बोधन सँ पुलिस-जाँच धरि

चारिम कल्लोलमे रेलगाड़ीपर वृद्धा संकर्षणकेँ 'बौआ' कहैत छथि आ ओ अपन वयस्कता सिद्ध करबाक चेष्टा करैत छथि। अलीगढ़क पुलिस-जाँचमे खेसारी सागक बिड़ियासभ पर शङ्काक स्थिति हुनका घेरैत अछि। गाममे आन लोककेँ पुलिसक डर देखेबा वाला स्वयं यात्रा आ जाँचक अनिश्चिततामे फँसैत अछि। एहि प्रतिलोम अनुभवसँ नाटकक व्यङ्ग्यक दिशा बदलैत अछि। संकर्षण एहि घटनाकेँ मानवीय भूलक बदला 'किस्मत' कहि अपन अहङ्कारक रक्षा करबाक प्रयास करैत छथि; आत्मस्वीकृति एखन अपूर्ण अछि।

लाल काका—काकी आ घरेलू सत्यक बरदास्त

लाल काकाक फोनसँ खबरि भेटैत अछि जे संकर्षणक बेटा घर घुरि गेल। काकी आग्रह करैत छथि जे 'पसीझक काँट' सन विनाशकारी हँसी आब नहि करब। संकर्षण नोकरीक परिकल्पना छोड़ैत छथि, मुदा दिल्ली घूमबाक प्रस्ताव स्वीकार करैत छथि। कथानकक ई मोड़ दर्शबैत अछि जे बाहरी संकट समाप्त होएब आ भीतरक चरित्र-रूपान्तरण एके घटना नहि। पहिलक अनियन्त्रित आत्मविश्वास अब किछु कमजोर भेल अछि, तथापि पूर्ण नैतिक आत्मजाँच पाँचम कल्लोलधरि टलैत अछि।

चोर-बजारक जुत्ता : प्रतिष्ठाक ठोस वस्तु

पाँचम कल्लोलमे चोर-बजारक दुकानदार महँग जुत्ताकेँ अपूर्व वस्तु जकाँ पेश करैत अछि। संकर्षण तीन सए साठि टाका रहने पर साढ़े तीन सय टाकामे जुत्ता कीनि लैत छथि। 'पड़ोसिया' आ 'अपने लोक'क सम्बोधन विक्रेताक व्यापारिक कूटक सङ्केत अछि, मुदा संकर्षण एकरा निजी सत्कार बुझैत छथि। एखन पहिल बेर ओहि व्यक्ति पर ओकर अपन रणनीति प्रयुक्त होइत अछि, जे भरि नाटक दोषकेँ गुण कहैत छलाह। जुत्ताक बाहरी चमक आ भीतरक कमजोर सोल मध्य अन्तर चरित्रक बाहरी प्रतिष्ठा आ आन्तरिक खोखलापनक दर्पण अछि।

जुत्ता बचबैत पएर भिजेनाइ : देह आ वस्तुक उलटल मूल्य

गाम घुरलाक बाद संकर्षण जुत्ताकेँ पानिसँ बचाबए लेल हाथमे उठा लैत छथि, अपन पएर भीजबाक परवाह नहि करैत छथि। जुत्ताक सोल शीघ्र टूटि जाइत अछि। एहि कृत्यमे उपभोक्तावादी प्रतिष्ठाक अतिशयोक्ति मंचपर वस्तु आ देहक स्थान उलटि कऽ रूपायित अछि। जुत्ताक मरम्मत करय चाहब आर्थिक हानि सँ अधिक अपन छवि बचेनाइ अछि। जे व्यक्ति आनक सामने चोटकेँ आदर कहैत छल, से आब अपना ठकायल अनुभवकेँ 'ठकान' कहि पाबैत अछि।

सूत्रधारक अन्तिम हस्तक्षेप : उपलब्धि आ सीमा

उपसंहारमे सूत्रधार गाम-सहरक प्रत्येक कोनमे 'संकर्षण' सन प्रवृत्तिक प्रश्न उठबैत छथि आ स्पष्ट कहैत छथि जे ठकाइ जुत्तामे नहि, अहङ्कारमे लागल। ई नैतिक निर्णय पात्रक व्यवहारसँ पर्याप्त सिद्ध भऽ रहल होइतो सूत्रधार ओकर निष्कर्ष फेर शब्दमे दैत

छथि। लोक-रंगमंचक स्पष्ट समापन-पद्धतिमे ई प्रभावी भऽ सकैत अछि, मुदा आधुनिक अप्रत्यक्ष व्यङ्ग्यक दृष्टिसँ किछु प्रत्यक्षोपदेश सेहो लगैत अछि। तइयो भाष्करक गैर-उपहासपूर्ण साथ आ अन्तिम आत्मस्वीकृति नायककें केवल विदूषक रहबासँ बचबैत अछि।

अङ्ग्रेजी रूपान्तर : पाँच खण्डक अर्थरक्षा

अंग्रेजी 'SANKARSHAN'मे पाँच कल्लोलक क्रम, कलक्टरक बहना, 'three black dogs', 'pasij thorn', टेलीफोन डायरी, रेल-जाँच आ 'truth hidden inside the sole'क घटनाक उपस्थिति मूलक शिल्प-संगति बचबैत अछि। 'The swindle did not strike the shoe; it struck my pride' सन अन्तिम वाक्यमे वस्तुगत घटना आ नैतिक स्वीकृतिक सम्बन्ध स्पष्ट अछि। मुदा मूल मैथिलीक पारिवारिक सम्बोधन, विवाह-सन्दर्भक स्थानिक मुहावरा आ 'बौआ' सन उच्चारण अंग्रेजीमे आंशिक व्याख्या माँगैत अछि। रूपान्तरक सफलता संरचना बचेनाइ अछि; पूर्ण लोकध्वनिक पुनरुत्पादन ओकर सहज सीमा अछि।

साहित्यिक निर्णय : एक दीर्घ विडम्बना-चरित्रक मानवीकरण

'संकर्षण'क उत्कृष्टता अनेक स्वतंत्र हँसौनी प्रसङ्गकें एकहि चरित्रक आत्मछवि सँ जोड़बमे अछि। कलक्टरक कक्ष, पसीझक काँट, कंठी-माछ, विवाहक बजार, रेलक पुलिस-जाँच आ चोर-बजारक जुत्ता सभ अलग घटना थिक, मुदा सभ एकहि प्रवृत्ति—अपन दोषकें सम्मानक शब्द देबाक प्रवृत्ति—कें उघारैत अछि। किछु दृश्य जोड़ कऽ बनल नाटकीय लम्बाइ कतेको ठाम नाट्यगतिकें धीमा करैत अछि; परन्तु भाष्कर, पत्नी आ गोनरक उपस्थितिसँ ई एकान्त व्यक्तित्व-अध्ययन नहि रहि समुदायमे आत्मदर्पणक कथा बनैत अछि।

'संकर्षण' : पाँच कल्लोलक प्रमाण-पञ्जी

|                               |                                                          |
|-------------------------------|----------------------------------------------------------|
| मूल पाठक अङ्क/कल्लोल          | पाठ-साक्ष्य आ आलोचनात्मक सम्बन्ध                         |
| पहिल कल्लोल; मूल पृष्ठ २८८ सँ | कलक्टरक कक्ष, भाष्कर, तीन कारी कुकुरक खिस्सा आ झूठक पहिल |

|                                     |                                                                           |
|-------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------|
|                                     | अनावरण।                                                                   |
| दोसर कल्लोल                         | पसीझक काँट, पंचैती दण्ड, कंठी-माछ आ टेलीफोन डायरीक निराधार भय।            |
| तेसर कल्लोल                         | विवाह-वार्ता, पत्नीक नेपथ्य-विरोध, गुरक चाह, बेटाक घर छोड़ब।              |
| चारिम कल्लोल                        | रेलमे सम्बोधन, अलीगढ़ जाँच, लाल काकाक समाचार आ अधूर आत्मस्वीकृति।         |
| पाँचम कल्लोल; अंग्रेजी पृष्ठ ३३५ सँ | दिल्लीक चोर-बजार, जुत्ताक टूटल सोल, गोनरक भेंट आ सूत्रधारक अन्तिम प्रश्न। |

## नाट्य-युग्म ९ : उल्कामुख

मूल उपशीर्षकक असङ्गति आ वास्तविक सात कल्लोल

‘उल्कामुख’क मूल उपशीर्षकमे ‘छह कल्लोलक नाट्य-गाथा’ लिखल अछि; अंग्रेजी उपशीर्षकमे सेहो ‘Six Acts’ अछि। मुदा वास्तविक मूल पाठमे ‘पहिल कल्लोल’ सँ ‘सातम कल्लोल’ धरि सात पृथक क्रम अछि; अंग्रेजीमे ACT I सँ ACT VII धरि एही संरचनाक पुष्टि होइत अछि। अतः एहि समीक्षामे वास्तविक सात कल्लोलकें पाठ-इकाई मानल गेल अछि। शीर्षक-पृष्ठक संख्या आ मूलक पूर्ण रचना-विन्यासक एहि असङ्गतिकें ओझरा देब पाठसम्पादनक त्रुटि होयत। एकर अतिरिक्त सूत्रधार आरम्भमे प्रेम, स्मृति आ विस्मृतिक जे रूपरेखा दैत छथि, से सात कल्लोलक आरोही क्रमकें बुझबाक पहिल सूत्र अछि।

गंगेश—वल्लभा : प्रेमक संवाद सँ ज्ञानक प्रश्न

पहिल कल्लोलमे शतरंजक घरदार वाला घनक बीच गंगेश आ वल्लभा संवाद करैत छथि। वल्लभा गंगेशक विद्याक प्रशंसा करैत छथि, मुदा व्यक्तिक ऋषिकरण ओकर साधारण दुःख-सुखकें मेटि देत, एहन आशङ्का सेहो रखैत छथि। गंगेश वाक्-चातुरीक ऊपर तथ्यक प्राथमिकता घोषित करैत छथि। एहि दू वाणीमे प्रेमक एकटा आलोचनात्मक संगतिपूर्ण रूप अछि : नायिका प्रशंसिका मात्र नहि, विचारक सामाजिक परिणामपर प्रश्न करनिहार सहभागी अछि। नाटक एतयसँ दार्शनिक प्रतिमा आ जीवित व्यक्तिक बीच अन्तर खड़ा करैत अछि।

चर्मकार टोल आ ज्ञानक सामाजिक भूगोल

आरम्भिक संवादमे गंगेशक चर्मकार टोलमे बाल्यकालसँ जाइब पर चर्च उठैत अछि। ई प्रसङ्ग विद्या कोन ठाम जनमैत अछि आ ककरा लग जाइत अछि, एहि प्रश्नकें रूढ़ वर्ण-आधारित सीमा सँ बाहर अनैत अछि। मुदा एही कालचित्रकें वास्तविक गंगेशक प्रमाणित जीवनचरितक स्थिर तथ्य मानब उचित नहि; नाटक अपन कथा-संसारमे सामाजिक भेदक आलोचनार्थ एहि सम्बन्धक निर्माण करैत अछि। प्रेमक निजी कथासँ शिक्षा आ

सामाजिक सम्पर्कक सार्वजनिक प्रश्नमे जे विस्तार होइत अछि, से नाटकक ऐतिहासिक कल्पनाक महत्वपूर्ण शिल्प अछि।

शतरंजक घन : दृश्य-व्याकरण आ गणनाक व्यङ्ग्य

पहिल कल्लोलक महत्वपूर्ण उपकरण शतरंजक चौंसठि घरवला घन अछि। देवदत्त प्रथम खानामे एक धानक दाना, प्रत्येक अगिला खानामे दुगुना राखबाक इनाम मँगैत अछि। गणनाक प्रगति मानवीय कल्पनाक सीमाकेँ प्रश्न करैत अछि; गंगेशक उत्तर सुनि देवदत्त चकित होइत अछि। ई दृश्य गणितक पहेली सँ अधिक ज्ञानक कथित साधारणता आ वास्तविक जटिलताक अनुभव बनि उठैत अछि। घनक घुमनाइ, दानाक दृश्य क्रम आ अन्हारमे गुंजित ध्वनि दर्शकक मनमे स्मृतिक अंकित वस्तु बनि जाइत अछि।

दोसर कल्लोल : लोकगीत आ एकोएकर ज्ञानक प्रसार

दोसर कल्लोलमे 'बभनीक पुत्र' सन गीत, गंगेशक विद्वत् परिचय, तत्त्वचिन्तामणिक प्रतिलिपि-सम्बन्धी चिन्ता आ बहुविध लोक-आख्यान एक संग अबैत अछि। गंगेश स्वयं एकटा ग्रन्थक अत्यधिक गौरवक साथ ओकर ज्ञान के ककरा धरि पहुँचत, से प्रश्न पूछैत छथि। नाटकक संगीत केवल विराम नहि, मौखिक परम्परामे नाम, स्थान आ वैचारिक संस्मरणक आवागमनक भौतिक साधन अछि। तथापि लोकगीतक दीर्घ खण्डसभ नाटकीय क्रियाक बीच समय रोकैत अछि; ओहि ठाम निर्देशनक लेल ध्वनि-गतिक विशेष योजना चाही।

तेसर कल्लोल : नामक लोप आ शास्त्रीय स्मृतिक राजनीति

आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंह तत्त्वचिन्तामणिक उल्लेखमे अपन व्यक्तिनामक स्थानपर पद-संकेत बाँचि जाएबाक दुख व्यक्त करैत छथि। पात्रसभक एहि कथनमे ग्रन्थद्वारा स्मृति प्रदान करबाक संग-साथ ककर स्मृति छँटल जाएत, से विवाद अछि। गंगेश जे लिखलन्हि, ओकरा पर उद्धृत आरोप हुनका सभक संवादमे प्रकट होइत अछि; ओकर स्वतंत्र शास्त्रीय सत्यापन एहि नाटकक भीतर नहि अछि। नाटकीय रूपमे नामक

विलय, पदक बचेब आ विद्वानक प्रतिष्ठाक छाया एक दोसरा प्रभावित करैत अछि। एहि नामहेरानिक रूपकसँ 'उल्कामुख' स्मृति-विमर्शक नाम बनैत जाइत अछि।

आचार्यक नामसँ पशु-रूपक धरि : व्यङ्ग्यक जोखिम

व्याघ्र, सिंह, सरभ, साही आ खिखिर सन नामसभ किछु ठाम पात्रक अभिमान, किछु ठाम दूषित इतिहासक रूपक, आ किछु ठाम भयक अभिनय बनैत अछि। मञ्चपर घनक घूमब आ कारी कपड़ाक मुँह लग बान्हल रहब एहि भयंकर शब्दसमूहकें दृश्य-गठन देत अछि। मुदा रूपकक घनत्व एतेक अछि जे वास्तविक पात्रसंबन्धक स्मरण कठिन होएबाक सम्भावना अछि। कथा जे समाजमे नाम लोपक विरुद्ध लड़ैत अछि, ओ अपन रूपक-विस्तारसँ दर्शककें पुनः नामक भूलभुलैयामे धकेलि सकैत अछि; ई नाटकक सर्जनात्मक जोखिम सेहो अछि।

विस्मरणक विरुद्ध गीत आ लोकस्मृतिक प्रतिरोध

तेसर कल्लोलक उत्तरार्धमे घृणा, वृद्ध स्त्रीक स्मृति, आ रक्तबीज सन विभाजक प्रतिमाक विरोधमे अनेक संयुक्त स्वर उठैत अछि। लोकगीत नाटकमे अलङ्कारिक उद्धरण मात्र नहि; मंचपर बहुगोटेक एकहि पाँति दोहराव स्मरणक सामूहिक व्यवहार बनैत अछि। नव्य न्यायपरक दृष्टिसँ एहन स्वर ऐतिहासिक दावाक प्रमाण नहि, मुदा बहिष्कृत अनुभवक अस्तित्वक प्रमाण-जिज्ञासा अवश्य अछि। लेखक वर्तमान प्रश्नकें अतीतक रूपकमे रखैत छथि; एकर ऐतिहासिक-समयक सटीकता अलग शोधक विषय, नाटकक अन्तर्निहित दावाक प्रमाण नहि।

चारिम कल्लोल : कमला-गीत, उल्कामुखी ताबीज आ अर्थक पुनःस्मरण

चारिम कल्लोल कमला-गीतक नेपथ्य स्वर सँ आरम्भ होइत अछि। ओकर उत्तरार्धमे भगता पृथ्वी अथवा गोला उठबैत छथि, दिशा अनुसार घूर्णनक अलग अनुभवक चर्चा करैत छथि, आ ताबीजमे नुकायल तालपत्रक अक्षर देखिकऽ विस्मृत नाम मोन पाड़ैत छथि। घन सँ गोलाक यात्रा अभी सम्पूर्ण नहि भेल, मुदा एहि क्षण अतीतक प्रतीक नव प्रसङ्गमे बचैत अछि। ताबीज इतिहासक प्रमाणित अवशेष नहि, नाटकक भीतर स्मृतिक

वाहक वस्तु अछि। लोकसङ्गीत, वस्तु आ अभिनयक सम्मिलनसँ ई कल्लोल भावात्मक संक्रमणक काज करैत अछि।

पाँचम कल्लोल : अभिनेता-दोहराव आ समयक नाटकीय परिवर्तन

पाँचम कल्लोल सँ पहिनुक शतरंज-घनक बदला गोला राखबाक स्पष्ट निर्देश अछि। एहिमे पहिनुक पात्रसभ नव नाम आ सम्बन्धसँ अवतरित होइत छथि : गंगेश गंगाधर, वल्लभा कुमारसुता, शिष्य साही हरपति, भगता ऋषि जटा, भगताक शिष्य हीरू बनैत अछि। अन्य पात्र सेहो नव व्यवस्था सँ जुड़ैत छथि; स्त्री पात्रसभक संख्या बढ़ैत अछि। ई पूर्वप्रकरणक ऐतिहासिक पुनर्जन्मक शब्दशः दावा नहि, रंगमंचीय रूपान्तरणक संगतिपूर्ण युक्ति अछि : जे प्रश्न पुरान रूपकमे छल, से आब नव सामाजिक देह धारण करैत अछि।

घन सँ गोला : मञ्च-प्रतीकक राजनीतिक रूपान्तरण

पहिल चारि कल्लोलक चौकोर, अंकित, घुमन्त शतरंज-घन सत्ता द्वारा तय कएल खानासभक बिम्ब अछि; पाँचमसँ गोला वास्तविक जगत, निरन्तर घूर्णन आ सम्बन्धक विस्तृत क्षेत्रक सङ्केत बनैत अछि। पाठमे स्पष्ट 'कल्पना' आ 'वास्तविकता'क विरोध उपस्थित अछि। मुदा गोला सब प्रकारक निश्चित सत्यक प्रतीक मानि लेब अतिशय व्याख्या होयत : नाटकीय प्रगति स्वयं बतबैत अछि जे नव यथार्थमे सेहो राज्यक दमन, जातिगत सीमा आ हिंसा अछि। प्रतीकक उपयोग सुन्दर एहि कारण अछि जे ओकर अर्थ एकरेखीय विजयक घोष नहि।

ऋषि जटा आ हीरू : गुरु-शिष्यक नव सम्बन्ध

पाँचम कल्लोलमे ऋषि जटा आ दलित गायक हीरूक सम्बन्ध लोकगीत, अध्ययन आ सामाजिक प्रतिष्ठाक अलग आधार प्रस्तुत करैत अछि। परम्परागत शास्त्रज्ञानक एकाधिकारकें शिथिल करैत गायकक कण्ठ शिक्षाक उपकरण बनैत अछि। गंगाधरक शिक्षा ओहि रटन्त प्रणाली सँ अलग अछि, जाहिमे विद्यार्थीकें नियम मोन राखबाक आदेश देल जाइत अछि मुदा 'किएक' प्रश्न टारि देल जाइत अछि। नाटक जटाक

सान्निध्यक महत्त्व प्रकट करैत अछि, मुदा शिक्षकक प्रभावकेँ सहज चमत्कार मानबाक बदला शिक्षण-विधिक सामाजिक उपयोग सँ जोड़ैत अछि।

छअम कल्लोल : जनेऊ-प्रश्न, रटन्त विद्या आ बालकक विवेक

आठ बरखक गंगाधर पिता हरपति आ माता सोहागोसँ यज्ञोपवीतक विषयमे असहमति व्यक्त करैत अछि। ताबीज पहिरलासँ संस्कारक अनिवार्यता पर ओ प्रश्न करैत अछि; विद्यालयमे गुरु जे प्रश्नक उत्तर नहि दैत छथि, तकरा पर आपत्ति उठबैत अछि। बेड पानिमे किएक कूदैत अछि, एहन बालजिज्ञासा अन्ध-अनुकरणक विरोध बनैत अछि। बालकक स्वरमे तर्कक आग्रह प्रभावशाली अछि, मुदा अति-वयस्क बौद्धिकता संवादकेँ कखनो-कखनो स्वाभाविक बाल-भाषासँ दूर सेहो लऽ जाइत अछि। एहि सीमा सहित ई कल्लोल नाटकक शिक्षा-विमर्शक निर्णायक आधार अछि।

अनुभवक कसौटी आ पाठशालाक सामाजिक अर्थ

ऋषि जटा गंगाधरक प्रश्न पूछबाक प्रवृत्तिसँ प्रसन्न छथि आ ओकरा राज्य-दरबारमे जाइबाक प्रेरणा दैत छथि। आगामी कल्लोलमे 'अनुभव मण्डल'क विद्यालयसभमे परिश्रम आ शिक्षाक मेल, शिक्षकक उपयोगिता आ सामूहिक आर्थिक सहयोगक चर्चा होइत अछि। एहि सम्पूर्ण क्रममे 'रटन्त नहि, बुझन्त विद्या'क सिद्धान्त कागज पर सीमित नहि रहैत; गंगाधर गणनासँ प्रशासनक संकट सुलझबैत छथि। शिक्षा जखन निजी विवेकसँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व धरि जाइत अछि, तखन एहि विचारक वास्तविक नाटकीय परीक्षण होइत अछि।

सातम कल्लोलक आरम्भ : एक सँ सए धरि योग आ प्रशासनिक अज्ञान

राजा कीर्ति सिंहक दरबारमे अर्थमंत्री नारायण एक सँ सए धरि अंकक जोड़ करबामे असमर्थ छथि। गंगाधर एक आ सए, दू आ निनानबे जकाँ जोड़ी बनाकऽ पचास बेर एक सए एक जोड़बाक विधि बतबैत छथि। उत्तर ५०५० अबैत अछि। ई दृश्य केवल गणितक चमत्कार नहि : राजा दरबारक पदक बदला विचारक कार्यकारी फल देखैत छथि। रटन्त बला औपचारिक शिक्षा आ व्यवहारक गणना बीच भेद स्पष्ट अछि। गणनाक

एहि विधिक गणितीय वैधता नाटकसँ बाहर सेहो जाँचल जा सकैत अछि; मुदा एतय ओकर काम पात्रक शिक्षण-विधि परखब अछि।

कुमरसुता आ गंगाधर : राजसत्ताक सहयोगक द्विअर्थ

गंगाधरक प्रतिभासँ प्रभावित राजा कुमरसुतासँ हुनकर विवाह आ राजक उच्च पदक प्रस्ताव रखैत छथि। प्रतिभाक सार्वजनिक मान्यता एक दिस सँ बंधन टूटबाक संकेत अछि, मुदा दोसर दिस राजसत्ता प्रतिभाकेँ अपन संरचनामे समेटबाक चेष्टा सेहो करैत अछि। गंगाधरक ज्ञान जखन जनहितक अनुभव मण्डलसँ जुड़ैत अछि, तखन दरबारक कृपा आ स्वतंत्र सार्वजनिक विचारक बीच टकराहटि तीव्र होइत अछि। एहि कथानकमे वैचारिक नायकक सत्ता-समीप जाइब स्वतः मुक्ति नहि, बल्कि आगामी दमनक एकटा सूक्ष्म पूर्वभूमि अछि।

अनुभव मण्डल : श्रम, जाति आ स्त्री-पुरुष समानताक प्रयोग

अनुभव मण्डलमे जातिगत भेदक प्रतिरोध, आत्मनिर्भर पाठशाला, जमीन-भवन लेल सामुदायिक सहायता आ लोकक श्रमक महत्त्वपर संवाद अछि। मनसुख, हरिकर, जीवे, मेधा, माधव, मितू, कुमरसुता आदि पात्रसभ सार्वजनिक अधिकारक प्रश्नमे जुड़ैत छथि। गुरु—शिष्य मात्रक सीमामे रहल ज्ञान जखन सामुदायिक संस्था बनैत अछि तखन नाटक दर्शनसँ लोकव्यवस्थाक दिशि गमन करैत अछि। मुदा ओहि व्यवस्थाक वित्त-व्यवस्था, सदस्यता आ निर्णय-पद्धतिक सभ प्रश्नक सूक्ष्म उत्तर नाटक नहि दैत; ओकर केन्द्र सामाजिक आदर्श आ तकर राजनीतिक सङ्कट अछि।

जीवे—मेधाक विवाह आ राजाज्ञाक हिंसक प्रतिक्रिया

अनुभव मण्डलमे जीवे आ मेधाक विवाहक स्वीकृति राजदरबारमे प्रतिलोम विवाहक विवाद उठबैत अछि। राजा अनुमति आ सामाजिक पदानुक्रमक प्रश्नकेँ राजदण्डसँ जोड़ैत छथि। कथानकमे जीवे—मेधाक मृत्यु-दण्डक निर्णय होइत अछि; एहि क्रूरताक समाचारसँ अनुभव मण्डलमे प्रतिरोध उठैत अछि। एहि प्रसङ्गक साहित्यिक शक्ति ई अछि जे विचारक प्रयोग केवला सभाक घोषणापत्र नहि रहैत; स्त्री-पुरुषक सम्बन्ध आ जातिगत बराबरीक प्रश्न सत्ता सँ सीधा संघर्ष बनि जाइत अछि। राजाज्ञाकेँ नैतिक सत्यक पर्याय मानबाक त्रुटि पाठ स्वयं खोलैत अछि।

माधवक उत्तरदायित्व, मातृवाणी आ प्रतिहिंसाक प्रश्न

माधव दरबारक भितर रहि कऽ सूचना आ प्रतिरोधक भूमिका लैत अछि। रुद्रमति माताक कठोर वाणी ओकरा दायित्व स्मरण करबैत अछि; भोजनक दृश्य निजी ममता आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक मार्मिक विरोध अछि। प्रतिशोधक योजना आगे बढ़ैत अछि, मुदा पात्र स्वयं ओकरा 'बदला नहि, स्मरणक रक्षा' कहैत अछि। ई कथन नाटकक नैतिक संकटकें हल नहि करैत : अन्यायक विरोधमे हिंसाक निर्णय कत्तेक दूर तक नैतिक होएत? साहित्यिक आलोचनाक हेतु एहि अन्तरकें खुलल राखब आवश्यक अछि।

कीर्ति सिंहक अन्त, आन्दोलनक भविष्य आ विजयक संशय

सातम कल्लोलक अन्तमे राजदरबारक टकराहटिमे कीर्ति सिंह आ माधव सहित अन्य पात्रक मृत्यु होइत अछि। मुदा राजा हटिते नाटक नव समाजक पूर्ण विजय घोषित नहि करैत। गंगाधर अनुभव मण्डलकें दोसर बन्द घेरामे बदलि जाएबाक आशङ्का व्यक्त करैत अछि : जाति-विरोधी संस्था अपना भीतर नव जाति अथवा नव एकाधिकार नहि बना लिअय। ई आत्मप्रश्न नाटकक बहुत महत्वपूर्ण दार्शनिक उपलब्धि अछि। परिवर्तनक संस्था निरन्तर आत्मपरीक्षण बिना ओही अत्याचारक रूप धारण कऽ सकैत अछि, जकर विरोधसँ ओकर स्थापना भेल।

अन्तिम लोकगीत : भयक स्मृति आ इतिहासक अधूरापन

उपसंहारमे गंगाधरक स्वास्थ्य कमजोर पड़ैत अछि आ लोकगीतमे भयावह आँगन, साँपक प्रतिमा, पानिक जीभ आ अन्हारक छाया घुरि अबैत अछि। घनक खरखराहटि आ गोलाक घरघराहटि एक संग सुनाइत अछि। ई मिलन पहिनुक प्रतीककें निरर्थक नहि करैत, बल्कि इतिहासमे भय आ मुक्तिक परस्पर धारा उपस्थित राखैत अछि। दूरसँ घुरल गीतक अंश स्मृति सम्पूर्ण नष्ट नहि होइत, एहन सम्भावना उद्घाटित करैत अछि। अन्तिम वाक्य ककरो पूर्ण विजेताक घोषणा नहि, विस्मरण सँ पुनः संघर्षक अनिवार्यता अछि।

भरतनाट्यपरम्परा, ध्वनि आ बहुपात्रक मञ्चनीयता

मूल पाण्डुलिपिक सूत्रधारमे मंच-परिकल्पना भरत नाट्यशास्त्रक अनुरूप होयबाक कथन अछि आ विदेह नाट्य उत्सव २०१२क मंचन-सम्बन्धी विवरण सेहो अछि। ई लेखकक प्रकाशित पाठक अन्तर्गत दावा अछि; स्वतन्त्र रंगमंचीय अभिलेखक परीक्षण बिना ओकरा अलग प्रमाणित इतिहास मानब उचित नहि। कूटक दू घन, गोला, ताबीज, गीत, समूह-गायन आ कलाकारसभक रूप-बदलाव नाटककें दृश्य-विचारक विशेष रूप दैत अछि। मुदा सात कल्लोलक विशाल पात्रसमूह आ अतिदीर्घ पदावली आधुनिक सान आकारक रंगमंचमे दृश्य-सम्पादन आ समय-विन्यासक विशेष चुनौती बनैत अछि।

पाश्चात्य कथाशास्त्र आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि

एहि नाटकमे काल एकरेखीय इतिहासक रूपमे नहि चलैत : व्यक्तिसभक नाम, देह, संकेत आ सामाजिक पद बदलैत रहैत अछि। स्मृति-प्रतीकक पुनरावृत्ति वर्तमान राजनीतिक प्रश्नकें पुरान दार्शनिक प्रसङ्गसँ जोड़ैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ लोकगीत, दलित गायक, सामुदायिक पाठशाला आ स्त्रीक सामाजिक निर्णय संस्थागत इतिहासक कात रहि गेल आवाजकें नाटकीय प्रतिनिधित्व दैत अछि। मुदा एहि पुनर्निर्मित कालचित्रक एक-एक घटना बाहरी ऐतिहासिक साक्ष्यसँ पुष्ट होइत अछि, एहन दावा नहि करब। ई नाटक इतिहास पर आधारित सर्जनात्मक प्रतिप्रश्न अछि, इतिहासक सरकारी अभिलेख नहि।

अङ्ग्रेजी रूपान्तर : संरचना, शाब्दिकता आ लोकगीतक सीमा

‘ULKAMUKH’क अङ्ग्रेजी रूपान्तरमे Gangesha and Vallabha, cube, sphere, folk songs आ ACT I सँ ACT VII धरि क्रम सुरक्षित अछि। मूलक अनेक गीत अङ्ग्रेजी पद्यात्मक अर्थान्तरमे देल गेल अछि, जाहिसँ कथार्थ बुझबाक सुविधा अछि। तथापि ‘बभनीक पुत्र’, कमला-गीत, सर्प-विषहरि लोकस्वर आ क्षेत्रीय संबोधनक संगीतात्मक आवृत्ति लक्ष्यभाषामे पूर्णतः समान नहि होइत। उपशीर्षकक ‘Six Acts’ त्रुटि अङ्ग्रेजीमे सेहो रहि गेल अछि; अतः भविष्यक पुस्तक-संशोधनमे दुनू संस्करणक

उपशीर्षककें वास्तविक सात-प्रकरणक अनुरूप करबाक आवश्यकता अछि। मूल पाठक घटनाक अन्तिम सातम प्रकरण अनुवादमे छोड़ा नहि गेल अछि।

समग्र आलोचनात्मक निष्कर्ष : ज्ञानक मुक्ति आ संस्थाक आत्मसङ्कट

‘उल्कामुख’क मूल उपलब्धि प्रेम, शास्त्र, लोकगीत, जातिगत बन्धन, अनुभवशिक्षा आ राजसत्ताक हिंसा बीच स्थायी प्रश्न निर्मित करब अछि। शतरंजक घन-गोला-ताबीजक वस्तु-सङ्केत आ पात्रक पुनर्नामकरण साहित्यिक रूपकें महत्त्वपूर्ण गहराई दैत अछि। प्रबन्धात्मक संवाद, विशद लोकगीत आ असङ्ख्य पात्र नाट्यगतिकें कठिन बनबैत अछि; तथापि अन्तिम कल्लोलक प्रश्न—मुक्तिकें लक्ष्य बनौने संस्थामे फेर बन्धनक बीया नहि उपजि जाए—सम्पूर्ण ग्रन्थक सर्वाधिक गम्भीर दार्शनिक उपलब्धि अछि। एहि कारण ‘उल्कामुख’ केवला गंगेश-वल्लभाक प्रेमनाटक नहि, स्मृतिक लोकतान्त्रिक दावाक रंगमंचीय महागाथा बनैत अछि।

‘उल्कामुख’ : सातू वास्तविक कल्लोलक प्रमाण-पञ्जी

| मूल पाठक अङ्क/कल्लोल          | पाठ-साक्ष्य आ आलोचनात्मक सम्बन्ध                                                   |
|-------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------|
| पहिल कल्लोल; मूल पृष्ठ ३८० सँ | गंगेश-वल्लभाक संवाद, चर्मकार टोलक सन्दर्भ, शतरंजक चौंसठि खानामे दुगुना धानक बिम्ब। |
| दोसर कल्लोल                   | लोकगीत, प्रतिलिपि आ विद्या-प्रसार; कथाक मौखिक परम्परा।                             |
| तेसर कल्लोल                   | आचार्य व्याघ्र-सिंह, नामक लोप, शास्त्रीय स्मृति आ सम्मिलित प्रतिरोधी गीत।          |
| चारिम कल्लोल                  | कमला-गीत, भगता, गोला तथा ताबीजमे बाँचल तालपत्र-चिह्न।                              |
| पाँचम कल्लोल                  | घन सँ गोलाक मञ्च-परिवर्तन; पात्रक नव नाम-सम्बन्ध; जटा, हीरू आ गंगाधरक सम्बन्ध।     |
| छअम कल्लोल                    | आठ बरखक गंगाधरक जनेऊ-प्रश्न, रटन्त विद्या सँ असहमति आ ऋषि जटाक शिक्षण।             |

|                                    |                                                                                              |
|------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------|
| सातम कल्लोल; अंग्रेजी पृष्ठ ४४९ सँ | १-१००क योग, अनुभव मण्डल, जीवे-<br>मेधाक विवाह, राजसत्ता-संघर्ष आ<br>अन्तिम नैतिक आत्मप्रश्न। |
|------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------|

नओ नाटक : अन्तरनाटकीय तुलनात्मक मूल्याङ्कन

पहिल छओ नाटकक सम्पूर्ण मूल समीक्षा आ तकर निष्कर्ष ऊपर जसक तस सुरक्षित अछि। सातम 'मचण्ड'मे न्यायिक अनुवादक मध्यस्थता सँ सत्ताक भाषाक सीमा उघड़ैत अछि; आठम 'संकर्षण'मे आत्मप्रशंसाक भाषा सामाजिक हास्यक वस्तु बनैत अछि; नओम 'उल्कामुख'मे संस्था, स्मृति आ लोकगीतक भाषा सामाजिक परिवर्तनक साधन बनबाक दाबी करैत अछि। तीनू नाटक भाषाकें निष्पक्ष वाहक नहि मानैत अछि। मुदा भाषाक प्रभाव तीनू ठाम अलग अछि : मुतालिकफक मौन राजनीतिक संकट, संकर्षणक वाचालता आत्मछल, आ गंगाधरक प्रश्न नव शिक्षण-विधिक आरम्भ अछि।

पूर्ववर्ती 'गंगा ब्रिज' आ 'जलोदीप'मे प्रशासनिक अभिलेख आ स्थानीय लोक-अनुभवक संघर्ष छल; 'मचण्ड'मे ओही तनाव अदालतक भाषिक संरचनामे प्रवेश करैत अछि। 'कमलाक भगता'मे निजी चिह्नकें बिना प्रमाण धार्मिक नियम मानि लेबाक हास्य छल; 'संकर्षण'मे अपमानकें सत्कार आ अप्रमाणित गपकें ज्ञान मानबाक प्रवृत्ति ओहि हेतु-स्खलनक सामाजिक रूप अछि। 'अपाला आत्रेयी'क स्त्रीविद्या आ 'उल्कामुख'क अनुभवमूलक शिक्षामे उत्तराधिकारक एकटा विचारधारात्मक कड़ी अछि, मुदा काल-पात्र-विधाक भिन्नता स्वतन्त्र राखि देखल जाए।

नओ नाटकक संग्रहमे बालरंगमंच, व्यङ्ग्य, दार्शनिक महागाथा आ समकालीन राजनीतिक बहसक रूपसभ एक संग उपस्थित अछि। एकर उपलब्धि विषयक विविधतामे मात्र नहि, वस्तु आ ध्वनिक पुनरावर्तनमे अछि : भोजनक पैकेट, जुत्ता, घन, गोला, ताबीज, भगजोगनी आ दीप। सीमा सेहो एहि विस्तारसँ जुड़ल अछि : कतहुँ व्याख्यात्मक संवाद बेसी अछि, कतहुँ रूपकक जाल घना, कतहुँ अन्तमे सूत्रधार नाट्यक अन्तर्ध्वनि स्पष्ट बजि दैत छथि। मुदा ई विविधताकें एकरूप प्रशंसासँ मेटि देबाक बदला कृतिसंगत मूल्याङ्कन आवश्यक अछि।

रंग-संगम • खण्ड २ • दसम सँ बारहम नाट्य-युग्म

तीन स्वतंत्र दीर्घ नाटक : मूल मैथिली आ लेखकक अंग्रेजी रंगमंचीय अनुवादक  
तुलनात्मक आलोचना

मूल संस्करण : व्याप्ति / VYAPTI; जे नाम पोथीमे नहि / The Name Not in the  
Ledger; पानिक लेखा / The Ledger of Water। तीनू द्विभाषिक लेखक-प्रमाणित  
पाण्डुलिपिमे मूल मैथिली पाठ पहिने आ अंग्रेजी पाठ बादमे अछि। स्वतंत्र पुस्तकक  
आन्तरिक पृष्ठाङ्ककें परस्पर मिलाओल नहि गेल अछि।

## नाट्य-युग्म १० : व्याप्ति

### नाट्य-विधा आ प्रमाणक उद्घाटन

‘व्याप्ति’ गङ्गेशक नव्य न्याय पद्धतिपर आधारित काल्पनिक चौदहम शताब्दीक उदयनपुरमे घटैत पूर्ण दीर्घ नाटक अछि। आरम्भक मंच-टिप्पणी स्वयं स्पष्ट करैत अछि जे ई ऐतिहासिक जीवनी नहि, दार्शनिक रूपसँ विश्वसनीय काल्पनिक नाट्यकथा अछि। एहि पहिचानक आलोचनात्मक महत्त्व अछि : गङ्गेश नामक इतिहासप्रसिद्ध दार्शनिककें पात्र बनाओल गेल अछि, मुदा अन्न-भण्डारमे आगि, नीरजक मृत्यु आ उदयनपुरक राजकीय जाँचकें प्रमाणित इतिहास कहबाक आधार एहि नाटकमे नहि अछि। कथा चारि अङ्क आ उपसंहारमे विभक्त, प्रत्येक मुख्य अङ्क चारि दृश्यक आ उपसंहार तीन दृश्यक अछि।

### प्राक्कथनक ध्वनि : बयान आ घटना बीचक दूरी

अन्हार मंचपर अनेक अनाम स्वर रातिक एक्के घटनाकें अलग-अलग टुकड़ामे सुनबैत अछि। कियो माधवकें भण्डार लग देखबाक दाबी करैत अछि, कियो धुँआक गन्धक स्मृति अनैत अछि, कियो ताला देखलक मुदा खुलल कि बन्द छल से सुनिश्चित नहि। कोनो लोक घंटी सुनल, दोसर नहि। मूल प्रसङ्गमे दृश्य-प्रत्यक्ष, श्रुति-स्मृति आ कल्पित निष्कर्ष एक दोसरमे घुलि रहल अछि। प्रकाशक छोट विस्फोट, नेपथ्यक केवाड़ी आ धुँआक प्रतिमा घटनाक दृश्य पुनरावृत्ति नहि, बिखरल साक्ष्यक नाटकीय रूप अछि।

### प्रत्यक्षक पहिल परीक्षा : माधवक रस्सी

पहिल अङ्कक पहिल दृश्यमे राजकीय अधिकारी देवधर माधव कुम्हारकें बन्हबा देबैत छथि। आरोपक आधार घटनास्थल लग उपस्थिति, कपड़ापर धुँआ, हाथक झुलसन आ पहिनुक अन्नमूल्य-विवाद अछि। मुदा माधव स्वयं पूछैत अछि जे निर्णयसँ पहिने रस्सी किएको बन्हल गेल। गङ्गेश साक्ष्य-विवेचन शुरू करबाक पहिने एहि पहिनेसँ कएल सामाजिक निर्णयपर प्रश्न उठबैत छथि। ई आरम्भ नाट्य-न्यायक एकटा मौलिक बिन्दु अछि : दोषक प्रमाण जुटेबासँ पहिने सत्ता व्यक्तिक देहकें दोषीक रूप देबय लगैत अछि।

‘देखल’ आ ‘मानल’क द्वि-पट्ट

दोसर दृश्यमे गङ्गेश दू बाँस-पट्ट बनबबैत छथि—एक पर प्रत्यक्ष ज्ञात बात, दोसर पर मानि लेल गेल बात। ईशान धुँआक गन्धकेँ आँखिसँ देखल तथ्य जकाँ लिखैत अछि; गङ्गेश सुधार करबैत छथि जे घ्राण सेहो इन्द्रिय-प्रत्यक्ष अछि, मुदा ‘गन्ध अछि’ सँ ‘गन्धक धारक आगि लगौलक’ निष्पन्न नहि होइत। छोट ताला बादमे मुख्य भण्डारक नहि निकलैत अछि। पट्टक मंचीय प्रयोग शास्त्रीय तर्कक कठिन भेदकेँ वस्तुक भाषा दैत अछि; दर्शक तर्क पढ़ैत नहि, ओकरा स्थान बदलबैत देखैत छथि।

हरिनाथक समय-पाँति आ स्मृतिक अनिश्चितता

तेसर दृश्यमे जड़ल भण्डारक सामने कोयलासँ रातिक समयरेखा खींचल जाइत अछि। हरिनाथक ‘पहर’ घड़ीक प्रत्यक्ष समय नहि, चन्द्रमा आ आदतक अनुमान कहल जाइत अछि। गङ्गेश घटना-दिनक विशिष्ट स्मृति आ ‘हम सभ राति एना करैत छी’ सन नियमित आदतक विवरणकेँ अलग करैत छथि। चाबी-गुच्छा कमरपर नहि भेटबाक कथनकेँ सेहो सावधानीसँ दर्ज करबैत छथि; ‘हेरा देल’ शब्द केकरो दोषी ठहराबय बला अतिरिक्त निष्कर्ष भऽ सकैत अछि। एहि विस्तारमे स्मृतिशास्त्र आ न्यायिक जिरहक संगम अछि।

दू ताला, एक खाली कटोरा

चारिम दृश्यमे छोट बन्द ताला आ नालीमे भेटल पैघ खुलल ताला एकहि रंगमंचपर पड़ल अछि। आकारक अन्तर अपराधक अन्तर नहि सिद्ध करैत, मुदा पहिल जाँचक अविवेक उघाइत अछि। फुलियाक मृत पुत्र नीरजक माटिक कटोरा दू तालाक बीच देखाओल गेल अछि। नाटकीय वस्तु-न्यासमे निर्जीव ताला अनुसन्धानक विषय अछि, खाली कटोरा अप्रतिस्थापनीय मानवीय क्षतिक चिन्ह। गङ्गेशक सुधारल समय-पाँति एहू बातक स्वीकार अछि जे तर्कक काज अधिक निश्चितता उत्पन्न करब नहि, अनुचित निश्चितता घटायब सेहो अछि।

अनुमानक प्रवेश : धुँआसँ दोष धरि अनुचित छलाँग

दोसर अङ्कक अध्ययन-ओसारामे ईशान पक्ष, साध्य, हेतु आ व्याप्तिक नाम लिखैत अछि। ओ माधवक विरुद्ध चारि संकेत जोड़िकऽ अपराधक निष्कर्ष मजबूत मानैत अछि। गङ्गेश आगि आ धुँआक सम्बन्धक प्रयोगमे भीजल इन्धनक शर्त आ दू दिशाक असमान व्याप्ति जाँचबैत छथि। पहिनुक निष्कर्षक कमजोरी ई अछि जे अपराधी धुँआक सम्पर्कमे भऽ सकैत अछि, मुदा धुँआ-स्पर्शी सभ मनुष्य अपराधी नहि होइत। चारि कमजोर संकेत जोड़ि देनाइ स्वतः एकटा सिद्ध सम्बन्ध नहि बनबैत।

हेत्वाभासक सार्वजनिक परिणाम : भट्ठीक तोड़फोड़

ईशानक अभ्यासवला कथन नगरमे अपूर्ण रूपमे पसरैत अछि। भीड़ माधवक कुम्हार-आँगनक माटिक पात्र तोड़ैत अछि; चारि 'हेतु'क चर्चा लोकक हाथमे पत्थर बनि जाइत अछि। माधव कहैत अछि जे आधा वाक्य दोसरक हाथमे पूरा अस्त्र बनि गेल। एहि ठाम नाटक शुद्ध तर्कसाधनाक सीमा तोड़ि ज्ञानक सामाजिक उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत अछि। व्यभिचारी हेतुकें अनुचित रीति सार्वजनिक करब केवल व्याकरण-दोष नहि; ओकर मूल्य श्रमिकक आजीविकामे चुकाओल जाइत अछि।

सपक्ष-विपक्ष आ लोकक वस्तु-बुद्धि

तेसर दृश्यमे चौकपर दीप, कालिख लागल कपड़ा आ रस्सीक तीन उदाहरणकें सपक्ष-विपक्षक जाँचमे राखल जाइत अछि। जटिला तेलिनक घ्राणज्ञान आ माधवक भट्ठी-अनुभव शास्त्रीय पदावलीक प्रतिपक्ष नहि, ओकर जाँचक जीवित साधन बनैत अछि। 'चिन्ह', 'कारण' आ 'दोष' अलग-अलग लिखल जाइत अछि। जटिला आ माधवक आर्थिक स्थिति हुनका प्रत्यक्षक निकृष्ट स्रोत नहि बनबैत; उलटा हुनकर पदार्थ-ज्ञान बिना गङ्गेशक निष्कर्ष असम्पूर्ण रहि जाइत। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ ई लोक-श्रमक बौद्धिक दृश्यता अछि।

मालतीक लेखा-पट्ट : अनुपस्थित दीपक अर्थ

मालतीक कोठलीमे चारि दीपक अपेक्षाक विरुद्ध तीनटा वस्तु भेटैत अछि। ईशान चारिम दीपक भण्डारमे होयबाक अनुमान लगबैत अछि, गङ्गेश फराक करबैत छथि

—‘एतय नहि अछि’सँ ‘ओतय अछि’ नहि निकलैत। लेखा-पट्टक संख्यासभ अन्न प्रवेश आ वितरणक अन्तर दिस ध्यान खींचैत अछि; नदीघाटक पगचिन्ह गायब भेला सँ मालतीक मृत्यु प्रमाणित नहि होइत। खाली स्थान नाटकक तर्क-विन्यासमे दू काम करैत अछि : प्रश्न बचबैत अछि आ मनमाना उत्तर रोकैत अछि।

उपमान : तालासाज, पदचिह्न आ तुलना-संकट

तेसर अङ्कमे वृद्ध ताला-साजक वस्तुज्ञान मुख्य तालाक बनावट चिन्हबैत अछि, मुदा ‘सदैव’क दावासँ बचैत अछि। नदी-घाटपर बालूक पदचिह्न चिह्नन माटिपर ओझरा जाइत अछि; एहिसँ मनुष्य नदीमे उतरल—ई निष्कर्ष अनिवार्य नहि। नव्य न्यायमे उपमानक प्रसङ्ग एतय केवल ‘एकटा जकाँ दोसर’ कहबाक अभ्यास नहि, तुलना कब तक वैध अछि तकर मंचीय परीक्षा अछि। ठोस उदाहरणक एतेक विस्तार कखनो गतिमे विराम अनैत अछि, मुदा दर्शककें जाँचक प्रक्रिया बुझबैत अछि।

तीन सम्भावित क्रम : तर्कक पुनरभिनय

राजकीय भण्डारक जड़ल मंचपर आगिक तीन सम्भावित क्रियाक्रम पुनरभिनीत होइत अछि। मुखहीन पात्र, दीप, भुस्सा, बोरा आ ताला अलग प्रकाशरेखामे फेर सजैत अछि। गङ्गेश एखन ‘कर्ता’ नाम देबाक बदला पूछैत छथि जे कोन सम्भावना लेल कोन अतिरिक्त क्रिया आवश्यक अछि। आगिक आरम्भक जाँच आ नीरज बाहर किएक नहि निकलि सकल तकर जाँच अलग मानल जाइत अछि। ई विभाजन अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि : दुर्घटना, अवरोध, लापरवाही आ जानि-बुझि कएल हिंसा एक शब्दमे नहि समा सकैत अछि।

देरीक संरचना : बन्द केवाड़ी, समय आ जीवन

तेसर अङ्कक अन्तिम दृश्यमे उत्तर निकासक स्थिति आ घंटीक व्यवस्था नीरजक जीवित बचबाक सम्भावनाक संग जुड़ैत अछि। एक नाबालकक मृत्युकें केवल आगि लगेनिहारक नामसँ समझबाक प्रयास अपर्याप्त देखाओल गेल अछि। केवाड़ी बन्द छल, चाबी ककर लग छल, चेतावनीक ध्वनि कखन बन्द भेल, बचावमे कोन देरी भेल—एहि समस्त प्रश्नक सम्बन्ध अपन-अपन प्रमाण माँगैत अछि। नाटक अहाँकें अपराध-एकत्वक

लालचसँ दूर राखैत अछि : कतेको स्वतंत्र दायित्व एकहि परिणाममे सम्मिलित भऽ सकैत अछि।

शब्दप्रमाण : मालतीक जीवित उपस्थितिक झटका

चारिम अङ्कमे मालती स्वयं लौटैत अछि। पहिनुक नदीघाटक व्याख्या आ मृत्यु-संशयक आधार बदलि जाइत अछि। गङ्गेश तीन कथनकर्ताक परीक्षणमे केवल कथनक सत्य नहि, वक्ताक ज्ञान-स्रोत, प्रसङ्ग आ अभिप्राय जाँचैत छथि। मालती स्वीकार करैत छथि जे चाबी-गुच्छा लेने छलीह आ नीरजकेँ भीतर रुकबाक कहलनि; मुदा स्वीकारोक्तिक सीमा एहि तथ्यसँ स्वतः 'जानि-बुझि हत्या' नहि बनैत। ई नाटकक सर्वाधिक संयत दार्शनिक निर्णयसभमे सँ एकटा अछि।

सात सय बीस, चारि सय अस्सी आ दू सय चालीस

अन्नक प्रवेश-पर्चीक कुल ७२० आ प्रकाशित दैनिक सारक ४८०क अन्तर २४० अछि। गङ्गेश स्वतन्त्र हाथसँ जोड़ दोहरबबैत छथि; आ राजकीय लेखाक तीन अलग स्रोत तुलना करबैत छथि। देवधर किछु अन्नकेँ गोपनीय रक्षार्थ अलग रखबाक कथन करैत छथि। मुदा 'राजक बचाव'क कारण स्वयं नैतिक पर्याप्तता नहि सिद्ध करैत; फुलियाक खाली कटोरा बतबैत अछि जे अभिलेखीय वर्गीकरणक असर भुखमरीक देहपर पड़ैत अछि। एहि स्थलपर सांख्यिकी कथामे मानवीय क्षति लुकाएब आ उघाड़ब दुनू सम्भव अछि।

दीप, चाबी आ बही : साझेदारीक दोष

मालतीक बयानमे लेखा छानबीन, नीरजक उपस्थिति, दीपक सँलग्नता आ चाबी-गुच्छाक अनिश्चित गन्तव्य अलग-अलग उघड़ैत अछि। देवधरक बन्द-निकास आदेश आ हरिनाथक पहराक कमजोरी सेहो अलग दायित्व अछि। खण्डित प्रमाणसभ जोड़बाक संग एकटा मनुष्यपर समस्त अपराधक भार धर देबाक सम्भावना नाटक निरन्तर रोकैत अछि। माधवक विरुद्ध आगजनीक आधार समाप्त भेला पर ओकर बन्धन खुलैत अछि; मुदा ई मुकदमा नीरजक मृत्युकेँ निष्प्रभावी करैत नहि। न्यायिक मुक्ति आ नैतिक क्षति दू अलग समापन अछि।

अभाव : जे अनुपस्थित अछि, ओकरा कतेक अर्थ?

उपसंहारक तीन दृश्यमे राज्य एक अपराधी आ एक वाक्यक निर्णय चाहैत अछि, जखन गङ्गेश अनिर्णीत कथनक पृथक सूची बनबबैत छथि। कटि गेल घंटी-रस्सीक कर्त्ता, चाबीक अन्तिम गन्तव्य आ किछु अग्निसम्बन्धी कड़ी अप्रमाणित रहैत अछि। 'नीरज नहि अछि', 'कटोरामे पानि नहि अछि' आ 'आवश्यक अभिलेख नहि भेटल'—एहि तीन अनुपस्थितिक आश्रय आ अपेक्षा अलग अछि। अभाव-मीमांसाक ई नाट्यरूप संस्कृत शास्त्रीय पदावलीकें मानवीय अर्थ दैत अछि।

फुलिया : दुःख तथ्य नहि, प्रश्नाधिकार अछि

फुलिया अपन बालकक मृत्युक साक्षी मात्र नहि; ओ राजकीय लेखाक प्राथमिकता बदलबाक नैतिक दबाव दैत छथि। गङ्गेश अन्तमे मानैत छथि जे दुःख स्वयं प्रमाण नहि, मुदा जकर जीवन टूटल ओकर प्रश्नकें 'भावना' कहि निकालल नहि जा सकैत। दू कटोरा—एक नीरजक खाली आ दोसर अगिला बच्चाक भरैत—एहि परिवर्तनक निर्मम दृश्य-संकेत अछि। खाली कटोराकें औपचारिक श्रद्धाञ्जलि बनाबय सँ अधिक महत्वपूर्ण नव वितरण-पद्धतिक सुधार अछि। एहि कारण करुणा जाँचक शत्रु नहि, दायित्वक स्मारक बनैत अछि।

मञ्चीय उपलब्धि आ सीमा

अंगीठी, कोयलाक पट्ट, ताला, रस्सी, माटिक दीप आ कटोराक पुनरागमन दृश्य-प्रमाणकें नाटकक स्वतन्त्र व्याकरण दैत अछि। पहिने नेपथ्यक आवाजक बहुलता आ अन्तमे सार्वजनिक नामपुकारक स्पष्टता सुनब-विचारक रूपान्तर अछि। मुदा चारि अङ्कक प्रत्येक दृश्य तर्कक भिन्न चरणक शिक्षात्मक प्रदर्शन करैत अछि; मञ्चनमे अति-व्याख्या अभिनयक आवेग कम कऽ सकैत अछि। विराम, दृश्य-वस्तु आ फुलियाक मौनक उपयोग बिना ई कृति व्याख्यान जकाँ बुझाएबाक खतरा राखैत अछि।

अंग्रेजी रूपान्तरक सत्यापित साम्य

लेखकक अंग्रेजी रूपान्तरमे ACT I—PERCEPTION, ACT II—  
INFERENCE, ACT III—COMPARISON, ACT IV—TESTIMONY आ

EPILOGUE—ABSENCEक क्रम मैथिली मूलक प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द आ अभावसँ मेल खाइत अछि। PHULIYA, MADHAV, MALATI, ISHAN आ GANGESAक निर्णायक दृश्य, 720–480क अन्तर, ताला आ अन्तिम दू कटोराक प्रतिमा रूपान्तरमे सुरक्षित अछि। तथापि 'व्याप्ति', 'उपाधि' आ 'अभाव'क शास्त्रीय परिभाषा केवल अंग्रेजी सामान्य पदसँ पूर्णतः हस्तान्तरित नहि होइत; पाठकलेल व्याख्यात्मक सन्दर्भ उपयोगी हो सकैत अछि। एहि सीमाकेँ कथात्मक लोप नहि कहि सकैत छी।

अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय

'व्याप्ति'क उपलब्धि शास्त्रक जटिल शब्दक भीतर सामाजिक जीवन रोपब अछि : प्रत्येक गलत हेतु मनुष्यक देहपर चोट करैत अछि, प्रत्येक छूटल नाम अन्न-वितरणक प्रश्न उठबैत अछि। नाटक दार्शनिककेँ सर्वज्ञ न्यायाधीश नहि बनबैत; गङ्गेश स्वयं जल्दी आ अनन्त संशय दुनूक सीमा मानैत छथि। अन्तिम खाली पाँति आरम्भक अविवेकसँ भिन्न अछि—अब ई झूठ नहि लिखबाक सचेत चयन अछि। कृतिक सीमा शिक्षात्मक विस्तारक अधिकता अछि; ओकर कलात्मक विजय ई जे दर्शन अन्ततः मृत बालकक अनुपस्थिति आ जीवित बालकक भोजन समक्ष अपन उत्तरदायित्व स्वीकार करैत अछि।

'व्याप्ति' : नाट्य-प्रमाण पञ्जी

| मूल अङ्क/तरंग               | मूल पाठसँ सत्यापित नाटकीय क्रिया आ आलोचनात्मक संकेत                       |
|-----------------------------|---------------------------------------------------------------------------|
| प्राक्कथन : संशय            | अनाम परस्पर-विरोधी आवाजसभ; आगि, ताला, घंटी, माधव आ नीरजक मृत्यु।          |
| अङ्क १ : प्रत्यक्ष; ४ दृश्य | माधवक रस्सी; देखल/मानल पट्ट; समयरेखा; छोट आ पैघ तालाक भेद।                |
| अङ्क २ : अनुमान; ४ दृश्य    | धुँआ—आगि व्याप्तिक सीमा; भट्ठीक तोड़फोड़; सपक्ष-विपक्ष; मालतीक लेखा-पट्ट। |
| अङ्क ३ : उपमान; ४ दृश्य     | तालासाजक वस्तु-ज्ञान; नदीघाटक                                             |

|                         |                                                                                       |
|-------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------|
|                         | पगचिन्ह; तीन पुनरभिनीत सम्भावना;<br>बन्द निकास आ देरी।                                |
| अङ्क ४ : शब्द; ४ दृश्य  | मालतीक वापसी; कथनकर्ताक अभिप्राय;<br>अन्नक ७२०/४८०/२४०; दीप—चाबी—<br>बही।             |
| उपसंहार : अभाव; ३ दृश्य | एक अपराधीक माँगक प्रतिवाद; अनिर्णीत<br>तथ्य; नीरजक खाली कटोरा आ अगिला<br>बच्चाक भोजन। |

नाट्य-युग्म ११ : जे नाम पोथीमे नहि

रचना-रूप : तरंगक बद्धैत अर्थ

‘जे नाम पोथीमे नहि’ पाँच तरंगक कुल चौबीस दृश्य आ एकटा पूर्वरंगमे रचल द्विभाषिक दीर्घ नाटक अछि। पहिल ‘स्वर’मे चारि दृश्य, दोसर ‘सभा’मे पाँच, तेसर ‘नाम’मे पाँच, चतुर्थ ‘जल’मे पाँच आ पाँचम ‘शेष स्वर’मे पाँच दृश्य अछि। तरंगक नाम केवल अध्याय-विभाजन नहि : मौखिक पद, वंशावली, ऐतिहासिक अभिलेख, स्त्रीक स्वीकृति आ बाढ़िक धारा क्रमशः एक-दोसराक अर्थ बदलैत अछि। कोसीक काल्पनिक उत्तरसार गाममे जतनाइ आ जिआबय लेल आपसी निर्णयक तात्कालिकता सभ साहित्यिक विवादकें व्यवहारक कसौटीपर आनैत अछि।

पूर्वरंग : लिखलासँ पहिने तीन स्त्री-स्वर

अन्हारमे तीन स्वर ‘नाम’, ‘नाम लिखू’, ‘नाम बिसरू नहि’ अलग-अलग कहैत अछि। पुरान धुनपर नव पदमे कागद भीजब, मसि बहब आ मायसँ नातिन धरि स्वरक संचार उपस्थित अछि। गीत समाप्त होएबाक पहिने ध्वनि-अंकन यन्त्रक लाल बत्ती जरैत अछि। आरम्भसँ नाटक अपन मुख्य प्रश्नक मंचीय समाधान खोजैत अछि : लिखित प्रतिलिपि आ जीवित कण्ठमे कोन मूल, कोन परिशिष्ट? लाल बत्ती स्मृतिक रक्षक सेहो अछि, अनुभवक चयनकारी अवरोध सेहो।

धनमन्तीक खाँसी : जीवित कण्ठक अपूर्णता

पहिल तरंगक पहिल दृश्यमे माधवी ध्वनि-अंकनमे धनमन्तीक खाँसी काटि अलग राखबाक विचार करैत छथि। धनमन्ती प्रतिवाद करैत छथि जे गीतमे घुसल साँस आ खाँसी सेहो ओहि स्वरक अनुभव अछि। एतय संरक्षणक वैज्ञानिक पद्धति आ प्रदर्शकक सम्पूर्ण देह एक-दोसराक विरोधी नहि, मुदा निरन्तर वार्तालापमे छथि। धनमन्ती अनुलिपिक शुद्धता सँ पहिने गीत गाबयवला व्यक्तिक स्वायत्तता माँगैत छथि; माधवी धीरे-धीरे यन्त्र बन्द कऽ बिना रिकॉर्डिंग पहिने सुनबाक सीखैत छथि।

भणिताक द्वैध : विद्यापतिक नाम

धनमन्तीक गाओल 'काँचहि चान'क रूपमे अन्तिम भणिता कखनो छैक, कखनो नहि। पुरान प्रतिलिपिमे 'विद्या' आ सम्भावित 'पति'क अलग मसि अथवा हाथक प्रश्न उठैत अछि। प्रभाकर मिश्र स्पष्ट करैत छथि जे नकलमे नाम भेटब रचनाक काल आ लेखकत्वक अन्तिम प्रमाण नहि। माधवी आधुनिक विद्वानक प्रतिष्ठित विद्यापति-चरित्र नकारैत नहि, मुदा सभ मौखिक पद ओहि एक जीवनमे धकेलि देबाक विरोध करैत छथि। नाटकक प्रश्न दू भिन्न लेखकक अस्तित्व सिद्ध करब नहि; अनिश्चित लेखकत्वकेँ झूठे निश्चिततामे बदलबाक परहेज अछि।

पञ्जीकार हरिनाथ आ सुमेधाक निर्णयाधिकार

हरिनाथक वंशावली-पोथी सुमेधा आ अभयक प्रस्तावित विवाहक शाखाक समता जाँचबाक माध्यम बनैत अछि। वंशावलीक 'सरिसव' आ अभयक परिवारक 'सरिसब-पाही' एके भौगोलिक नाम अछि वा नहि, तकर पुरान पन्ना आ सम्बन्ध जाँचल शेष अछि। सुमेधा एहि रिक्तिक आधारपर अपना पक्षमे कल्पना नहि चाहैत छथि, आ रोकबाक पक्षमे सेहो कल्पना नहि चाहैत छथि। प्रमाणक अभावकेँ स्त्रीक वर्तमान सम्मतिक अभावक बराबर मानब नाटक स्पष्टतः अस्वीकार करैत अछि।

इतिहासकार प्रभाकरक दू तराजू

प्रभाकर स्रोतक लिपि, काल, प्रतिलिपि आ प्रमाणशृंखलाक निरीक्षण करैत छथि; धनमन्ती गीतक जीवनोपयोगी 'वजन' पूछैत छथि। अन्ततः दू तराजू—ऐतिहासिक तिथिक सत्यापन आ लोक-गीतक जीवित काज—अलग राखबाक सहमति बनैत अछि। ई विभाजन लोकस्मृतिक साक्ष्यकेँ स्वतः ऐतिहासिक दस्तावेज नहि बनबैत; तहिना ऐतिहासिक तिथि अनिर्णीत रहलासँ लोकस्मृति अर्थहीन नहि होइत। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक लेल एहि व्यावहारिक प्रमाण-विवेकक महत्त्व अछि।

विद्यालयक सार्वजनिक सभा : तकनीकी प्रमाण बनाम लोकनिर्णय

दोसर तरंगमे विद्यालयक ओसारा बाढ़ि-आश्रय आ विवाह-परामर्शक सार्वजनिक स्थल बनैत अछि। इतिहासकार कहैत छथि जे भीड़ लिपि-परीक्षणक स्थान नहि लऽ

सकैत, माधवी कहैत छथि जे विशेषज्ञ समाजक जीवननिर्णयक स्थान नहि लऽ सकैत छथि। ई नाटक ककरो मत केवला 'जन' अथवा 'विशेषज्ञ' कहि अन्तिम नहि बनबैत। कोन प्रश्न तकनीकी अछि आ कोन प्रश्न स्त्रीक जीवनपर शासन करबाक अधिकारसँ सम्बन्धित अछि—ई सीमा पात्रसभक विवेकसँ बदलैत रहैत अछि।

सभाक भीतर दोसर सभा : अभिनयमे विचारक रूपान्तरण

बिजली झपकिते पात्रसभक देहक मुद्रा बदलि जाइत अछि; सभाक भीतर दोसर प्रतीकात्मक सभा शुरू होइत अछि। मंचसज्जा बदलेने बिना प्रश्न प्रतिध्वनि बनैत अछि : एक पाण्डुलिपि अनेक प्रतिक आधार हो तँ स्वतंत्र प्रमाणक संख्या की? मौखिक रूप बदलत तँ ओकर अर्थ की? एही काल मे स्त्रीक लिखित नाम कम भेटलासँ हुनकर ज्ञान कम छल—ई निष्कर्ष अस्वीकार होइत अछि। मंचीय पुनःरचना नाटकमे शास्त्रार्थक आधुनिक रूप अछि; एहन प्रयोग ठोस अभिनेता-संयम माँगैत अछि।

'एखन नहि' : स्त्रीक वैध उत्तर

सुमेधा प्रस्तावित विवाहक विषयमे 'हाँ' अथवा 'नहि'सँ अतिरिक्त 'एखन नहि'क अधिकारक स्पष्ट घोषणा करैत छथि। अभयक पिता फोनपर प्रश्नकें 'लड़कीक पक्ष'क दोष बनबैत छथि, मुदा सुमेधा ओकरा दू परिवारक साझा स्रोतगत अनिश्चितता कहि सुधार करबबैत छथि। नाटक स्त्रीक मौनकें आज्ञापालन नहि, अनिर्णीत सहमतिक अर्थ देत अछि। अन्तिम निर्णय स्थगित करब एहि प्रसङ्गमे निष्क्रियता नहि; मिथ्या प्रमाणक बलपर विवाह अथवा निषेध दुनू टारबाक सचेत क्रिया अछि।

फेकन सहनी : नदीक ज्ञानक प्राथमिकता

विद्यालयक फर्शपर पानि चढ़ैत अछि। नाविक फेकन बाँसपर जलस्तरक निशान रखैत छथि; सूचना-दावा आ धारक प्रत्यक्ष परिवर्तनक अन्तर बुझबैत छथि। ओ बालक, वृद्ध, सूखल वस्त्र, दवा आ आश्रयकें पोथीसँ पहिने ऊपर पठबय कहैत छथि। हरिनाथ पोथी टेबुलक नीचाँ सरका दैत छथि। ई छोट दृश्य शास्त्र-विरोध नहि, जीवित मनुष्यक रक्षा-पहिल निर्णय अछि। एहि नाटकमे प्रत्यक्ष ज्ञानक एकटा स्थल श्यामपट्ट अछि, दोसर वास्तविक नाव।

रिक्त वंश-पाँति : अनुपस्थिति अनिवार्य निषेध नहि

तेसर तरंगमे पञ्जीक एक पाँति अखण्ड अछि मुदा नाम रिक्त। कागज फाटल नहि, मसि मेटल नहि; तइयो रिक्त स्थानक अभिप्राय निश्चित नहि। कियो बादमे भरबाक जगह छोड़ने हो सकैत, कियो जानि-बुझि दबौने हो सकैत। धनमन्ती स्त्रीक नाम 'अमुकक पत्नी' अथवा 'कन्या' रूपेँ सीमित रहबाक प्रश्न उठबैत छथि। ई सामाजिक अभिलेखमे स्त्रीक अस्तित्व आ ओकर लिखित पहिचानक बीच दूरीक सूक्ष्म मंचीय रूप अछि।

शब्द 'ना'सँ 'नाम' : सामूहिक लेखन

धनमन्ती थाकल हाथसँ श्यामपट्टपर 'ना' लिखैत छथि; सुमेधा अगिला 'म' जोड़ैत छथि। आधा पुरानी पीढ़ीक हाथ, आधा नब पीढ़ीक हाथ। ई क्रिया संग्रहालयक प्रदर्शन नहि, अस्वीकृतिक 'ना' आ पहिचानक 'नाम'क अर्थ-सन्निकर्ष अछि। एहि नाट्य-क्षणमे नामकरणक कर्तृत्व एक गोट अभिजात लेखकसँ हटि स्त्रीक साझा अनुभवमे फैलैत अछि; मुदा प्रश्न एखन रहैत अछि जे ओ नाम वास्तवमे केकर आ ककर अनुमति सँ लिखल गेल।

गीतक अभिलेखीय वर्णन आ प्रमाणक चारि श्रेणी

माधवी पदक अस्थायी अभिलेखीय विवरणमे पाण्डुलिपि-साक्ष्य, भाषिक संकेत, मौखिक वंश आ प्रदर्शन-स्मृति अलग करैत छथि। प्रभाकर सावधान करैत छथि जे चारुक वजन बराबर नहि। मूल पाण्डुलिपि अनुपलब्ध रहिते नकलक पानिपर क्षति भेला सँ 'पति'क सम्भावित पठन आरो कठिन होइत अछि। आलोचक लेल एहि स्थलपर महत्त्वपूर्ण बात कोनो विद्यापति-कालक नव घोषणा नहि; 'लेखकत्व अनिश्चित' लिखबाक कठोर बौद्धिक अनुशासन अछि।

बाढ़ि जखन कागज बनाम बच्चा चुनबबैत अछि

चतुर्थ तरंगमे नावक पहिल फेरामे एक स्त्री अपन कागजी बस्ता बचाबय चाहैत छथि; फेकन बच्चाक देह आ बस्तामे चयनक आग्रह करैत छथि। नावमे नाम पुकारि बच्चासभक 'छी' उत्तरसँ बचल प्राणक गणना होइत अछि। ई जाँच वंशावलीक मृत अथवा अनुपस्थित नामक उलट रूप अछि। मंच पर नाव अपेक्षाकृत स्थिर रहैत अछि आ

प्रकाशमे विद्यालय पाछाँ सरकैत अछि; न्यून साधनसँ धारा आ गतिक प्रभाव बनैत अछि।

लेखाजोखासँ बाहर रहबाक चाहना : यन्त्रक विराम

चतुर्थ तरंगक एक स्थानपर धनमन्ती पुनः गबैत छथि, माधवी जानि-बुझि ध्वनि-अंकन बन्द रखैत छथि। ओ कहैत छथि जे सभ क्षणकँ प्रमाण बनाओल गेल तँ जिअबाक लेल किछु शेष नहि रहत। एहि निर्णयक आलोचनात्मक कठिनाई अछि : जीवित कण्ठ अनुपस्थित भेलापर नब पीढ़ी की सुनत? नाटक एकर सरल उत्तर नहि देत; ई दस्तावेज बनबयक नैतिक इच्छा आ व्यक्ति-सम्मानक बीच संतुलनक प्रश्न बचबैत अछि।

धनमन्तीक मृत्यु आ कथनक परिशुद्धता

भोरमे चिकित्सकक परीक्षणक बाद धनमन्तीक मृत्यु घोषित होइत अछि। नाटक तुरन्त निजी दुःखकँ साहित्यिक अमरत्वक घोषणामे नहि बदलैत। मृत्यु-सूचना, समय, कागद आ बचल आवाजक भिन्न साक्ष्य अलग मानल जाइत अछि। 'सभ अंकित नहि होइत' कहबाक बाद माधवीक मौन एकटा महत्वपूर्ण अन्तर्नाटकीय नैतिक सीख अछि। धनमन्तीक अभिलेख बचल अछि, मुदा धनमन्ती ओकर समतुल्य वस्तु नहि छथि।

भीजल अक्षर आ प्रश्नचिह्नक स्थान

पाँचम तरंगमे भीजल पन्नाक मध्य बचैत अछि, भणिताक किछु अक्षर धुँधला पड़ैत अछि। प्रभाकर 'अपठनीय'क स्थानपर मनमाना पाठ नहि रखैत छथि। हरिनाथक पञ्जीमे प्रश्नचिह्नक खाना नहि छल; सुमेधा ओकरा बना लेबाक कहैत छथि। ई छोट चिह्न संस्करण-विज्ञानक गम्भीर नाटकीय प्रतिमा अछि : सम्पादकक ईमानदारी केवल सिद्ध पाठ बचेनाइ नहि, पाठककँ अनुमानक सीमा देखेनाइ सेहो अछि।

स्थगित विवाह : निक निर्णय बिना अन्तिम निर्णय

नाटकक पाँचम तरंगमे विवाहक बारेमे हरिनाथ न अनुमोदनक कल्पित कागज दैत छथि, न निषेधक। सुमेधा कहैत छथि जे निर्णय नहि भेटल, मुदा गलत निर्णय सेहो नहि भेटल। समाजक प्रचलित वंश-संबन्धी नियमपर वैधानिक वा धार्मिक अन्तिम घोषणा

नाटकक प्रमाणसँ बाहर अछि। रचनामे अधिक महत्वपूर्ण विवेक ई अछि जे स्त्रीक सम्मति, संशय आ लिखित वंश-निषेधक क्षेत्र अलग ठहरत, अन्यथा व्यक्ति समाजक अनिर्णीत दस्तावेजक कैदी बनि जाइत।

अन्तिम स्वर : स्वयं लिखल पद आ नीलूक नाम

अन्तिम दृश्यमे सुमेधा श्यामपट्टपर अपन नव चारि पाँति लिखि स्वयं लेखकत्व स्वीकार करैत छथि। ई धनमन्तीक अधूर पदक नकल नहि। नीलू बच्ची अगिला स्वर बनि अपन नाम स्वयं कहैत अछि; ओकर पूरा नाम दर्शकसँ अस्पष्ट राखल गेल अछि, यन्त्र एकरा ग्रहण करैत अछि। किछु पाठक लेल ई नब अभिलेखक सन्दिग्ध पारदर्शिता बनि सकैत अछि—अखिर दर्शक नाम नहि सुनैत—मुदा कलात्मक आशय स्पष्ट अछि : नामकें जीवित व्यक्तिक अधिकार मानब, मात्र दर्शकक जिज्ञासाक सम्पत्ति नहि।

तीन स्त्री-स्वर आ संगठित मञ्चनीयता

त्रिस्वरी कोरस नाटकक आरम्भ, आश्रय-राति, शोक आ अन्तमे अलग-अलग कार्य करैत अछि। ध्वनि-अंकनक लाल बत्ती, श्यामपट्ट, फाटल चाक, भीजल पन्ना, नावक डाँड़ आ जलस्तरक निशान दार्शनिक प्रश्नकें बारम्बार दृश्य-अनुभवमे बदलैत अछि। चौबीस दृश्यक दीर्घता आ स्त्री-स्वरक पुनरावृत्ति प्रदर्शनमे संक्षेप आ संगीत-विरामक माँग कऽ सकैत अछि। मुदा गीतक अर्थ समझएबाक लेल एकरेखीय व्याख्यान नहि—पीढ़ी दर पीढ़ी देल गेल आवाजक संरचना—ई नाटकक विशिष्टता अछि।

लेखकक अंग्रेजी रूपान्तर : गद्य, गीत आ दृश्य

अंग्रेजी 'The Name Not in the Ledger'मे Prelude, First Wave—Voice, Second Wave—Assembly, Third Wave—Name, Fourth Wave—Water आ Fifth Wave—The Remaining Voice मूल तरंग-विन्यासक अनुगमन करैत अछि। DHANMANTI, MADHAVI, SUMEDHA, ABHAY आ प्रभाकरक विवाद, नावमे नामपुकार आ नीलूक अन्तिम उपस्थिति सुरक्षित अछि। 'पोथी'क एकसाथ पुस्तक, वंशावली आ सामाजिक अधिकार-सूचक

अर्थ English 'ledger'मे विशेष रूपेँ अभिलेखीय बनैत अछि; एहि चयनसँ शीर्षकक भिन्न सांस्कृतिक छाया स्पष्ट होइत अछि, मुदा नाट्यक्रम लुप्त नहि होइत।

विचार आ नाट्यगत सीमा

कृतिक सबसे गम्भीर उपलब्धि प्रतिरोधक दू स्तरक मिलन अछि : प्रसिद्ध कविनामक अनिश्चितता आ एक जीवित स्त्रीक वैध 'एखन नहि'। नाटक लोकगीतकेँ स्थिर मूल ग्रन्थ नहि बनबैत, परम्परामे परिवर्तन स्वीकार करैत अछि। तथापि कतेको पात्र प्रमाणक मर्यादा पर एतेक सावधानीसँ भाषण करैत छथि जे संवाद कहियो-कहियो विद्वत् गोष्ठी जकाँ लगैत अछि। जलक बढ़ैत दबाव, नावक शारीरिक संकट आ धनमन्तीक विनोदी बोली एहि वैचारिक स्थिरताकेँ तोड़ैत अछि। अन्तिम रिक्त पाँति अज्ञानक पराजय नहि; आगामी स्वर लेल आरक्षित जिम्मेदारी अछि।

'जे नाम पोथीमे नहि' : पाँच तरंगक दृश्य-पञ्जी

| मूल अङ्क/तरंग                  | मूल पाठसँ सत्यापित नाटकीय क्रिया आ आलोचनात्मक संकेत                               |
|--------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------|
| पूर्वतरंग                      | तीन स्त्री-स्वर; नामक आह्वान; भीजल कागद आ ध्वनि-अंकनक लाल बत्ती।                  |
| पहिल तरंग : स्वर; ४ दृश्य      | धनमन्तीक गीत, हरिनाथक पोथी, प्रभाकरक पठन, भणिताक अनिश्चितता।                      |
| दोसर तरंग : सभा; ५ दृश्य       | विद्यालयक आश्रय; सार्वजनिक वंश-जाँच; सभाक भीतर सभा; सुमेधाक 'एखन नहि'; जलस्तर।    |
| तेसर तरंग : नाम; ५ दृश्य       | पञ्जीक रिक्त नाम; भाषिक एवं पाण्डुलिपिक साक्ष्य; 'ना' आ 'म' लिखबाक साझेदारी।      |
| चतुर्थ तरंग : जल; ५ दृश्य      | नावक बचाव-फेरा; नामपुकार; कागद-बचाव आ जीवन-बचावक प्राथमिकता; धनमन्तीक अन्तिम समय। |
| पाँचम तरंग : शेष स्वर; ५ दृश्य | धनमन्तीक मृत्यु; भीजल अक्षर; विवाह स्थगित; अभिलेखीय प्रश्नचिह्न; सुमेधाक          |

|  |                    |
|--|--------------------|
|  | नव पद आ नीलूक नाम। |
|--|--------------------|

## नाट्य-युग्म १२ : पानिक लेखा

विन्यास : जिलाक अभिलेख-घरमे पाँच अङ्क

‘पानिक लेखा’ पाँच अङ्क आ चौदह दृश्यसँ बनल पूर्ण दीर्घ नाटक अछि। मंचक प्रधान स्थान पुरान जिला अभिलेख-घर आ ओकर ऊपरक कोठली अछि। पहिल अङ्कमे चारि दृश्य, दोसरमे तीन, तेसरमे तीन, चारिममे दू आ पाँचममे दू दृश्य अछि। पहिने जल छतसँ टपकैत अछि, क्रमशः सीढ़ी चढ़ैत अछि, अन्तमे गामक जीवित लोकक प्रवाह बनि जाइत अछि। एहि भौतिक गति सँ प्रशासनिक अभिलेख, नापजोख आ आह्वानक नाटकीय समय जुड़ैत अछि। पानिक बढब कथा आगाँ बढेबाक केवल युक्ति नहि, निर्णयक विलम्बक प्रत्यक्ष जोखिम अछि।

रहमान आ मालती : कागदक मरम्मत आ नामक मरम्मत

आरम्भक दृश्यमे रहमान जिल्दसाज भीजल पन्ना अलग करैत छथि आ मालती संचिका ऊपर राखैत अछि। कागज फटिते एक नामक आधा हिस्सा दू पन्नामे बाँटि जाइत अछि। ‘कागद’ आ ‘नाम’क सम्बन्ध एहि दृश्यसँ मानवीय प्रश्न बनैत अछि। छतक चुबब, विभागसभक परस्पर दावा आ मरम्मतक प्रशासनिक विलम्ब हलुक हास्य उत्पन्न करैत अछि; मुदा बाढ़िक रातिमे ई हास्य व्यवस्था-सम्बन्धी संकट बनि जाइत अछि। सरकारी वस्तुकेँ बचाबयवला श्रमिकक ज्ञान कृतिक उद्घाटन-स्वर अछि।

लछमीक नदीज्ञान : प्राण पहिने, मानचित्र बादमे

लछमी सहनी जलस्तर, घाट आ नावक उपलब्धता प्रत्यक्ष अनुभवनिहार पात्र अछि। सरकारी सन्देशक अस्पष्ट सावधानीक विरुद्ध ओ कहैत छथि जे जेकर घर नीचाँ ओकरा ऊपर पठाउ, जेकर घर ऊपर ओ जगह बाँटय। टावर बन्द, विद्यालयक चाबी अनुपलब्ध आ मुखियाक अनुपस्थितिक बीच लछमीक निर्णयतत्परता प्रात्यक्षिक प्रशासन अछि। एहि नाटकमे नाविक ककरो नीतिगत व्याख्यान नहि दैत, मुदा जलक सत्यक निकट होयबाक कारण ओकर प्रत्येक सूचना मानचित्रक रेखाक परीक्षण करैत अछि।

ईशानक प्रवेश : आधुनिक सर्वेक्षणक अस्थिर आधार

पहिल अङ्कक दोसर दृश्यमे जल-संसाधन सर्वेक्षण-दलक ईशान मिश्र आधुनिक नक्शा लऽ अबैत अछि। मालती परिचय-पत्रक जाँच करैत अछि; आपदा-क्षण सेहो अभिलेखीय अनुशासनकें समाप्त नहि करैत। पुरान पञ्जी आ नब मानचित्रमध्य बसावट, सीमा आ पुनर्वासक अन्तर उभरैत अछि। ईशानक आरम्भिक विश्वास गणना-उपकरणमे अछि, मुदा ओ धीरे-धीरे बुझैत अछि जे नक्शा ठोस धरतीक पूर्ण प्रतिरूप नहि। नाटक आधुनिक तकनीककें नकारैत नहि; ओकर पूर्वधारणा, स्रोत आ अनिश्चितताक सीमाकें उघारैत अछि।

सोना पासवान : जे स्थान सूचीमे नहि अछि

तेसर दृश्यमे विद्यालयसँ आयल सोना पासवान अपन पिताक कागज आ मौखिक स्मृति संग अबैत अछि। ओहि कागजमे जन्मल टोला वर्तमान नक्शासँ अनुपस्थित अछि। ईशान मानैत अछि जे नक्शा पूरा संसार नहि, मुदा सोना बतबैत अछि जे मुआवजाक समय संसार नक्शाए बनि जाइत अछि। एहि संवादमे प्रशासनिक वर्गीकरण आ नागरिकक वास्तविक अधिकारक बीच दारुण दूरी अछि। सोना 'अपन टोला घुराउ' मात्र नहि कहैत; ओ अप्राप्त मान्यता सँ जुड़ल सामाजिक अस्तित्वक प्रश्न उठबैत अछि।

बी-४क दू नक्शा : रेखाक भिन्नता, धरतीक एकता

जड़ल आलमारीक पछिला भागमे मोमबन्द पुड़िया भेटैत अछि। मालती आ सहकर्मी बरामदगीक समय, स्थल, आवरण आ छुबनिहारक क्रम दर्ज करैत छथि; राति नौ बजि सैंतीस मिनटक घड़ी सेहो साक्ष्यक अंग बनैत अछि। पुड़ियामे बी-४क पुरान नक्शा आ बदलल रेखाक दस्तावेज भेटैत अछि। सोना कहैत अछि—दू नक्शा, मुदा धरती एके। मालतीक उत्तरक आशय ई जे धरतीक भौतिक एकता प्रशासनिक निर्णयक नैतिक एकता सुनिश्चित नहि करैत; रेखा बदलिते अधिकारक स्थान बदलि सकैत अछि।

प्रमाण-शृंखला : चित्र, मोहर आ छुबबाक नियम

नाटक दू दस्तावेजक खोजकेँ तुरन्त अपराध-प्रमाण घोषित नहि करैत। संरक्षण-पत्र, चारु दिससँ चित्र, समय-संकेत आ वस्तु उठेबाक क्रम जाँच-पद्धतिक नाटकीय क्रिया अछि। पुरान मोहरक अस्पष्ट अक्षर, कपड़ाक परत आ कागदक नमी पाठककेँ ओकर सीमासहित देखाओल गेल अछि। एहि ठाम वस्तुक उपस्थिति आ ओकर अभिप्राय अलग प्रश्न अछि। नव्य न्यायिक प्रमाण-विवेक लागू करैत आलोचक कहि सकैत अछि जे दस्तावेज-साक्ष्यक प्रामाणिकता, रेखाक उत्पत्ति आ परिवर्तनक वैधता तीन स्वतंत्र स्तर अछि।

रघुनाथक लिखाइ आ पुत्रीक नैतिक द्वन्द्व

दोसर अङ्कक दृश्य पाँचमे तैनाती-पञ्जी आ हस्ताक्षरक मिलान रघुनाथ झा दिस संकेत करैत अछि। मालती पहिने लिखाइ पहचानबैत अछि, मुदा निजी पहचानकेँ प्रमाण मानि अभिलेखमे दर्ज नहि करैत। रघुनाथ ओकर पिता छथि; एहि कारण परीक्षणक निष्ठा निजी सम्बन्धसँ आर कठिन होइत अछि। नाटक बापक दोष बनाम बेटीकेँ निर्दोष मानबक भावुक द्वैधमे स्थिर नहि रहैत; ओ प्रश्न उठबैत अछि जे जकरा हम चिन्हैत छी, ओकर विरुद्ध प्रमाण कतेक कठोर रीति राखब।

१९८७क पुनरावर्तन : एक निर्णायक स्रोत

रघुनाथ पुरान बाढ़िक राति, अमीनक पद आ सीमारेखा फेर खींचबाक परिस्थिति बतबैत छथि। कथनमे बारह सितम्बर आ बी-४क सातम माप-बिन्दुक स्मृति अबैत अछि। एखन ई कथन मंचक पात्रक आत्मस्वीकृति अछि, स्वतंत्र बाह्य ऐतिहासिक दस्तावेज नहि। रघुनाथ अन्ततः स्वीकार करैत छथि जे बदलल रेखा जानि-बुझि कऽ हुनक हाथसँ खींचल गेल। एकर पाछाँक आपदाग्रस्त पुनर्वासक उद्देश्य घटनाक अर्थ जटिल बनबैत अछि, मुदा 'सदुद्देश्य' स्वयं लिखित इतिहास बदलबाक पूर्ण नैतिक अनुमति नहि दैत।

रामलोचन पासवान : लुप्त नामक दृढ़ उपस्थिति

सोना अपन पिता रामलोचनक नोटबुक, संशोधित सर्वेक्षण संख्या आ आवास-अधिकारक लम्बा संघर्ष सामने अनैत अछि। रामलोचनक नाम कतेको पन्नामे भेटलासँ ओ अचानक 'निर्मित' मनुष्य नहि बनैत छथि; ओकर जीवित सामाजिक दावा पहिनेसँ छल। मुदा दस्तावेजक पुनर्भेट सावधानीपूर्वक प्रमाण-शृंखला बनाबयक सम्भावना खोलैत अछि। नाटक ककरो मृत अथवा अनुपस्थित जनकै केवल प्रतीक नहि बनबैत; हुनकर नोटबुक आ बेटीकें सतत प्रश्न करबाक अवसर दैत अछि।

दीनानाथ : दोसर पक्षक अनिवार्य जीवन

तेसर अङ्कक नवम दृश्यमे दीनानाथ चौधरी आधुनिक पट्टा, रजिस्ट्री आ घरक स्मृति लऽ प्रवेश करैत छथि। सोना उचित प्रश्न उठबैत अछि जे हुनकर घर बाँचल, ओकर टोला नक्शासँ बिलायल। मुदा दीनानाथ कहैत छथि जे वर्तमान परिवारसभ स्वयं पुरान रेखाक दोषी नहि, हुनकर घर आ बच्चा वैध जीवन अछि। सोना रामलोचनक नाम घुराबय चाहैत अछि, मुदा दीनानाथक पोतीक नाम कटय नहि चाहैत। एहि एक संवादमे नाटक पीड़ित बनाम लाभार्थीक सुलभ द्वैतसँ बाहर निकलि अधिकारक पारस्परिक असमान जाल देखबैत अछि।

रामदेवक पुरान चाबी : वस्तु जखन घरक ऐतिहासिक साक्षी

दीनानाथ पुरान घरक चाबी अभिलेखमे रखबाक आग्रह करैत छथि, कारण नक्शापर घरक स्थान रहय मुदा घरक अनुभवकें कोनो भविष्यक पाठक नकारि नहि दे। मालती चाबीकें विवरणयुक्त लिफाफामे राखैत अछि। रामलोचनक नोटबुक, रामदेव परिवारक पट्टा आ चाबी, बी-४क दू नक्शा—ई वस्तुसभ एके स्थलमे संग रहैत अछि, मुदा एक-दोसराकें स्वतः रद्द नहि करैत। वस्तु-सङ्केतक एहि संयमित समवायमे नाटकक समकालीन अभिलेख-साहित्यक महत्त्व अछि।

ऐतिहासिक दोष आ वर्तमान अधिकारक अलगपना

रघुनाथक बदलल रेखा किछु लोककें तात्कालिक आश्रय देलक, आन लोकक बस्ती प्रशासनिक रूपसँ अदृश्य बनि गेल। मुदा वर्तमान पट्टा आ उत्तराधिकार स्वतः अमान्य

करि देला सँ दोसर अन्याय पैदा होएबाक संकट अछि। नाटक सार्वजनिक सत्य, व्यक्तिगत क्षमायाचना, भूमि-अधिकार आ पुनर्वासक प्रक्रियाकेँ एक निर्णयमे समेटैत नहि। एतय 'ककर घर दोषी नहि' शीर्षक वास्तविक नैतिक समस्या अछि : इतिहासक संशोधन वर्तमान निवासीकेँ बेघर करबाक अनुमतिपत्र नहि बनबाक चाही।

जल-विज्ञानक पुनर्पाठ : पुरान धारि

दसम दृश्यमे ईशान पुरान नक्शाक निम्न जल-पथक संकेत देखैत अछि। पानि मुख्य पाट छोड़ि पुरान निकास धरि आबि सकैत अछि; आधुनिक ऊँचाइ-जाल आ पुरान रेखाक तुलना करैत ओ सम्भावना जाँचैत अछि। ओ साफ कहैत अछि जे एक मॉडल निश्चित उत्तर नहि, अलग पूर्वधारणा बदलला पर परिणामक सीमा देखबैत अछि। ई वैज्ञानिक अनिश्चितता अभिलेखक नैतिक अनिश्चिततासँ अलग, मुदा पद्धतिगत रूपसँ समान सावधानी सिखबैत अछि। नाटक एतय पुरान नक्शाकेँ सर्वज्ञ भविष्यद्रष्टा नहि बनबैत।

अभिलेखसभ बाजैत अछि : जीवित अभिलेख-समुदाय

चारिम अङ्कक एगारहम दृश्यमे नेपथ्यक लोक पञ्जीक वर्ष, गाम, गृह-संख्या आ सदस्यक नाम पुकारैत छथि। अभिलेखक आवाज ओहि श्रमिक-समुदायक सामूहिक काजसँ उत्पन्न अछि। किछु कागद तुरन्त राशन वितरणमे लागबला, किछु भविष्यक न्यायिक दावाक लेल जरूरी। मालती निर्णायक क्षणमे वर्तमान राशन-पञ्जी पहिने ऊपर चढ़बबैत अछि। ई चयन अभिलेख-संरक्षण आ जीवित मनुष्यक हितमे पदानुक्रमक सोझ परिवर्तन अछि : भविष्यक प्रमाण बचेनाइ आवश्यक, मुदा आजुक भूख पहिने।

'न्याय नहि' : बापक भय आ बेटीकेँ रोकबाक अस्वीकृति

बारहम दृश्यमे रघुनाथ मूल नक्शा अपन हाथमे देबाक अनुरोध करैत छथि। हुनक तर्क केवल पद बचेनाइ नहि; बदलल रेखासँ बसल वर्तमान घरसभक विरुद्ध प्रतिशोधी कार्रवाईक भय सेहो अछि। मालती सोना आ वर्तमान चारि सय घरक चेहरा दुनू रखैत अछि। ई नाटकक असाधारण नैतिक जटिलता अछि : सच लिखलाक बाद उत्पन्न

अन्याय सँ डरि कऽ सच नुकायब उचित होएत कि नहि? ओहि प्रश्नक उत्तर नाटक नब अभिलेखीय प्रक्रिया बनाबि देत अछि, कोनो एक व्यक्तिक निजी निर्णयसँ नहि।

एके ऊँच जमीन : संकटमे समानता, अधिकारमे भिन्नता

पाँचम अङ्कक पहिल दृश्यमे पूबक तटबन्ध कटैत अछि। उत्तर टोला आ दक्खिनबरियाक लोक एके ऊँच चबूतरापर शरण लैत छथि। सोना आ दीनानाथ दुनू शरण-सूची बनबैत छथि; ईशान पुरान जल-चिह्न उपयोगी साबित भेल मानैत अछि, मुदा ओकर आधारपर पुरान राजस्व सीमा स्वतः वैध सिद्ध नहि करैत। रघुनाथक मूल विचार एतय संशोधित अछि : आपदामे जगह साझा करब न्यायसंगत, मुदा वैधानिक अधिकार अलग-अलग ठीकसँ दर्ज करब आवश्यक। एहि द्वि-मान्यता पर दृश्य टिकैत अछि।

नब पन्ना : अस्थायी गिनती आ सत्यान्वेषण

चौदहम दृश्यमे मालती नव 'विशेष अभिलेख' खोलैत अछि; बदलल नक्शा, लिखित बयान, नोटबुक, वर्तमान पट्टा आ शरण-पञ्जी अलग संदर्भसहित सुरक्षित होइत अछि। शरण लेल लोकक अस्थायी संख्या ३८३ कहल जाइत अछि, मुदा दू नावक पुनर्गणना शेष अछि; तँ तकरा अन्तिम कुल नहि बनाओल गेल। सोना आ दीनानाथ मिलि ई वाक्यपर सहमत छथि जे वर्तमान घरक अधिकार केवल पुरान सीमा-संशोधनक कारण स्वतः रद्द नहि हो। ई भाषा सामाजिक समझौताक अन्तिम फैसला नहि, न्यायोचित जाँचक पद्धति अछि।

फुलकुमारीक गाम : खोज शेष लिखबाक राजनीतिक अर्थ

अन्तिम दृश्यमे फुलकुमारी नामक बच्ची 'सरिसब-चर' बस्तीक नाम कहैत अछि, जे वर्तमान सूचीमे भेटैत नहि। मालती नब पन्ना पर बच्चीक कथन दर्ज करैत अछि आ 'उपलब्ध अभिलेख'क स्थानपर 'खोज शेष' लिखैत अछि। ई 'खाली' भरबाक नकल नहि; भविष्यक परीक्षण लेल दायित्व बनब अछि। बच्चीकेँ मूल कागदक वंशज जानकारी नहि, अपन माय भेटबाक चिन्ता बेसी अछि; तकर बाद 'सीता देवी भेटि गेली'क आवाज अबैत अछि। अन्तिम प्रकाशमे अभिलेखक गरिमा ओकर मानवीय उपयोगसँ सुनिश्चित होइत अछि।

मञ्चीय वास्तु : पानीक ध्वनि, पञ्जीक गतिशीलता

छतक बाल्टीमे क्रमशः तेज होइत बूँद, खिड़कीक बाढ़ि, सीढ़ी चढ़ैत पानि, लालटेनक लौ आ टेबुलपर खुलैत नक्शासभ बहुत सघन ध्वनि-दृश्य भाषा बनबैत अछि। एकहि अभिलेख-घरक ठाम कथा चलब संसाधन बचबैत अछि, मुदा चौदह दीर्घ दृश्यक भीतर निरन्तर कागद-जाँच रंगमंचक गतिमे विराम अनैत अछि। लछमीक आवागमन आ नेपथ्यक लोक-पुकार एहि एकरूपता तोड़ैत अछि। प्रभावी प्रस्तुति लेल भीजल कागद, पुनरुत्पादनयोग्य मानचित्र आ जलस्तरक क्रम दशककें स्पष्ट बुझायब जरूरी अछि।

अंग्रेजी रूपान्तर : रचना आ अर्थक संरक्षण

लेखकक अंग्रेजी 'The Ledger of Water'मे Act I—The Water Rises सँ Act V—Before Dawn धरि मूल पाँच अंक, चौदह दृश्यक क्रम सुरक्षित अछि। MALTI, RAHMAN, LACHHMI, SONA, ISHAN, RAGHUNATH आ DINANATHक प्रसङ्ग, बी-४क मानचित्र, रामलोचनक नोटबुक आ अन्तिम 'Search pending'क वाक्य स्पष्ट रूपेँ विद्यमान अछि। 'पानिक लेखा'क पानिसँ जोड़ल लेखा-विवेक English 'ledger'मे अभिलेखीय अर्थमे पठनीय अछि। क्षेत्रीय संबोधन आ बाढ़ि-अनुभवक स्थानीय ध्वनि तइयो मूल मैथिलीक सांस्कृतिक विशिष्टता अछि।

समीक्षात्मक निर्णय : सत्य, पश्चाताप आ प्रक्रिया

'पानिक लेखा' नाटकीय रूपसँ एकटा कठिन अन्तर स्थापित करैत अछि : 'की घटल'क सत्य, 'ककर क्षति भेल'क नैतिक प्रश्न, आ 'आब की करब'क संस्थागत प्रक्रिया एक वाक्यसँ समाप्त नहि होइत। पिता रघुनाथक स्वीकारोक्ति पुरान अन्यायक एक मूल कड़ी उजागर करैत अछि, मुदा वर्तमान टोला स्वतः दोषी नहि बनैत। विज्ञानक जल-पथ पुरान सीमाकें वैधानिकता नहि दैत, आ अभिलेखक प्रमाण मनुष्यक जीवित अस्तित्वकें प्रतिस्थापित नहि करैत। पाँचम अङ्कक नव पन्नामे ई तीनू सीमा एकहि दस्तावेजमे सहअस्तित्व पबैत अछि। कृतिक महत्त्व जटिलताकें बाँचि रखबाक एहि मञ्चीय साहसमे अछि।

‘पानिक लेखा’ : पाँच अङ्कक दृश्य-प्रमाण

| मूल अङ्क/तरंग                      | मूल पाठसँ सत्यापित नाटकीय क्रिया आ आलोचनात्मक संकेत                                      |
|------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------|
| अङ्क १ : पानि चढ़ैत अछि; दृश्य १—४ | पुरान जिला अभिलेख-घर; ईशानक नक्शा; सोना पासवान; १९८७क बी-४क मोमबन्द पुड़िया।             |
| अङ्क २ : दूटा धरती; दृश्य ५—७      | तैनाती-पञ्जी; रघुनाथ झाक लिखाइ; पुरान आपदा-दिनक स्मृति; बदलल सीमा-रेखाक स्वीकार।         |
| अङ्क ३ : सत्यक दाम; दृश्य ८—१०     | रामलोचनक नोटबुक; दीनानाथक वर्तमान घर; पुरान चाबी; जल-पथक वैज्ञानिक पुनर्विचार।           |
| अङ्क ४ : रातिक बीच; दृश्य ११—१२    | अभिलेख पुकारैत जीवित लोक; राशन-पञ्जीक प्राथमिकता; मूल नक्शा आ बापक अनुरोध।               |
| अङ्क ५ : भोर सँ पहिने; दृश्य १३—१४ | तटबन्धक कटाव; साझा शरण; ३८३क अस्थायी संख्या; नब विशेष अभिलेख; फुलकुमारीक गामक ‘खोज शेष’। |

बारह नाटक : मूल मैथिली—अंग्रेजी रंगमंचीय समेकित मूल्याङ्कन

दू खण्डक नाट्य-विधागत विस्तार

खण्ड १क नओ नाटकमध्ये ऋग्वैदिक स्त्रीविद्याक पुनर्व्याख्या, सामाजिक व्यङ्ग्य, पर्यावरण-रूपक, श्रमक इतिहास आ भाषिक-सत्ताक संघर्ष देखल गेल। खण्ड २क तीनू दीर्घ नाटक ओही मूल प्रश्नसभकेँ न्यायिक प्रमाण, लोक-इतिहास आ आधुनिक अभिलेख-विवादक पूर्ण आकार दैत अछि। ‘व्याप्ति’ आगि आ नीरजक मृत्युसँ प्रमाणक सम्बन्ध जाँचैत अछि; ‘जे नाम पोथीमे नहि’ गीतक कर्तृत्व आ स्त्री-सम्मतिक स्वतंत्रता जाँचैत अछि; ‘पानिक लेखा’ बदलल राजस्व-रेखा आ वर्तमान अधिकारक परस्पर सीमा जाँचैत अछि। दू खण्डक नाटकीय उपलब्धि एकरेखीय शृंखला नहि, विषयगत प्रतिध्वनिक बहुलता अछि।

रिक्त स्थानक तीन नैतिक अर्थ

‘व्याप्ति’मे अन्तिम खाली पाँति झूठे निष्कर्ष छोड़बाक अनुशासन अछि, मुदा फुलिया चेतबैत छथि जे भरि सकबला स्थानकेँ रिक्त नहि छोड़ल जाए। ‘जे नाम पोथीमे नहि’मे रिक्त पञ्जी स्त्रीक लुप्त इतिहास आ नब नामक अधिकारक स्थल बनैत अछि। ‘पानिक लेखा’मे ‘खोज शेष’ लिखल रिक्त अभिलेख जाँचबाक सार्वजनिक वचन अछि। तीनू नाटकमे अज्ञान आ अनुपस्थितिक महत्त्व समान नहि : कोठलीमे नहि भेटल वस्तु ककरो अपराधक प्रमाण नहि, मुदा सूचीसँ छुटल मनुष्यक अधिकारकेँ समीक्षा सँ बाहर राखबाक आधार सेहो नहि।

जल, भोजन आ दस्तावेज : अमूर्त सत्यक शरीर

‘व्याप्ति’क खाली कटोरा आ २४० मात्रक अन्न-अन्तर, ‘जे नाम पोथीमे नहि’क नाव आ बच्चाक नामपुकार, ‘पानिक लेखा’क राशन-पञ्जी आ संकटमे सामूहिक आश्रय—एहि दृश्यसभमे प्रमाण-विचार देहक आवश्यकता बिना अधूरा अछि। ई ग्रन्थसमूह कागदकेँ तुच्छ नहि मानैत, मुदा कागदक खातिर जीवित शरीर त्यागबाक विरोध करैत अछि। अभिलेख, भाषा आ लोकक अनुभव एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि, जाँचक अलग-

अलग साक्ष्य-श्रेणी अछि। एहि कारण शास्त्रीय सिद्धान्तसँ सामाजिक प्रश्न धरि यात्रा केवल विषयक विस्तार नहि, नाट्यरूपक संरचनात्मक उपलब्धि अछि।

भारतीय साहित्यशास्त्र, नव्य न्याय आ अर्थक संकेतन

कथित घटनाक परे वस्तुक संकेत—कटोरा, ताला, चाक, भीजल पन्ना, चाबी—ध्वनिक माध्यमसँ अर्थ-विस्तार करैत अछि। करुणरस ‘व्याप्ति’क फुलियाक मौनमे, हास्यरस ‘जे नाम पोथीमे नहि’क धनमन्तीक वाग्वैदग्ध्यमे, भय आ बीभत्सताक सीमा बाढ़ि आ जड़ल भण्डारक दृश्य-न्यासमे प्रसंगसंगत अछि। मुदा सिद्धान्तक नाम मात्र लगा देला सँ विश्लेषण पूर्ण नहि : प्रत्येक ठाम कोन वस्तु कोन पात्रक क्रियासँ अर्थ पबैत अछि, तकर साक्ष्य जरूरी अछि। व्याप्ति, शब्दप्रमाण आ अभाव तीनू नाटकमध्य संदर्भानुसार अलग कार्य करैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति आ हाशियाक अभिलेख

रामलोचनक नोटबुक, नाविक फेकनक जलस्तर-ज्ञान, सोना पासवानक टोला, माधवक भड्डी आ जटिलाक तेल-ज्ञान सरकारी लेखाक कथित तटस्थतापर प्रश्न उठबैत अछि। एहि आवाजसभकेँ लोकमान्यता होएबाक कारण स्वतः वैज्ञानिक सत्य कहब अनुचित; मुदा अभिलेखमे अनुपस्थित होएबाक कारण हुनकर ज्ञानकेँ निराधार मानब सेहो अन्याय। तुलना लेल स्रोतक काल, वस्तुक उत्पत्ति, वक्ताक स्थिति आ सत्ताक लाभ-हानि अलग जाँचब आवश्यक। एहि प्रमाण-विवेकक भीतर साहित्यकारक समानान्तर इतिहास-कल्पना कलात्मक रूप पबैत अछि।

स्त्रीक ज्ञान, सम्मति आ कार्यकारी शक्ति

‘अपाला आत्रेयी’क ज्ञानाधिकारसँ ‘जे नाम पोथीमे नहि’क सुमेधा आ माधवी, ‘व्याप्ति’क फुलिया आ मालती तथा ‘पानिक लेखा’क सोना आ लछमी धरि स्त्रीपात्र केवल पीड़ित नहि, निर्णयक विधि बनबैत छथि। कोनो युगक स्त्रीक जीवनकेँ दोसर युगक अनुभवक पूर्ण समतुल्य मानब गलत होयत; मुदा सभ खण्डमे प्रश्न पूछबाक क्षमता आ सामूहिक निर्णयक अधिकार आवर्तित महत्वपूर्ण रूप अछि। स्त्री-स्वरक ई बहुलता

आदर्शरूपमे सबटा समस्या सुलझबैत नहि, मंचपर समस्या ठाढ़ करबाक अधिकार विस्तारित करैत अछि।

रूपान्तरक उपलब्धि आ स्थानीय भाषिक सीमा

बारहू नाटकक लेखकक अंग्रेजी रूपान्तर उपलब्ध अछि। संरचनात्मक स्तरपर खण्ड १क नओ युग्मक क्रम, खण्ड २क 'VYAPTI', 'The Name Not in the Ledger' आ 'The Ledger of Water'मे प्रमुख अंक, तरंग, दृश्य आ अन्तिम प्रतीक सुरक्षित भेटैत अछि। तथापि मूल मैथिली पद-भाषा, लोकगीतक उच्चारण, नातेदारीक सम्बोधन, श्रमिक शब्दावली आ पञ्जी-संस्कृतिक अर्थ सामान्य अंग्रेजी पदसँ पूर्णतः प्रतिस्थापित नहि होइत। अनुवादक उपलब्धि एहि सीमाक भीतर नाटकीय पहुँच बढ़बाएब अछि, मूल बोलीक सांगीतिक समानता सिद्ध करब नहि।

मञ्चीय सीमा : विचारक अतिरिक्त स्पष्टता

खण्ड २क तीनू दीर्घ नाटक विस्तृत प्रमाण-विवेचनक कारण संवादप्रधान अछि। दार्शनिक पात्र अनेक बेर प्रत्यक्ष निर्णय न कऽ तर्कक सीमा बुझबैत छथि; ई शास्त्रीय सटीकता नाटकीय गतिमे विराम अनैत अछि। मुदा लेखक दृश्य-वस्तु, नेपथ्यक आवाज, नावक गतिक भान आ ध्वनि-पुकारसँ वैचारिक एकाग्रताकें क्रियामे बदलैत छथि। उचित मञ्चनमे वास्तविक अभिनय, तात्कालिक संकट आ शरीरक मौन बाँचल रहय तँ संवादक भार नाटकीय शक्ति बनि सकैत अछि। अविवेकी संक्षेपसँ प्रमाणक क्रम टूटबाक आशंका रहत।

समेकित साहित्यिक निष्कर्ष

दू खण्डक बारह नाटकक समग्र प्रतिपादनकें एक सूत्रमे गामक इतिहास अथवा न्याय-सूत्र मानि लेब अनुचित। रचनासभ अलग विधागत प्रयोग अछि। मुदा एक साझा नैतिक आग्रह स्पष्ट अछि : व्यक्ति, वस्तु, ऐतिहासिक नाम आ अभिलेखक सम्बन्धक जाँच बिना अधिकार-निर्णय नहि कएल जाए। 'मचण्ड'क दुभाषिया, 'उल्कामुख'क अनुभव मण्डल, 'व्याप्ति'क द्वि-पट्ट, 'जे नाम पोथीमे नहि'क श्यामपट्ट आ 'पानिक लेखा'क नव पञ्जी—ई सभ भाषा आ संस्थाकें सार्वजनिक पुनर्परीक्षण लेल खोलैत अछि। एहि अर्थमे 'रंग-

संगम' कृति-मालाक उपलब्धि विचारक घोषणासँ अधिक, निर्णय करबाक भाषा स्वयं नाटकीय विवादक विषय बनायब अछि।

बारह नाटकक सत्यापित मूल स्रोत-पञ्जी

| खण्ड आ क्रम       | पाठक प्रमाणीकरण                                                                               |
|-------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------|
| खण्ड १ : नाटक १-३ | अपाला आत्रेयी; भऽ जाएब छू; दानवीर दधीची। नओ-नाटकक संयुक्त द्विभाषी ग्रन्थ।                    |
| खण्ड १ : नाटक ४-६ | गंगा ब्रिज; जलोदीप; कमलाक भगता। ओही संयुक्त द्विभाषी ग्रन्थ।                                  |
| खण्ड १ : नाटक ७-९ | मचण्ड; संकर्षण; उल्कामुख। ओही संयुक्त द्विभाषी ग्रन्थ।                                        |
| खण्ड २ : नाटक १०  | व्याप्ति / VYAPTI; स्वतंत्र द्विभाषी Word पाण्डुलिपि; चारि अङ्क आ तीन-दृश्य उपसंहार।          |
| खण्ड २ : नाटक ११  | जे नाम पोथीमे नहि / The Name Not in the Ledger; स्वतंत्र द्विभाषी Word पाण्डुलिपि; पाँच तरंग। |
| खण्ड २ : नाटक १२  | पानिक लेखा / The Ledger of Water; स्वतंत्र द्विभाषी Word पाण्डुलिपि; पाँच अङ्क, चौदह दृश्य।   |

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। रंग-संगम : नओटा मैथिली नाटक आ तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर। संयुक्त द्विभाषिक संस्करण। विदेह, २०२६। समीक्षित सम्पूर्ण नओ नाटक आ तकर अंग्रेजी रूपान्तर : मुद्रित पृष्ठ ५-५३५।

गजेन्द्र ठाकुर। व्याप्ति / VYAPTI। द्विभाषिक मैथिली-अंग्रेजी पूर्ण-दीर्घ नाटक। विदेह, २०२६। गजेन्द्र ठाकुर। जे नाम पोथीमे नहि / The Name Not in the Ledger। द्विभाषी मैथिली-अंग्रेजी नाटक। विदेह, २०२६। गजेन्द्र ठाकुर। पानिक लेखा / The Ledger of Water। द्विभाषी मैथिली-अंग्रेजी पूर्ण-दीर्घ नाटक। विदेह, २०२६।

# रंग-संगम

खण्ड २२ — सम्पादकीय समीक्षा

## बारह नाटक — दू खण्ड

गजेन्द्र ठाकुरक नाट्य-सर्जनामे  
ज्ञान, लोकस्मृति, स्त्रीक अधिकार,  
श्रम, इतिहास आ न्यायक प्रश्न  
नव रंगमंचीय अर्थ ग्रहण करैत अछि।

एहि खण्डमे रंग-संगमक नओ  
नाटक आ दोसर खण्डक तीनू दीर्घ  
नाटकक मूल मैथिली पाठ आ  
अंग्रेजी रूपान्तरक तुलनात्मक  
साहित्यिक मूल्याङ्कन अछि।

सम्पादक आ समीक्षक  
आशीष अनचिन्हार

विदेहक दुनू अधिकृत डिजिटल ठेकान



विदेह वेबसाइट

[www.vidaha.co.in](http://www.vidaha.co.in)



गिटहब संग्रह

[vidaha-ejournal.github.io](https://github.com/vidaha-ejournal)